Regi. No.: MP HIN / 2006 / 16764 डाक पंजीयन क्र. म.प्र. भोपाल / 632 /2018 - 20

वीर निर्वाण संवत २५४५
माह- अप्रैल २०१९
अङ्क -०१ (१९४)
वर्ष -१४ (१९)

विरागवाणी

मासिक

आशीर्वाद

संत शिरोमणि प.पू. आचार्य श्री विरागसागर जी महाराज

प्रेरक : ब्र. श्री विशल्य भारती जी
निर्देशन : मुनि श्री विवर्धन सागर जी महाराज
सम्पादक : इंजी.आनन्दकुमार जैन, 9425620668
175, एम. गौतम नगर, भोपाल
सहसम्पादक : श्री देवकुमार जैन गुड़ा
४९/सी, कस्तूरबा नगर, भोपाल
मो. 09425608438
परामर्श मण्डल : डॉ. प्रो. सनत जैन, जयपुर
: श्री अनिल सेठिया महुआ (भीलवाड़ा)
: श्रीमति प्रमिला जैन 'पम्मी' कोटा
: प्रो.श्री मयंक जैन, टीकमगढ़
: श्री मुकेश जैन, पथरिया
: श्री कपूरचंद बंसल, जतारा
प्रकाशक एवं प्रबंध सम्पादक : श्री अनूप कुमार जैन
कार्यालय : जी-१४१ गौतम नगर, भोपाल-२३
☎: 0755-2789703, मो.9425016879
Email-viragvani.jain@yahoo.com
(बैंक ड्राफ्ट 'विरागवाणी'के नाम से भेजें) पत्रिका के सम्बंध में पत्राचार एवं रचनाएँ कार्यालय के पते पर भेजें
कार्पोरेशन बैंक : A/c No. 065300201000101
IFSC CODE : CORP0000653
स्वामित्व : श्री सम्यग्ज्ञान दि. जैन विराग विद्यापीठ, भिण्ड (म.प्र.)

इस वेबसाइट से गणा. विरागसागर जी के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करें। www. ganacharyaviragsagar.com

विरागवाणी सदस्यता

परम शिरोमणी संरक्षक	-	५१०००/-
शिरोमणि संरक्षक	-	११०००/-
परम संरक्षक	-	५०००/-
संरक्षक	-	३१००/-
दस वर्ष	-	११००/-
मूल्य	-	१०/-

- **समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल होगा।**
- **प्रकाशित विचारों से संपादक की सहमति जरूरी नहीं हैं। वह लेखक के अपने विचार हैं।**

पल्लव दर्शिका

❖ **सम्पादकीय :** **पल्लव**
- वाणी वीणा बनें : इंजी.आनन्दकुमार ४
- आत्मचिन्तन ५
- जिनोपदेश : श्रमणमुनि विश्वस्तसागर जी ५

❖ **प्रवचन एवं लेख**
- अहिंसा के उद्घोषक...: श्री विरागसागर महाराज ६
- अनुशासन एवं चर्या में ...: श्रमणा.निरंजनसागर १०
- जीवन को स्वर्ग ... : श्री विरागसागर महाराज ११
- आगमिक शंका समाधान ...: श्री विरागसागर जी १५
- निज-दर्पण को स्वच्छ... : आ. विशुद्धसागर जी १७
- कर्तव्य ही पतित को पावन...:आ.विनम्रसागरजी १९
- अल्पज्ञान भक्ति में बाधक...:आ.श्री विमर्शसागर १९
- नई दिशा प्रदान की : मुनि विश्वेशसागर जी महा. २०
- महान संत : श्रमणी आर्यि. विशिष्टश्री माताजी २०
- गुणों के आगर-आर्जव...: आर्यि.विदूषीश्री माता २१
- रात्रि में भोजन करने से हानि: आर्यि. विमोहश्री २१
- अबला-पतंग : आर्यि. वियोजनाश्री माता जी २२
- गांधी जी का रात्रि .... : आर्यि. विसंयोजनाश्री २३
- सर्वत्र विजय : आर्यि. विसुव्रताश्री माताजी २३
- प्रणायाम की पूर्व... : आर्यि. पुनीत चैतन्यमति २४
- शरण दाता : ऐलक गौसलसागर जी महाराज २५
- सुवाक्य : ब्र. राजकुमार जैन २५
- आचार्यत्व की क्षमता गरिमा.... : आर.के. जैन २७
- मैं पूर्व से ही प्रभावित हूँ : ज्ञानचंद झाझरी २७
- भगवान महावीर और...: प्रेमचन्द्र जैन, शास्त्री ३२
- ऐसे मनाएँ महावीर.... : आ. वियुक्तश्री माताजी ३४
- वद्ध माता-पिता की आँखों...: महेन्द्र कुमार जैन ३७
- आध्यात्मिक शंका-समाधान :श्री विरागसागर जी ४४
- विराग सेतु ... : डॉ. उदयचन्द्र जैन ४५

❖ **कविताएँ**
- अहं व्यर्थ : आ. श्री विशुद्धसागर जी २८
- गणाचार्य हमारे विराग सिन्धु : कांति कुमार जैन २८
- भूल : श्रमणी आर्यिका वियुक्तश्री माता जी ३१
- मूलाधिकार याचिका : ब्र. धन्यकुमार राजेश ३६
- विरागसागर नाम हमें अब... पं. बृजेन्द्र कुमार ३९

❖ **स्वास्थ्य जगत**- सस्ती सुन्दर दवा - जौ ४०
❖ **समाचार** ४७
❖ **विराग वर्ग पहेली** ४९

संपादकीय

वाणी वीणा बनें

इंजी. आनन्द कुमार जैन

गृहस्थ की तीसरी विशेषता है मधुर संभाषण। हमे वाणी मिली है, हम इसका निरन्तर उपयोग तो करते है किन्तु इसके महत्व को नहीं समझते हैं। इसका यथार्थ मूल्यांकन नहीं करते। वर्तमान काल में जब हम संसारी प्राणियों की ओर दृष्टि डालते हैं तो अधिकांश प्राणी दु:खी दिखाई देते हैं। चाहे भले ही तिर्यंचों में दु:ख कम हो देवों में दु:ख न हो, चाहे नारकियाँ का दु:ख नि:सीम हो, उन तीन गति के जीवों में दु:ख की हीनाधिकता भले ही हो किन्तु मनुष्यों के दु:ख में वृद्धि जरूर हुई है। ज्यों-ज्यों काल परिवर्तन होता है त्यों-त्यों मानव के विचारों में अन्तर आता है और विचारों में अन्तर आने से उनके पाप और पुण्य कर्म कभी घटते हैं कभी बढ़ते हैं क्योंकि विचार कर्म के आश्रव में मुख्य हेतु है। मन: स्थिति कर्म बन्ध के किये मुख्य उत्तरदायी है। मन: स्थिति से जितनी मात्रा में कर्म आते हैं उतनी मात्रा में कर्म शरीर की प्रवृत्ति व वचनालाप से भी नहीं आते इसलिये मन की संभावना भी बहुत आवश्यक है। प्राणियों में भेद देखा जाता है। मनुष्यों में इच्छाएँ, वासनाएँ, अभिलाषाएँ, कामनाएँ, जन्म से रहती हैं और वह ज्यों-ज्यों बढ़ता चला जाता है वह कम नहीं होती है प्राय: कर के बढ़ती चली जाती है। वह मनुष्य अपनी इच्छओं को कामनाओं को पूर्ण करने के लिये कोई न कोई माध्यम ढूड़ता है अधिकांश पुरूषों की ये धारणा है कि धन के माध्यम से प्रत्येक इच्छा, कामना, भावना को पूर्ण किया जा सकता है। जब तक वह इस धारण को स्वयं नहीं तोड़ेगा। तब तक वह टूट नहीं सकती। इसलिये प्राय: कर संसार के सब प्राणी अर्थ की परिधि पर अभिनय करते रहते हैं। अर्थ की परिधि पर किया गया अभिनय दु:ख अशांन्ति क्लेश और अनर्थो को जन्म देने वाला होता है। अर्थ की परिधि से थोड़ा हटकर के केन्द्र की ओर यात्रा की जाये तब नि:संदेह उसके जीवन में सुख और शांति के सूत्रों का आविभार्व हो सके।

परम पूज्य १०८ गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज ने बताया कि बन्धुओं यहाँ पर आचार्य कुंदकुंद देव कह रहे हैं पुस्तकीय विद्या पर विद्या हैं। रटा गया ज्ञान पर ज्ञान है, सुना गया ज्ञान पर ज्ञान है। जब तक अपना स्वयं का ज्ञान काम न करे तो बाहर के ज्ञान की कोई कीमत नहीं। बाहर का ज्ञान एक माध्यम होता है और अपना ज्ञान उसे जगाने में उपादान होता है। हम अपने उपादान को नहीं जगा पाते हैं मात्र पन्ने पलट करके खुशी मनाते हैं ओहो मुझे बहुत ज्ञान हो गया। ध्यान दीजिये रास्ते में साइन बोर्ड लगा होता है मील का पत्थर होता है उस पर लिखा होता है अमुख नगर जाने का रास्ता लेकिन क्या आप उस पत्थर पर लिये वाक्यों को पढ़कर उस नगर में पहुंच जायेंगे। नहीं पहुंचेगे इसका मतलब है हमारा केवल पढ़ना, केवल याद करना, केवल रटना और केवल सुनने मात्र से हम अपने लक्ष्य तक नहीं पहुंच सकते। जब तक कोई अच्छी बात दिमाग तक नहीं पहुंचेगी तब तक वह याद नहीं होगी उसे भूल जायेगे।

आत्मचिन्तन

(प.पू. आ. श्री १०८ विमलसागर जी महाराज की नित्य डायरी से साभार २६.१०.१९८२)

।। ऊँ ह्रीं णमो अरहंताणं।।

हे आत्मन्! संसारी भव्य गण ही संसारार्णव से पार होने के लिए नवदेवता (अरहंत, सिद्ध, आचार्य उपाध्याय, साधु, जिनधर्म, जिनागम, जिनचैत्य जिन चैत्यालय) को नव कोटि (मन, वचन, काय, कृत, कारित, अनुमोदना) से भक्ति से करना महाशान्ति की प्राप्ति के महादिव्य उपचार रूप अमृत औषधि है। जो यथाकृम से मुक्ति के लिए कलेवा है। जबतक नव देवता को बार-बार हर क्षण भक्ति करना परम कर्तव्य है ये प्राणी मात्र के लिए आलंवन स्वरूप है। जिन-जिन महान भव्यों ने आलंवन लिया उन्हीं-उन्हीं भव्यों का परमार्थिक लौकिक कार्यो की सिद्धि हुई और इन नव देवताओं का पृथक-पृथक चिन्तन मनन से विचार किया ध्यान किया उन्हीं का सर्वप्रकार से शान्ति पूर्वक आत्मशोधन किया है। वे आज तक आनंद पूर्वक मोक्ष गये और आगे भी जायेगे और सर्व प्रकार के हमेशा के लिए जामन मरण जीतकर आत्म शोधन करना परम कर्तव्य है। अत: हे विमलात्मन तुम भी जामन मरण का भक्ति से नाश क्षय होता है और प्राणी मात्र को परम शांत आनंद घन महाशान्ति मिल जायेगी और शाश्वत सुख स्वामी बन जाओगे। अत: भक्ति से मुक्ति होती है।

जिनोपदेश

संकलन- समाधिस्थ श्रमणमुनि विश्वस्त सागर जी महाराज की डायरी से संकलित

नारीजधनरन्ध्रस्थ विण्मूत्रमयचर्मणा।
वराह इव विड्भक्षी हन्त मूढः सुखायते।। क्ष.चू.१/७३।।

अर्थ- खेद की बात है कि मूर्खजन स्त्री की जांघ में स्थित निंद्य मलमूत्र आदि से भरे हुये चमड़े से विष्टा खाने वाले शूकर के समान सुख मानते हैं।

योग्यायोग्यविचारोऽयं रागान्धानां कुतो भवेत्।। क्ष. चू ४/३८।।

अर्थ- यह औचित्य (योग्य) और अनौचित्य (आयोग्य) का विचार कामासक्त जनों के कहाँ से हो सकता है।

अंगार सदृशी नारी, नवनीत समा नराः।
तत्तत्सान्निध्य मात्रेण द्रवेत्पुंसां हि मानसम्।। क्ष.चू. ७/४१।।

अर्थ- स्त्री अंगारे के समान और मुनष्य मक्खन के समान होते हैं। इसलिए उन स्त्रियों की समीपता मात्र से पुरूषों का मन विचलित हो जाता है।

संलापवासहासादि, तज्जर्ज्यं पापभीरूणा।
बालया वृध्दया मात्रा, दुहित्रा वा व्रतस्थया।। क्ष.चू. ७/४२।।

अर्थ- पाप से भीत व्यक्ति के द्वारा जवान कन्या, वृद्धा माता, पुत्री और व्रत पालन करने वाली आर्यिका आदि से भी एकान्त में वार्तालाप, सहवास और हँसी मजाक त्याग देना चाहिए।

शोच्याः कथं न रागान्धा ये तु वाच्यन्न विभ्यति।। क्ष.चू. ७/८०

अर्थ- जो रागी मनुष्य अपनी निंदा से भी नहीं डरते, उनकी हालत विचित्र और शोचनीय होती है।

रागान्धे हि न जागृर्ति याञ्चादैन्यवितर्कणम्।। क्ष.चू. ९/२८

अर्थ- प्रेम से अन्ध प्राणी में याचना सम्बन्धी दीनता का विचार नहीं होता।

अहिंसा के उद्घोषक भगवान महावीर

(प्रवचन- प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य विरागसागर जी महाराज)

बन्धुओ ! आज हम सभी बड़े ही हर्षोल्लास के साथ वर्तमान शासन नायक, विश्वाराध्य अहिंसा के अवतारी भगवान महावीर स्वामी की २६१८वीं जन्य जयंति महोत्सव मना रहे हैं।

हमारी दिगम्बर श्रमण परम्परा के अद्वितीय सूर्य आचार्य कुन्दकुन्द देव लिखते हैं भगवान महावीर स्वामी संपूर्ण जगत में अहिंसा की दिव्यघोष करने वाले तीर्थंकर हुए। यूँ तो सभी तीर्थंकर अपने-अपने शासन काल में सर्वश्रेष्ठ महापुरष थे चूकि हम सभी २४वें तीर्थंकर महावीर स्वामी के शासन में रह रहे हैं इसलिए हम प्रत्यक्ष कह सकते हैं कि भगवान महावीर स्वामी विश्व के भगवान थे। उनकी अहिंसा मात्र जैनों में ही नहीं अन्य-अन्य मत मतांतरों में भी वर्णित की गई हैं यही कारण है विश्व का कोई भी धर्म हिंसा को स्वीकार नहीं करता है हिंसा को नहीं अपितु अहिंसा को धर्म के रूप में अंगीकार करता है।

भगवान महावीर स्वामी एक ऐसे तीर्थंकर हुए जिनके विषय में वेदों में वर्णन आया है वहाँ कहा गया है जो नग्न हैं जो वीर थे, वर्धमान थे, तीर्थंकर थे वे महावीर कैवल्य को प्राप्त हुए ऐसे विशेषण वहाँ जोड़े गये हैं।

पूज्य आचार्य कुन्दकुन्द देव तीर्थकर भगवान महावीर स्वामी की स्तुति करते हुए लिखते हैं-

सग बोध दीव मारुद भुवनत्रय रुंदमंदमोहतमो।

वे उदाहरण दे रहे हैं कि जैसे कोई दीपक मंद-मंद वायु में रखा हो, आप यदि कभी प्रेक्टिकल करके देखें कि दीपक जलाकर उसके ऊपर कोई चारों तरफ से बंद जिसमें हवा जाने की गुंजाइश न हो ऐसा वर्तन रख दिया जाये तो दीपक की स्थिति क्या होगी ? दीपक बुझ जायेगा क्यों ? क्योंकि उस अग्नि कायिक जीव को श्वास लेने की गुंजाइश नहीं मिली, श्वास के अभाव में वह बुझ गया नष्ट हो गया, मृत्यु हो गई।

हम सभी लालटेन को देखते हैं उसमें चारों ओर से कांच रहता है लेकिन फिर भी ऊपर और नीचे के हिस्से में छोटे छोटे छेद रहते है जिसमें से स्वच्छ वायु अंदर जाती है और काला धुआ बाहर निकलता है अर्थात् दीपक की लौं जो अग्निकायिक जीव है वह आसानी से ऑक्सीजन लेता रहे और कार्बन ऑक्साइड बाहर करता रहे तभी उसकी स्थिति दीर्घ समय तक रह सकती है। आचार्य महाराज कुन्दकुन्द स्वामी इसी का उदाहरण देते हुए कह रहे हैं जहाँ मंद-मंद हवा चल रही हो, क्योंकि जहाँ हवा नहीं होती वहाँ भी दीपक बुझ जाता है और जहाँ तेज हवा होती है वहाँ भी दीपक बुझ जायेगा। इसलिए मंद-मंद हवा के बीच जलता हुआ सग्बोध अर्थात् ज्ञानरूपी दीपक। बन्धुओ ! ध्यान रखो बोध अलग है और बोधि अलग है। ज्ञान का दूसरा नाम बोध और रत्नत्रय का दूसरा नाम है बोधि, वह ज्ञान भी अपना ज्ञान है क्योंकि पराया ज्ञान कल्याणकारी नहीं होता है अपना ज्ञान ही कल्याणकारी होता है। दूसरों के उपदेश रटने मात्र से व्यक्ति ज्ञानी नहीं बन सकता है। जब तक उसके अंदर स्वयं अपनी आत्मा से ज्ञान उत्पन्न न हो तब तक कोई भी व्यक्ति अच्छे मार्ग पर नहीं आ सकता है धर्म पथ पर नहीं बढ़ सकता है।

बहुत सारे लोग शास्त्र पढ़ते हैं पन्नों के पन्ने पलट लेते हैं लखीर पर अंगुलियाँ धुमा लेते हैं। जैसे छोटे बच्चे मंदिर आदि में जब अपनी माँ को पुस्तक पढ़ते हुए देखते है तो वे भी एक पुस्तक उठा लेते हैं। वह नहीं जानता पुस्तक सीधी है कि उल्टी वह तो पुस्तक हाथ में लेकर माँ की ओर देखता है कि माँ अंगुली धुमा रही है तो वह भी उसी प्रकार अंगुली घुमाने लगता है। माँ के ओंठ हिल रहे हैं तो वह भी ओंठ हिलाने लगता है। भलें ही उसे एक भी अक्षर न आता हो लेकिन फिर भी उसके एक्सन इस बात के प्रतीक हैं कि वह पढ़ रहा है। आज के समय में भी प्राय: लोगों की ऐसी ही पढ़ाई होती है वे अंगुली घुमाते हैं शास्त्र के पूरे पन्ने पलट लेते हैं लेकिन फिर भी एक अक्षर उनके समझ में नहीं आ पाता है अथवा वह आचरण का विषय नहीं बन पाता है।

मुझे याद है जब हम लोग कटनी में पढ़ाई कर रहे थे उस समय हमारे टीचर ने एक बच्चे से पूछा- तुमने कल का

क्या हॉमवर्क कम्पलीट किया है सुनाईये तो बच्चा खड़ा हो गया। सर ने कहा- सिर्फ खड़े ही नहीं होना सुनाओ। तो वह बोला- गुरुजी कुछ समझ में नहीं आया। सर ने कहा- तुमने समझने का प्रयास कितनी बार किया, वह बोला- समय नहीं मिल पाया, अंत में उसने कहा- सर मेरा दिमाग, बुद्धि इतनी ठस है कि आसानी से बात समझ में नहीं आती है। तो टीचर ने कहा- बेटा एक काम कर तू घर जाना और पुस्तक को ठण्डाई बनाना और घोट-घोटकर उसे पी जाना तो सारी पुस्तक तुझे रट जायेगी याद हो जायेगी। उसने कहा- ठीक है सर कल में ऐसा ही करूँगा ताकि सारी लइने, उनके सारे अक्षर, मात्रायें मेरे दिमाग में आ जायेगी।

बन्धुओ! यहाँ पर आचार्य कुन्दकुन्द देव कह रहे हैं पुस्तकीय विद्या, पर विद्या हैं। रटा गया ज्ञान पर ज्ञान है, सुना गया ज्ञान पर ज्ञान है जब तक अपना स्वयं का ज्ञान काम न करें तो बाहर के ज्ञान की कोई कीमत नहीं हैं। बाहर का ज्ञान एक माध्यम होता है और अपना ज्ञान उसे जगाने में उपादान होता है। हम अपने उपादान को नहीं जगा पाते हैं मात्र पन्ने पलट करके खुशी मनाते है ओहो! मुझे बहुत ज्ञान हो गया। ध्यान दीजिए- रास्ते में साइन बोर्ड लगा होता है मील का पत्थर होता है उस पर लिखा होता है अमुख नगर जाने का रास्ता लेकिन क्या आप उस पत्थर पर लिखे वाक्यों को पढ़कर उस नगर में पहुँच जायेंगे ? नहीं पहुँचेंगे इसका मतलब है हमारा केवल पढ़ना, केवल याद करना, केवल रटना और केवल सुनने मात्र से हम अपने लक्ष्य तक नहीं पहुँच सकते हैं। सत्य तो यह है पढ़ ही नहीं पाते हैं लिखा कुछ होता है और व्यक्ति कुछ का कुछ पढ़ लेता है। कहा कुछ जाता है सुनकर के कुछ आ जाते हैं क्योंकि बेहोशी की सारी बाते रहती है। आम लोगों की स्थिति रहती है जब प्रवचन या स्वाध्याय शुरु होता है तो वे बातें अथवा अन्य कार्य में उपयोग लगा लेते हैं और जब स्वाध्याय आदि पूरा हो जाता है तो चुप होकर उस ओर देखने लगते हैं। ध्यान से सुन नहीं पाते हैं तो दिमाक में कहाँ से आयेगी और जब तक कोई अच्छी बात दिमाग तक नहीं पहुँचेगी तब तक वह याद नहीं होगी उसे भूल जाओंगे।

एक बार एक नगर में हम पहुँचे तो प्रवचन सुनने के बाद सभी लोग बड़े खुश हो गये। आनंद आ गया, मजा आ गया, बहुत अच्छा प्रवचन हुआ। किसी सज्जन ने पूछा- अच्छा तो प्रवचन में महाराज ने क्या कहा था। बोले- यह नहीं पता, बहुत सारी बातें कहीं थी, बोले- उनमें से एक ही बात बता दो बोले याद नहीं है। क्या बात हैं ? बातें याद- क्यों नहीं है ? क्योंकि अपने निजी ज्ञान का उपयोग नहीं किया गया। जब तक अपने ज्ञान का उपयोग नहीं होता है तब तक जीवन में बदलाव नहीं आता है।

तीर्थंकर भगवान की दिव्य देशना खिरती हैं बहुत सारी बातें उसमें कहीं जाती हैं, कितने लोगों को तो वहाँ वैराग्य हो जाता है लेकिन सभी को नहीं हो पाता इसका सबसे बड़ा कारण यह होता है कि लोग उन ज्ञान की बातों को ध्यान से सुन ही नहीं पाते और सुना ही नहीं है तो परिवर्तन कैसे आये।

समाधि शतक नाम के ग्रंथ में आचार्य पूज्यपाद स्वामी कहते हैं 'आत्मा आत्मने गुरु' आत्मा ही आत्मा का गुरु है। आत्मा को जगाने वाली कोई दूसरी आत्मा नहीं होती है अपनी ही आत्मा होती है। हमारे महाराज कह रहे हैं आपने दीक्षा दी है, आप गुरु हैं। दीक्षा कब दी आपने जब दीक्षा ली तभी तो दीक्षा दे सके। यदि मेरा वश चलता तो यहाँ एक को भी कपड़े पहने नहीं रहने देता सभी को मुनि महाराज बना देता, सभी को माता जी बना देता इससे बढ़कर सुख-शांति कहीं भी नहीं है। घर गृहस्थी में वह शांति नहीं है जो संतों के जीवन में है। एक टाईम आहार करते हैं फिर भी आनंद से रहते हैं कुछ भी नहीं है फिर भी कोई आकुलता नहीं है और आपके पास सब कुछ है फिर भी टेन्सन में बैठे रहते हो, इतनी मेहगाई हो रही है धन्धे में कुछ भी आय नहीं हो रही है। जब सुना पेट्रोल के भाव बढ़ गये तो बहुत सारे लोगों के चेहरे उतर गये लेकिन संतों के चेहरों पर कोई अन्तर नहीं आया।

आज कल संतों की परिभाषाएँ भी बदल रही हैं लेकिन सच्चा संत तो वही होता है जिसने सब कुछ से सन्यास ले लिया हो। करोड़ों के और अरबों, खरबों के मालिक को संत नहीं कहा जाता है। संत तो सभी परिग्रह के त्यागी होते हैं तभी तो वस्तुओं की कीमत घटने-बढ़ने पर भी उनके अंदर कोई परिवर्तन नहीं आता है। एक बार मैंने एक बच्चे से कहा- बेटा तू मेरे साथ चल, रोज जलेबी, गुलाब जामनु मिलेगी। वह बोला अच्छा तब तो मैं महाराज बनूँगा। मम्मी अब मैं घन नहीं

जाऊँगा, मैं तो महाराज बनूँगा। रोज जलेबी, गुलाब जामुन खाऊँगा। घर में रोज नहीं मिलती। उसकी मम्मी बोली बेटा! ये जलेबी, रस गुल्ले इतने आसान नहीं है तुझे दिन में एक बार ही भोजन पानी मिलेगा, अंतराय का पालन करना होगा, केशलोंच करना होगा, हमेशा पैदल चलना होगा। उसने कहा- तो फिर नहीं जाना मैं तो घर में ही बनवाकर अथवा बाजार से खरीद कर खा लूँगा जब भूख लगे तब खा तो सकूँगा।

कहने का अर्थ यह है कभी किसी के कहने से कोई साधु नहीं बन सकता न किसी वस्तु का त्याग ही कर सकता है। कल हम लोग विहार कर रहे थे रास्ते में बटपुरा मिला वहाँ एक वटवृक्ष के नीचे शिव मंदिर था लोगों ने आग्रह किया। यहाँ बैठ जाईए। घनी छांव थी कुछ समय संघ वहाँ बैठा। मैंने वहाँ के बाबा को कहा- बाबा आपके यहाँ दो-दो गाड (रक्षक) हैं। आप इन्हें अच्छी सलाह दीजिए मांस न खायें, शराब न पियें, अण्डे आदि न खायें ऐसी अच्छी बात करो तो शायद किसी न किसी का कल्याण हो जायेगा। वे बोले- बाबा कोई नहीं मानता हमारी बात आप ही समझा दो। सत्य है कोई किसी को नहीं मानता, मानता है तो अपने दिल की, आत्मा की बात मानता है।

आज महाराज कहते हैं जिनका स्वयं का बोध जग जाता है उसे समझाने में देरी नहीं लगती। आवश्यकता है अपने आत्म बोध को जगाने की। लोग कहते हैं किसी ने किसी को जगाया नहीं, सत्य तो यह है जो स्वयं जगना चाहता है उसे जगाने में दूसरा माध्यम होता है। जिसे नहीं जागना होता है वह तो जागते हुए भी चादर ओढ़कर सो जाता है नींद न भी आये तो सोने का बहाना बना लेता है। ऐसे बच्चों को माँ उठाकर भी बैठा दे तो भी वह फिर से सो जाता है। इसका मतलब है कोई किसी को नहीं जगाता, स्वयं अपनी ओर से जिसकी जागने की भावना होती है वह जाग जाता है।

तीर्थंकर महावीर स्वामी के स्वयं के ज्ञान ने काम किया तब उनके अन्दर बदलाव आया। हम सभी इतने सारे महाराज माताजिओं को देख रहे हैं इनके स्वयं के ज्ञान ने प्रेरित किया था तब उनके अंदर बदलाव आया है। ऐसा ज्ञान जिसका था वह ज्ञान स्व-पर प्रकाशी था। अपनी आत्मा के कल्याण में भी सहयोगी था और दूसरों के कल्याण में भी सहयोगी बना। जो ज्ञान अपने अंदर भरा है वह ज्ञान दूसरे के कल्याण में भी निमित्त बन जाता है जो स्वयं में ही न भरे वह दूसरों के लिए निमित्त नहीं बन पाता है। एक पण्डित आपसे कितना ही कहे आलू, प्याज का त्याग करो रात्रि भोजन का त्याग करो लेकिन आन नहीं कर पाते हैं उसी का आहार के समय संतजन मात्र संकेत करते हैं और आप त्याग करने के लिए तैयार हो जाते हैं। कारण क्या है संतों ने उस ज्ञान को आत्म सात कर लिया है इसलिए उनकी बात आपके गले उतर जाती है।

भगवान महावीर स्वामी का एक ऐसा ही ज्ञान था। तीर्थंकर जितने भी होते हैं सभी तीर्थंकर दीक्षा लेने के साथ ही मौन धारण कर लेते हैं और तब तक मौन रहते हैं जब तक उन्हें केवल ज्ञान नहीं होता। इतने समय तक न वे किसी से बात करते हैं न उपदेश देते हैं न कोई चर्चा करते हैं कुछ भी नहीं करते अखण्ड मौन पूर्वक वे जंगलों में साधना करते हैं आहार के समय मात्र आहार करते हैं और फिर जंगल में चले जाते हैं। भगवान महावीर स्वामी का जब उपदेश खिरा तो उनसे पूछा गया केवल ज्ञान के पूर्व तक आप मौन क्यों थे। तो उन्होंने कहा- जब तक सत्य की उपलब्धि हम स्वयं प्राप्त न कर लें। सत्य का साक्षात्कार न कर सकें तब तक दुनियाँ को सत्य के विषय में हम क्या बतला सकेंगे। आज मैंने सत्य का साक्षात्कार किया है सत्य की उपलब्धि प्राप्त कर ली है इसलिए जो भी कहूँगा उस बात को पूर्ण रूपेण डंके की चोट पर सत्य कह सकता हूँ। जो व्यक्ति रत्नत्रय को धारण करता है वह व्यक्ति स्वर्ग भी प्राप्त कर सकता है और मोक्ष भी प्राप्त कर सकता है।

बन्धुओ! पाने के बाद उस विषय में समझाना आसान है। आज दुनियाँ में बहुत सारे ऐसे लोग भी हैं जो तत्व को स्वयं नहीं समझे लेकिन समझाने के लिए तैयार हो जाते हैं। अकबर की सभा में अकबर ने बीरबल से पूछा- कि वीरबल अपनी सभा में कितने वैद्य हैं और कितने बीमार हैं। तो वीरबल ने कहा- हुजूर बीमार कम वैद्य ज्यादा है। अकबर को सुन कर आश्चर्य हुआ ऐसा कैसे हो सकता हैं। वीरबल ने कहा अजमा लीजिए। दूसरे दिन अकबर लेट गये बीमार हैं पेटदर्द हो रहा है। अब तो मिलने वालों की लम्बी लाईन लग गई। सभी एक-एक करके अकबर के पास जा रहे थे। सभी लोगों ने

अपने अपने सुझाव दिये। किसी ने कहा- पेटदर्द कर रहा है त्रफला का चूर्ण लेना चाहिए तो किसी ने कहा- सिकाई करना चाहिए, किसी ने कहा- हीगाष्टक लेना चाहिए। सभी के सुझाब को नोट किया गया तो उनसे एक डायरी भर गई अंत में बीरबल पहुंचे बोले- हुजूर पेटदर्द ठीक हो गया होगा। अकबर ने कहा- पेटदर्द हुआ कब था वह तो ठीक ही था लेकिन आज मुझे मालूम चल गया कि बीमार अधिक हैं या वैद्य अधिक हैं। बीमार केवल मैं था लेकिन वैद्य सभी बन गये।

बन्धुओ! लोग आत्मसात नहीं करते और दूसरों को उपदेश देने लगते है। तुलसी दास ने रामायण के अंदर कहा है-

पर उपदेश कुशल बहु तेरे।
जे आचरें ते नर न घनेरे।।

कहने का तात्पर्य है दूसरों को उपदेश देने वाले बहुत हैं। दूसरों को जगाना सरल है अपने आप को जगाना बहुत कठिन है। भगवान महावीर स्वामी ने अपने आपको जगाया था और एक ऐसा जगाया कि उन्हें निर्वाण हुए २५४४ वर्ष हो गये लेकिन फिर भी आज तक लोगों के दिल ओर दिमाग में महावीर भगवान जयवंत हैं। जबकि इस धरा धरती पर और भी कितने सारे वीर योद्धा हो गये लेकिन सभी के नाम किताबों अथवा चर्चा में ही रहे लेकिन भगवान महावीर स्वामी व्यक्ति के दिल दिमाग ही नहीं आत्मा में उतरें है। लोग जितनी मूर्ति और मंदिर बनाते हैं उससे भी अधिक वो लोगों की आस्था में बसे हैं।

विदेशी विद्वान जे.कोबी. हुए उन्होंने महावीर भगवान के ऊपर चार पंक्तियों में लिखा- इस संसार में बड़े-बड़े युद्धा हुए, दुनियाँ ने उन्हें वीर कहा वीरचक्र दिया लेकिन फिर भी मैंने जब पलट कर देखा तो वे वीर नहीं अवीर ही निकले लेकिन मेरी दवोज पर एक ऐसे वीर मिले जिन्होंने अपने अंदर के राग, द्वेष, क्रोध, मान, कर्मों पर विजय प्राप्त की वे भगवान महावीर थे।

बन्धुओ! जब हम इतिहास की ओर देखते हैं तो सभी जगह भगवान महावीर का उल्लेख मिलता है। महावीर भगवान ओर बुद्ध का समय लगभग समकालीन रहा है और उनका जन्म स्थान भी बहुत निकट रहा है। जब भगवान महावीर स्वामी को केवलज्ञान हुआ और बुद्ध को बोधि की प्राप्ति नहीं हो पाई तो बुद्ध को चिंता हुई कि महावीर को केवलज्ञान हो गया और मैं वैसा का वैसा ही हूँ मुझे बोधि की प्राप्ति नहीं हो सकी, तो उन्होंने उस वक्त अपने शिष्यों को राजग्रही में भेजा कि वहाँ जाकर पता लगाओ कि महावीर ने क्या साधना की थी जिससे उन्हें केवलज्ञान हुआ। उनके शिष्य वहां पहुँचे और वहाँ की तपस्या देखकर उन्होंने किन्हीं श्रमण से जानकारी ली कि तपस्या से कर्म नष्ट हो जाते हैं और प्राणी कर्मों से छुटकारा पा लेता है। बुद्ध से उन्होंने जब यह बात कहीं तो बुद्ध बोले- अगर ऐसी बात हैं तो मैं भी तपस्या करूँगा और उस समय से वे मात्र एक एक चावल खाकर के रहे जिसे अपने यहाँ उत्कृष्ट ऊनोदर कहा जाता है। कुछ ही दिनों में बुद्ध का शरीर एक दम क्षीण हो गया हड्डी, पंजर, पसली उनकी स्पष्ट दिखने लगी, कमजोरी इतनी आ गई कि खड़े होना भी कठिन हो गया। बौद्ध गया में उनकी उस अवस्था की मूर्ति रखी है हम लोग भी उसे देखकर आये थे। एक दिन बुद्ध खड़े होना चाहते तो वे धड़ाम से जमीन पर गिर गये, गिरते ही उनके विचारों में अन्तर आ गया। वे सोचने लगे तपस्या से कुछ नहीं होता है अब मुझे तपस्या नहीं करनी हैं अब मैं वापस अपने राज्य में जाऊँगा। यह सोच वे पानी पीने के लिए दरिया में उतरे तो वहाँ पर एक गिलहरी पानी में अपनी पूंछ भिगोती और चट्टान पर जाकर उस पानी को झटकार देती काफी समय तक बुद्ध उसकी प्रतिक्रिया को गौर से देखते रहे फिर उन्होंने गिलहरी से पूछा- तुम यह क्या कर रही हो, गिलहरी बोली मैं अपनी प्रतिज्ञा का पालन कर रही हूँ। बुद्ध ने पूछा क्या है तेरी प्रतिज्ञा। गिलहरी बोली- इस दरिया ने मेरे बच्चों को डुबा दिया है इसलिए मैं इसके पानी को सुखा कर रहूँगी। बुद्ध ने कहा- तुझे मालूम है तुम्हारी पूंछ कितनी है और इस दरिया का पानी कितना है क्या तू अपनी पूरी आयु में भी इसके पानी को सुखा सकेगी? गिलहरी ने कहा- दरिया का पानी सूखे या न सूखे लेकिन मैं अपनी प्रतिज्ञा से कभी पिछे नहीं हटूगी। बुद्ध वहाँ पुन: प्रतिबोध को प्राप्त हो गये कि जब एक गिलहरी अपनी प्रतिज्ञा से पीछे नहीं हट सकती तो मैं मनुष्य होकर कैसे अपनी प्रतिज्ञा तोड़ दूँ। वे पुन: अपनी साधना में निमग्न हुए इसके बाद उन्हें बोधि की प्राप्ति हुई थी ऐसा उनके यहाँ कहा जाता है।

बन्धुओ! तीर्थंकर महावीर स्वामी की एक ऐसी साधना थी जिसमें प्रदर्शन नहीं आत्म दर्शन था। जिसमें प्रचार नहीं आचरण था। उसी आचरण की उपलब्धि है कि आज तक उनकी छाप हर व्यक्ति पर बनी हुई है। कई व्यक्ति उनकी उपसना करते हैं पूजा करते हैं माला करते हैं लेकिन मुझे आश्चर्य तब होता है जब इतना करने पर भी व्यक्ति को भगवान महावीर स्वामी के जीवन परिचय का ज्ञान नहीं है। इस बात का मुझे दुख होता है कि तुम कैसे जैन हो तुम्हें अपने आराध्य प्रभु के विषय में ही जानकारी नहीं हैं। बहुत सारे लोगों को नहीं मालूम कब भगवान का जन्म, गर्भ ओर दीक्षा कल्याण हुआ कब और कहाँ उन्हें केवलज्ञान की प्राप्ति हुई आदि-आदि इसलिए मेरी एक बात जरूर मान लो वर्ष में कम से कम एक बार तो वर्धमान चरित्र जरूर पढ़ें। उसे भले ही घर का एक सदस्य पढ़े लकिन वह सभी सदस्यों को बार-बार सुनाता रहे ताकि सभी को याद रहे कि महावीर भगवान कैसे और क्या थे।

आज कितने लोगों में भ्रम है उनके उस पवित्र चरित्र को लोगों ने कुछ का कुछ जोड़ अन्य रूप कर दिया है कोई कहता है उनकी शादी हुई थी, कोई कहता है नहीं हुई। कम से कम यदि दोनों ही मत दिये जाए तो फिर भी व्यक्ति समझ सकेगा कि दिगम्बर जैन मत के अनुसार भगवान महावीर स्वमी की शादी नहीं हुई उनके कोई पुत्र पुत्रियाँ नहीं थी। वे बाल ब्रह्मचारी थे। आज स्कूलों में बच्चों को कितना गलत मेटर पढ़ाया जा रहा है जो आपके साथ बहुत बड़ा खेल हो रहा है कि सभी को एक पक्ष का पाठ याद हो जायेगा जिससे लोग कालान्तर में भगवान महावीर को उसी रूप में जानेंगे। उनके वास्तविक स्वरूप को कोई नहीं जान सकेगा। लेकिन हमारा विचार ही उस ओर नहीं जा पाता है। बन्धुओ! हम खूब भगवान के नारे लगाते हैं लेकिन उनके वास्तविक स्वरूप का प्रचार प्रसार नहीं कर पाते हैं अत: हम इस विषय में भी कुछ प्रयास करें, समाज को जाग्रत करें।

बन्धुओ! जो प्राणी ध्यान से भगवान महावीर स्वामी का स्मरण करते हैं उनके सारे शोक दूर हो जाते हैं वे सदैव खूश प्रसन्न रहते हैं और शीघ्र ही इस संसार समुद्र से पार हो जाते हैं। अत: हम सभी प्रतिदिन भगवान महावीर स्वामी का स्मरण करें उनके गुणगान करें।

आज एक और बात आपको बताना चाहता हूँ। श्रमण शब्द हमारे दिगम्बर साधुओं! के लिए प्राचीन ग्रंथों में प्रचलित हैं इसका अर्थ है भगवान महावीर स्वामी के पद चिन्हों पर चलने वाले दिगम्बर संत इसलिए आज से हम सभी एक नारा जरूर लगाये। 'श्रमण संघ जयवंत हो' अर्थात् दिगम्बर श्रमणों का संघ भगवान महावीर स्वामी की शिष्य परम्परा सदैव जयवंत रहे वे अपने कल्याण के साथ जगत के प्राणियों का कल्याण करते रहें तो हमारी महावीर जयंति भी सदैव-सदैव जीवंत रूप में मनती रहेगी। **श्रमण संघ जयवंत हो**

।। जय बोलिए महावीर भगवान की जय।।

अनुशासन एवं चर्या में विश्व के साधु संघों में सर्वोपरि

श्रमणाचार्य निरंजनसागर जी महाराज

श्रमण जीवन में चर्या एवं अनुशासन जीवनोन्नति के प्रखर पहलु हैं। कितना ही ज्ञानी क्यों न हो यदि व्यवस्थित चर्या और अनुशासित जीवन शैली नहीं है तो उन्नति के स्रोत अवरुद्ध हो जाते हैं। परम पूज्य गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर जी महाराज मेरे बड़े भाई हैं। मैंने इनका अनुशासन आज से नहीं, परम पूज्य आचार्य गुरुदेव विमलसागर जी महाराज के संघ से ही देखा है। जब भी ये संघ में आते थे तो नये-नये नियम लागू करते थे। संघ में अधिकांशत: वृद्ध महाराज, माताजी होने के कारण क्लास नहीं लगती थी किन्तु आचार्य विरागसागर जी महाराज ने सभी की क्लास प्रारंभ करा दी थी। जिसका नतीजा ये निकला जिन्हें कुछ भी नहीं आता था वे भी ज्ञानी बन गये थे। इनके हर एक प्रस्ताव संघ के हितकारी होते थे इसलिए गुरुदेव विमलसागर जी एवं उपाध्याय भरत सागर जी उन्हें सहर्ष मान्य करते थे जिससे संघ के साधुओं की चर्या काफी व्यवस्थित हुई थी। आज भी इनका संघ अनुशासन एवं चर्या में विश्व के साधुसंघों में सर्वोपरि है।

जीवन को स्वर्ग बना देते हैं

शहीद भवन कटक (उड़ीसा) में आयोजित विशाल सर्वधर्म सभा में

प्रवचन - प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज

कोई जन्म के गीत गाता है, कोई जिंदगी के गीत गाता है मृत्यु को भूल जाते हैं कोई मरण के गीत गाता है तो जिंदगी को भूल जाते हैं कोई जन्म, जिंदगी और मृत्यु के गीत गाता है लेकिन संसार को भूल जाते हैं।

आज हमारे भारत देश में शिक्षा है लेकिन बोध नहीं है नैतिकता नहीं हैं। आज अर्थ तो है परन्तु शांति नहीं है। जिस धरा-धरती के लिए महापुरुषों ने सींचा है पैसों के बल पर नहीं, अपितु जन-मानस के कल्याण के लिए सींचा है। चाहे वे प्रथम तीर्थेश भगवान ऋषभदेव हो, चाहे भगवान महावीर प्रभु अथवा राम, हजरत मोहम्मत, ईसामशीह हों, गुरु नानक हों, उन्होंने मात्र पुस्तकें नहीं बांटी अर्थात् ज्ञान के बल से भी नहीं सींचा क्योंकि उन्हें मालूम था कि शांति और सुख पैसों से नहीं खरीदे जाते, शांति और सुख किसी पुस्तकों से प्राप्त नहीं होते अन्यथा ऐसे भी बहुत लोग हैं जिनके पास कुछ भी नहीं था और उन्होंने सब कुछ पा लिया। आपको तो पता है एक चाय बेचने वाला प्रधान मंत्री बन सकता है मोदी जी चाय बेचते थे और आज वे प्रधानमंत्री है इसका मतलब है पैसों से पद नहीं खरीदे जाते। मात्र ज्ञान से सब कुछ नहीं पाया जा सकता है। कुछ पाने में सबसे बड़ी भूमिका संस्कारों की होती है।

तीर्थंकर महावीर जब बाल्यावस्था में थे उस समय वे अन्य और राजकुमारों के साथ वृक्ष के ऊपर खेल रहे थे। एक डाल से दूसरी डाल दूसरी से तीसरी डाल पर बालक कूद रहे थे। तभी अचानक राजकुमार वर्धमान की परीक्षा करने स्वर्ग से दो देव आ गये। वे विचार करने लगे स्वर्ग के सौधर्मेन्द्र जिनके बल की प्रशंसा कर रहे थे जिनके शौर्य की प्रशंसा कर रहे थे। वे महावीर आखिर में कौन से हैं। मैं देखना चाहता हूँ उनका बल कैसा है उनमें कितनी शक्ति है। देवों ने अपना रूप बदला और एक बहुत बड़े काले नाग के रूप में उसी वृक्ष से लिपट गया जैसे ही बालकों की दृष्टि उस वृक्ष से लिपटे नाग पर पड़ी वैसे ही वे इधर-उधर से कूद-कूदकर भागने लगे लेकिन तीर्थंकर वर्धमान नहीं भागे।

किसी एक बालक ने ये समाचार माता प्रियंकारिणी (त्रिशला) को देते हुए कहा- माँ हम सभी वर्धमान के साथ एक वृक्ष पर खेल रहे थे तभी वहाँ एक विशाल काला नाग आया और वृक्ष से लिपट गया। जिसे देख हम सभी बच्चे तो भाग आये लेकिन वर्धमान नहीं भागे इतनी सुनते ही त्रिशला माँ का बी.पी. बढ़ गया वे व्याकुल होकर बोली- क्या? क्या कह रहे हो, कहाँ है वर्धमान? बच्चे बोले वे तो उसी पेड़ पर हैं हम सभी ने कहा भागों-भागों लेकिन वर्धमान नहीं भागे। माँ ने कहा- चलो बतलाओं कौन से वृक्ष पर हैं माँ जैसे ही बाहर निकलने को उद्यत होती है वैसे ही वर्धमान ने महल में प्रवेश करते हुए कहा- माँ! कहाँ जा रही हो। माँ ने तो देखते ही वर्धमान को अपने हृदय से लगा लिया बोली- बेटा! क्या हुआ? वर्धमान बोले- कुछ तो नहीं हुआ। माँ- मैंने सुना जहाँ तुम लोग रहे थे वहाँ काला नाग आया था। जिसे देख सभी बच्चे भाग गये क्या तुझे डर नहीं लगा? वर्धमान बोले- माँ! आपने ही तो सिखाया था नाग से नहीं पाप से डरना चाहिए। नाग का जहर कम पाप का जहर ज्यादा होता है। नाग अधिक से अधिक एक भव को नष्ट कर सकता है लेकिन पाप भव-भव को नष्ट कर देता है।

बन्धुओ! तीर्थंकर भगवान की माँ एक ऐसी अच्छी शिक्षा देती थी। वर्धमान में क्या कोई ऐसी त्रिशला माँ है जो बच्चों को ऐसे अच्छे पाठ पढ़ाती हो, अपने बच्चों को ऐसी कहानी सुनाती हो, ऐसे संस्कार देती हो। आज की माँ ही शास्त्र नहीं पढ़ती है तो कहानी कैसे सुनायेंगी, माँ को पिक्चर देखने से फुर्सत नहीं है तो अच्छी शिक्षायें कैसे देगी।

जिस माँ ने अपने बच्चे को भगवान का नाम, णमोकार मंत्र नहीं सिखाया है वह बच्चा मृत्यु के समय तुम्हें णमोकारमंत्र कैसे सुना सकेगा। जिन माता-पिता ने रोते हुए बच्चे के हाथ में मोबाइल पकड़ाया है तो वृद्धावस्था में आपको जब तकलीब होगी, पीड़ा होगी तो बच्चे भी आपको मोबाइल पकड़ायेंगे और कहेंगे बैठो क्योंकि आपने ऐसा ही सिखाया

है। यदि माँ अपने बच्चे को हाथ में कलश पकड़ना सिखा देती, बेटा ऐसा कलश करना चाहिए तो वृक्षवस्था में बेटा कहता मम्मी-पापा अब आपकी उम्र बहुत हो चुकी है आप दुकान की चाबी छोड़ो और कलश पकड़ों तथा भगवान का अभिषेक पूजन करके जीवन को सफल बना लो। जिस माँ ने अपने छोटे से बच्चे को मोबाइल नहीं णमोकार मंत्र की माला दे दी है मानों उसने अपनी गति सुधारने की व्यवस्था कर ली है। लेकिन आज माता-पिता को इतनी फुर्सत कहाँ है। दिन-रात टी.बी. ही देखते रहते हैं। दूर दर्शन में इतने खो जाते हैं कि देवदर्शन को ही भूल जाते हैं।

एक बच्चे से मैंने पूछा- तुम्हारा नाम क्या है तो उसने कहा- मेरा नाम देव पाटनी है दूसरे बच्चे से पूछा तो बोला -मेरा नाम अमन कुन्झर है। मैंने कहा- तुम जैन हो क्या? बोला नहीं, जैन नहीं हूँ। मैं तो कुंझर हूँ। पास में ही उसके दादा-दादी, मम्मी-पापा खड़े थे सभी देखते रह गये, मैने कहा- देख लो तुम्हारे सामने ही जब ऐसी हालत है तो बाद में क्या होगा? बोले- समझमें आ गया अब हर बच्चे को नाम के साथ-साथ जैन कहना और लिखना जरूर सिखाऊँगा।

मैंने कहा- हाँ, आप पाटनी लिखो कोई परेशानी नहीं है, आप रारा लिखो, कुन्झर लिखो, काशलीबाल लिखो, वाकलीबाल लिखो कोई परेशानी नहीं है लेकिन इसके साथ-साथ जैन जरूर लिखा ताकि बच्चों में संस्कार बने रहें कि हम जैन है। और जैन कोई छोटी वस्तु नहीं है बहुत बड़ी वस्तु है, जिसके लिये लोग तरसते हैं।

विश्व वैज्ञानिक आस्टीन हुए उन्होंने- अपने विचारों में कहा- कि मुझे पता नहीं पुनर्जन्म होता है या नहीं लेकिन यदि होता हो तो मेरा जन्म भारत में हो क्योंकि भारत ऋषि, मुनियों की आचार्यों की साधु-संत, तपस्वियों की धरती है यहाँ केवल सुख से रहने की बात ही नहीं, कल्याण की बात भी सिखाई जाती है इसलिए मैं चाहता हूँ कि मेरा जन्म भारत में हो और वह भी जैनधर्म में हो।

बन्धुओ! यह शब्द सुनते ही हमें गर्व होता है कि हमारा जन्म ऐसे महान धर्म में हुआ है। महात्मागांधी जी ने चर्चिल के लिए एक पत्र लिखा था उसमें उन्होंने लिखा कि मैं चाहता था नग्न दिगम्बर मुनि बनूँ और अपने जीवन को सार्थक सफल करूँ लेकिन यह हो नहीं सका। इंदिरागांधी जी सन् १९८२ में जब श्रवणबेलगोला के महामस्तकाभिषेक के कार्यक्रम से वापस लौटी तो पालियामेन्ट में किसी ने उन पर एक व्यंग कसते हुए कहा- मेडम आप जैन कार्यक्रम में गये थे इसलिए लगता है अब तो आप जैन बन गये हैं। इन्दिरागांधी ने उस समय कहा था मैं ही क्या सारे मुल्क को मैं जैन मानती हूँ। जो अहिंसा पर विश्वास रखता है सत्य पर विश्वास रखता है। अच्छे आचरण से अपना जीवन जीता है वह जैन से कम नहीं है।

बन्धुओ! जैन किसी व्यक्ति विशेष का धर्म नहीं है। एक बात और याद रखना जैन कोई जाति नहीं है जैन एक धम्र है इसलिए वह जाति और संप्रदाएँ विशेष का नहीं, किसी पंथ विशेष का नहीं है जैनधर्म प्राणीमात्र का विषय है। तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी के समवशरण में मनुष्य भी बैठते थे, राजा भी बैठते थे, भिखारी भी बैठते थे, शेर भी बैठता था और गाय भी बैठती थी और कूरता से नहीं प्रेमभाव के साथ बैठते थे।

आज मैं सभी माता-पिताओं से एक ही बात कहना चाहता हूँ कि आप अपने विषय में जितना सोचते हो उससे अधिक अपने बच्चों के विषय में सोचों। आज के माता-पिता मात्र इतना ही सोचते है कि हमारा बच्चा बड़े से बड़ा विजनेश करे, ऊँची से ऊँची सर्विस करे, अच्छी पोस्ट पर पहुँचे इसके आगे कुछ नहीं सोचते जबकि आपको सोचना चाहिए कि हमारा बच्चा अपने जीवन में अच्छी से अच्छी खुशी पाये। पुराने समय में बेटे अपने माता-पिता के चरण छूते थे। आज कितने बच्चे माता-पिता के चरण छूते है बहुत कम, क्योंकि आज के बच्चों का माता-पिता के चरण छूने में शर्म आने लगी है। वे पैर नहीं छू पाते, यदि कभी संकोच वश छूते भी हैं तो घूटने तक हाथ लगा पाते हैं और अब तो घुटने छूना भी नहीं रहा दूर से ही छूने का बहाना कर देते हैं। प्राचीन समय में बच्चे जब चरण छूते थे तो माता-पिता आशीर्वाद देते थे सुखी रहो। हर माता-पिता की यही भावना होती है कि हमारा बेटा बहुत उन्नति करे और खुश रहे। लेकिन ध्यान दीजिए कोरे आशीष से बच्चा सुखी नहीं रह पाता है। अत: उसे अंगुली पकड़कर सुख के रास्ते पर चलाना आवश्यक होता है।

गांधी जी ने अपने विचारों में लिखा जब वे वेरिस्ट्री पढ़ने लंदन जाने वाले थे तो उसके पूर्व उन्होंने अपनी माँ से आज्ञा मांगी, माँ ने अनुमति नहीं दी। जब उन्होंने बहुत आग्रह किया तो माँ उनकी अंगुली पकड़कर जैनसंत के पास ले गई ओर उसने महाराज से कहा- मेरा बेटा पढ़ने के लिए विदेश जाना चाहता है। संत ने कहा- जाओ और खूब पढ़ो लेकिन तीन बातों को ध्यान रखना विदेश जाकर कभी मांस, अण्डे नहीं खाना, कभी शराब नहीं पीना और कभी किसी स्त्री पर बुरी दृष्टि मत डालना ये तीन संकल्प ग्रहण करो। तब कहीं उनकी माँ ने उन्हें विदेश भेजा था।

हे माताओं! बच्चों को जन्म दो अच्छी बात है लेकिन उसे अच्छे संस्कार भी दो जिसे बच्चा नहीं सारा संसार याद रखें। आज न महात्मागांधी ही रहे और न उनकी माँ ही लेकिन उनका यह उदाहरण आज तक चलता आ रहा है। अंत में गांधी जी ने लिखा कि यह उन्हीं संस्कारों का प्रभाव है जो मैं इतनी ऊचाईयों तक पहुँच गया जिसे मैंने कभी नहीं सोचा था। अगर ऐसे संस्कार न होते तो संभवत: मेरा जीवन दूसरा होता। एक बार गांधी जी वहाँ बीमार हो गये तो डॉक्टर ने उनसे कहा अण्डा खाना होगा तभी ठीक हो सकोगे। गांधी जी ने कहा- मरना पसंद है लेकिन अण्डे नहीं खाऊँगा। तब डॉक्टर ने भी बड़े आश्चर्य से पूछा- क्या आप भारतीय हैं तो गांधी जी ने बड़े गौरव के साथ कहा हाँ मैं भारत का हूँ और वह भी जैन परिवार का हूँ जिसमें मांस, अण्डे नहीं खाये जाते हैं।

बन्धुओ! माता-पिता केवल अशीष, आशीर्वाद ही न दे इससे बच्चों उन्नति नहीं हो सकेगी अपितु अंगुली पकड़कर उन्हें चलना भी सिखाना होगा, उन्हें धर्म की अच्छी बातें भी सिखाना होगी तब कहीं उनका जीवन अच्छा बन सकता है।

सुभाषितकार ने हितोपदेश मित्रालाप में कहा- कि जो माँ बच्चों को जन्म तो देती है लेकिन उन्हें संस्कार और अच्छी शिक्षा नहीं देती। जो पिता बच्चों को न पढ़ाते है और न उन्हें जीवन जीने के तरीके सिखाते है नैतिकता और व्यवहारिकता नहीं सिखा पाते वो माता और पिता, माता-पिता नहीं अपितु-

माताशत्रु पिताबैरी येनबालोनपाठिका:।
न शोभते सभामध्ये हंसमध्येवको यथा:।।

वो माता बच्चे की सबसे बड़ी शुत्र है पिता सबसे बड़े बैरी हैं अब आप स्वयं सोच लीजिए आप कौन हैं।

छोटे बच्चे गीली मिट्टी की तरह होते हैं उन्हें आप कैसा आकार देना चाहते हैं कैसे संस्कारों में ढालना चाहते हैं ये आपका काम है। लेकिन आप भी तभी ढाल पाओगे जबकि आप भी कुछ न कुछ रूप में संस्कारों में ढ़ले हों। दूसरों को संस्कार देने के पूर्व अपने आप में भी संस्कार लाना आवश्यक होता है। एक गुरुकुल के गुरु जब अपने शिष्यों से कोई बात कहते हैं तो उसके पहले वे अपने आपको भी देखते हैं कि ऐसे संस्कार मेरे अंदर हैं या नहीं, यदि नहीं है तो वे पहले उस अच्छे संस्कार को स्वयं ग्रहण करते हैं तब शिष्यों को वैसा बनने की बात कहते हैं।

एक बार एक बच्चे को सिगरेट पीते-पीते टी.बी. की बीमारी हो गई। डॉक्टरों ने उससे बीड़ी, सिगरेट पीने को मना किया तथा उसके परिवार वालों से भी उसे समझाने को कहा। सभी ने खूब मना किया कि बेटा! बीड़ी, सिगरेट पीना बंद कर दे तभी तेरी तबियत ठीक हो सकेगी लेकिन बेटा किसी की बात नहीं माना। अंत में उसके माता-पिता उसके टीचर के पास पहुँचे और उन्हें सारी बात बताई तथा कहा कि अब आप ही ऐसा कोई उपाय करें जिससे बच्चे की बीड़ी-सिगरेट छूट जाये।

चूँकि बच्चे के टीचर स्वयं सिगरेट-बीड़ी पीते थे प्रतिदिन वे उसी बच्चे से मंगाते थे। लेकिन फिर भी टीचर ने कहा- हाँ, मैं जरूर ऐसा प्रयास करूँगा जिससे बच्चा बीड़ी-सिगरेट पीना छोड़ देगा। दूसरे दिन जब वह बच्चा कॉलेज आया तो उसके टीचर ने उससे कहा बेटा! अब तू कभी मुझे सिगरेट लाकर नहीं देना मैं अब कभ सिगरेट नहीं पिऊँगा। बच्चा बोला सर आप तो रोज मुझसे सिगरेट मंगाते तथा जलबाकर पीते थे। अब आप मना कर रहे हैं। टीचर ने कहा- हाँ, बेटा! सिगरेट बहुत जहरीली वस्तु है। उसमें २७ प्रकार के जहर हैं वह एक प्रकार का नशा है जो कि स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता है। इससे टी.बी. और केंसर जैसी बीमारी हो जाती हैं। इसलिए जब से मैने यह बात पढ़ी है तब से मेरे

दिल ने सिगरेट, बीड़ी पीना अस्वीकार कर दिया है। अब मैं उसे देखना भी नहीं चाहता।

बच्चे के मन में भी यह बात अच्छी तरह प्रवेश कर गई वह सोचता है ये तो पढ़कर आये हैं मैं तो उसका दुस्परिणाम प्रत्यक्ष भोग रहा हूँ। डॉक्टर, घर-परिवार तथा पड़ौसी, मित्र आदि सभी ने तो मुझे समझाया लेकिन मैंने किसी की बात नीं मानी आज मैं भी संकल्प लेता हूँ कि अब मैं भी कभी सिगरेट-बीड़ी नहीं छुऊँगा कभी नहीं पिऊँगा।

बन्धुओ! यदि हमने ऐसा कुछ प्रयास किया तो मुझे विश्वास है कि आपके बच्चे बहुत बड़ी उन्नति और प्रगति करने वाले होंगे तथा आपका संपूर्ण जीवन सुख और शांतिमय बना देगे।

मैं एक बात और कहना चाहता हूँ कि माता-पिता अपने बच्चों के साथ बैठकर अश्लील गाने, पिक्चर कभी न देंखे अन्यथा कल के दिन वे बच्चे आपको सम्मान नहीं दे पायेगे।

छोटी सी उम्र में अगर बच्चा चोरी कर रहा है तो आप उसके सामने इठलायें न खुश न हो उसे मजाक में न लें, हँसी में न टाले अपितु यह समझे कि यह बुरी आदत की प्रथम सीढ़ी है आगे जाकर इसका परिणाम बहुत बुरा हो सकता है। अत: उसे कंट्रोल करना आवश्यक है। यदि इतना हमने सोचा है तो निश्चित है हम बच्चे को पाप की नहीं धर्म की सीढ़ी पर चढ़ना सिखायेंगे जिससे मंदिर, मूर्तियाँ तथा दिगम्बर गुरुओं की सेवा-भक्ति करना भी वह बच्चा सीख सकेगा।

आज यहाँ के सभी लोगों में इस बात की खुशी है कि हमारे उड़ीसा प्रांत में प्रथमबार इतने साधुओं के दर्शन प्राप्त हो रहे हैं। किसी ने मुझसे पूछा- कि आपको ओडिशा में कैसा लगा। मैंने कहा यह बात तो मुझे बहुत अच्छी लगी कि यहाँ के लोगों में धर्म के प्रति साधु-संतों के प्रति बहुत आस्था है, श्रद्धा और भक्ति है लेकिन सबसे बड़ी समस्या यह है कि जैन संतों का विचरण कम होने से लोगों के खान-पीन में अंतर है। जब हम रास्ते में विहार कर रहे थे तो एक व्यक्ति बहुत देर तक चरणों में सिर झुकाकर नमस्कार करता रहा, मैंने उससे पूछा- कि इतनी देर तक सिर क्यों झुकाये रहे। उसने कहा- मात्र जैन संतों की त्याग-तपस्या की ऊर्जा लेने के लिए अभी तक मैने मात्र सुना था कि जैन संत केवल दिन में एक बार आहार लेते व उसी समय पानी पीते है और उसमें भी यदि बाल जीव-जन्तु जैसी अपवित्र वस्तु आ जाये तो फिर वे न भोजन करत हैं न पानी पीते हैं आज आपके प्रत्यक्ष दर्शन कर मेरा सिर श्रद्धा से झुक गया।

रास्ते में एक सज्जन नमस्कार करने के बाद रूपये निकालकर देने लगे जिसे देख मुझे हंसी आ गई, तो उन्होंने कहा- महाराज रूपये कम है क्या? मैंने कहा- नहीं, कम नहीं हैं अपितु आपके नोट हमारे चलन से बाहर हैं। क्योंकि पहली बात नोट रखने के लिए मेरे पास न जेब है न बैग, अटैची आदि सामन है। दूसरी बात मैं इसका क्या करूँगा? बाजार में जाना नहीं, होटल में खाना नहीं, कपड़े पहनना नहीं, आभूषण लेना नहीं तो पैसे मेरे क्या काम आयेंगे? उन्हें बड़ा विस्मय हुआ। उन्होंने कहा- आज तक तो मैंने जिन्हे देखा वे केवल मांगते ही दिखे लेकिन ऐसे संतों को तो मैं पहली बार देख रहा हूँ जो देने पर भी मना कर रहे हैं। आज तो मेरा जीवन धन्य हो गया क्योंकि सच्चे संत के दर्शन मुझे प्राप्त हो गये।

बन्धुओ! दिगम्बर संत कोई प्रसाद नहीं बांटते लेकिन हाँ वे ऐसा शुभाशीष देते हैं जिससे संपूर्ण जीवन सुसंस्कारित हो जाता है। वे स्वर्ग नहीं देते अपितु जीवन को ही स्वर्ग बना देते हैं।

बन्धुओ! ओडीसा एक ऐसा प्रांत है जिसके इतिहास की ओर जब देखते हैं तो पता चलता है यह कटक सुभाषचंद्रबोश की जन्म नगरी है। यहाँ का इंडोनैसिया देश से व्यापारिक संबंध रहा है यही कारण था कि वहाँ भी सर्वाधिक जैन मंदिर थे। यहां ओडीसा में भी उस वक्त जैन मंदिर बहुत थे आज भी यहां के ९० ऐसे स्थान है जहाँ जैन मूर्तियाँ एवं मंदिरों के अवशेष निकलते हैं। जब हमने यहाँ की प्रतिमा को देखा तो एक अलग ही अनुभूति हुई। यहाँ के कलिंगजिन की प्रतिमा बड़ी ही मनोज्ञ एवं अतिशयकारी है। सम्राट खारवेल की जो श्रद्धा-भक्ति उनके प्रति थी वह आदर्शभूत है। हम सभी ऐसे भगवान की सेवा भक्ति दर्शन कर अपने जीवन को सफल बनायें।

।। जय बोलिए कलिंगजिन आदिनाथ भगवान की जय।।

आगमिक शंका समाधान

समाधान कर्ता- प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज

शंका- मधु जैन, भोपाल- अरहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, साधु या चौबीस तीर्थंकरों को हम नमस्कार करते हैं ?

समाधान- ऐसा विधान है कि जिस समय हवन किया जाता है तो उस उसम स्वाहा इस प्रकार के आहूति परक मंत्र बोले जाते हैं और अग्नि में द्रव्य क्षेपण किया जाता है। विशेष कर यह तंत्र क्रिया है जो विभिन्न प्रकार की समस्याएँ और संकटों से मुक्ति पाने के लिए एवं आपत्ति-विपत्ति से रक्षा पाने के लिए इस प्रकार की आहुति मंत्रों का प्रयोग किया जाता है इससे सुख संवृद्धि प्राप्त होती है।

शंका- परस्त्री सेवन करने वाले व्यक्ति के पत्नि, बच्चों को आहार देने का अधिकार है या नहीं अगर व्यक्ति प्राश्चित लेकर शुद्ध हो जाये तो ?

समाधान- विषय सभा में समाधान नहीं किये जाते। यदि ऐसी कोई परिस्थिति है तो उसे डारेक्ट गुरु से सम्पर्क बनाना चाहिए। उसके गुरु उस विषय को बारीकी से समझे प्रायश्चित देने योग्य हो तो प्रायश्चित दें, उसके माता-पिता आदि परिवार जन किस प्रकार की परिस्थिति वाले हैं यह भी समझें, यह विषय आम सभा का नहीं हैं। अलग से संपर्क करें।

शंका- राजीव जैन, भिण्ड- एक प्रतिमाधारी बिना मंदिर दर्शन के ट्रेन में खा-पी सकता है या नहीं ?

समाधान- अगर कहीं मंदिर, मंदिर के शिखर अथवा मुनिराजों के दर्शन हो जायें तो नियम पूरा मानलिया जाता है अगर कुछ भी संभव न हो तो एक रस अथवा भोजन की एक सामग्री का त्याग करके अथवा णमोकार मंत्र की माला फेरकर भोजन किया जा सकता है लेकिन चलती ट्रेन अर्थात् ट्रेन में बैठे-बैठे कुछ भी नहीं खा-पी सकता क्योंकि उसका सोले में भोजन का नियम हो जाता है। अत: उसे पूर्व से ही गीले से वस्त्र एक पोलीथीन में रख लेना चाहिए। ट्रेन स्टेशन पर रूके उसे पूर्व ही वे गीले वस्त्र पहनकर तैयार रहे और स्टेशन पर उतर कर योग्य स्थान पर डाव आदि का पानी अथवा बिना पानी के बने लड्डू फल आदि खा लेना चाहिए। यही एक उपाय है ट्रेन में बैठकर अशुद्ध अवस्था में वह न पानी पी सकता है न कुछ खा ही सकता है इसका ध्यान रखें।

शंका- हेमन्त गांधी तलोद, गुजरात- निमित्त नैमित्तिक संबंध क्या होता है ?

समाधान- निमित्त, नैमित्तिक संबंध का अर्थ है हेतु पाकर जो कार्य पूरा होता है वह निमित्त नैमित्तिक संबंध है हेतु निमित्त है कार्य नैमित्तिक है दोनों का मेल निमित्त नैमित्तिक संबंध है। इसे कारण-कार्य संबंध भी कहते हैं। उदाहरण के तोर पर कुम्हार, चका, चीवर कारण है मिट्टी कारण है निमित्त है लेकिन उससे जो घड़ा बना वह कार्य अथवा नैमित्तिक है। भगवान की दिव्यध्वनि खिरना और उसे सुन कर जिन्हें वैराग्य हो रहा है उसके लिये वह दिव्यध्वनि कारण है। एक ही निमित्त अनेक कार्य के हेतु बन जाते हैं।

शंका- पंचम काल में द्वितीयोपशम सम्यक दर्शन हो सकता है क्या ?

समाधान- इस विषय में दो आचार्यों के दो मत है एक आचार्य महाराज कहते हैं श्रेणी आरूढ़ करते समय जो उपशम श्रेणी से आगे बढ़ता है उस समय द्वितीयोपशम सम्यग्दर्शन होता है। दूसरे आचार्य गुणधर स्वामी जो कषाय पाहुड के कर्ता है उनके अनुसार चारों गतियों में जीव द्वितीयोपशम सम्यग्दर्शन प्राप्त कर सकता है इस प्रकार से शास्त्रों में दो प्रकार का उल्लेख प्राप्त होता है।

शंका- द्वितीयोपशम सम्यग्दर्शन किसे कहते हैं ?

समाधान- जिन आचार्य महाराज ने श्रेणी आरोहण की बात कही है उनके अनुसार चारित्र मोहनीय कर्म के उपशम के सथ दर्शन मोहनीय का भी जिसने उपशम किया है उसे द्वितीयोपशम सम्यग्दर्शन होता है और दूसरे आचार्य के अनुसार अनादि मिथ्यादृष्टि जब प्रथमबार उपशम सम्यग्दर्शन प्राप्त करता है उसे प्रथमोपशम सम्यग्दर्शन कहते हैं और उसके बाद

जितनी बार भी वह उपशम सम्यग्दर्शन प्राप्त करेगा वह सभी द्वितीयोपशम सम्यग्दर्शन होता है।

शंका- तीर्थंकर भगवान के समवशरण में यदि पूर्व दीक्षित मुनिराज हो तो क्या उनके निमित्त उनकी दिव्य ध्वनि खिर सकती है या उनके स्वयं के शिष्य होने पर उनके लिये ही दिव्यध्वनि खिरती है ?

समाधान- यदि किसी का विशेष पुण्य हो तो खिर सकती है लेकिन ऐसा उदाहरण आज तक किसी का नहीं मिला कि अन्य दीक्षित शिष्य उपस्थित हो और किसी तीर्थंकर भगवान की दिव्यध्वनि खिरी हो। अभी तक स्व शिष्य और उसमें भी योग्य शिष्य के उपस्थित होने पर ही तीर्थंकरों की दिव्यध्वनि प्रधानता से खिरती है अन्य की उपस्थिति में नहीं।

अप्रैल माह के महोत्सव दिवस

जन्म/दीक्षा/पुण्यतिथि	तारीख	स्थान /नाम
जन्म दिवस	८.४.१९७८	ललितपुर, श्रमण श्री प्रणत्तसागर जी
दीक्षा दिवस	९.४.१९९८	भिण्ड, श्रमणी आ. विशिष्टश्री माता जी, श्रमणी आ. विदूषीश्री माताजी, क्षुल्लिका विरक्तश्री माताजी।
जन्म दिवस	१५.४.१९८५	भिण्ड, क्षुल्लिका विजिताश्री माता जी
जन्म दिवस	१९.४.१९७७	दुर्ग, श्रमण श्री आराध्य सागर जी
जन्म दिवस	२१.४.१९४३	चोरीवाड़ा, मुनिश्री विश्वहित सागर जी
पुण्य तिथि	१४.४.२०१५	पन्ना, श्रमणी आ. विमोक्षश्री माता जी
जन्म दिवस	२९.४.१९८०	भिलाई, श्रमणी आ. विबोधश्री माता जी
दीक्षा दिवस	३०.४.१९९६	टीकमगढ़,श्रमण श्री विश्वयश सागर जी
पुण्य तिथि	३०.४.२०१४	गुनौर, श्रमण श्री विश्वपद सागर जी
पुण्य तिथि	३०.४.२०१	क्षु. श्री विजितेन्द्र सागर जी

चैत्र मास के व्रत एवं कल्याणक महोत्सव

२४ मार्च २०१९	चैत्र कृष्ण ४	श्री पार्श्वनाथ ज्ञान कल्याणक
२५ मार्च २०१९	चैत्र कृष्ण ५	श्री चंद्रप्रभु जी गर्भ कल्याणक
२८ मार्च २०१९	चैत्र कृष्ण ८	श्री शीतलनाथ जी गर्भ कल्याणक एवं अष्टमीव्रत
२९ मार्च २०१९	चैत्र कृष्ण ९	श्री ऋषभदेव जी जन्म एवं तप कल्याणक
४ अप्रैल २०१९	चैत्र कृष्ण १४	चतुर्दशी व्रत
५ अप्रैल २०१९	चैत्र कृष्ण ३०	श्री अनन्तनाथ जी मोक्ष कल्याणक श्री अरहनाथ जी मोक्ष कल्याणक
६ अप्रैल २०१९	चैत्र शुक्ल १	श्री मल्लिनाथ गर्भ कल्याणक
८ अप्रैल २०१९	चैत्र शुक्ल ३	श्री कुन्थुनाथ जी ज्ञान कल्याणक
९ अप्रैल २०१९	चैत्र शुक्ल ४	दशलक्षण व्रत प्रारंभ
१० अप्रैल २०१९	चैत्र शुक्ल ५	रोहिणी व्रत श्री अजितनाथ जी मोक्ष कल्याणक
११ अप्रैल २०१९	चैत्र शुक्ल ६	श्री संभवनाथ जी मोक्ष कल्याणक
१३ अप्रैल २०१९	चैत्र शुक्ल ८	अष्टमीव्रत
१५ अप्रैल २०१९	चैत्र शुक्ल १०	श्री सुमतिनाथ जन्म, ज्ञान, मोक्ष कल्याणक
१७ अप्रैल २०१९	चैत्र शुक्ल १३	श्री महावीर स्वामी जी जयन्ती, रत्नत्रय व्रत प्रारंभ
१८ अप्रैल २०१९	चैत्र शुक्ल १४	चतुर्दशीव्रत, दशलक्षण व्रत पूर्ण
१९ अप्रैल २०१९	चैत्र शुक्ल १५	श्री पदमप्रभु ज्ञानकल्याणक

निज-दर्पण को स्वच्छ करने की कला: प्रतिक्रमण

(कृतिकार- आचार्य विशुद्ध सागर जी महाराज)

हे ज्ञानपुंजात्मन्! दोष उत्पन्न करना तेरा स्वरूप नहीं हैं, तू निर्दोष चेतनस्वरूप भगवान-आत्मा है। क्यों विकारी परिणति से परिणत होकर चेतन स्वरूप को आवृत कर रहा है? निज आत्म-दर्पण को गंदा मत बना। राग-द्वेष की कालिमा से निज-दर्पण धूमिल है, अत: उस धूमिलता को प्रतिक्रमण रूपी नीर से धो तभी तेरी भगवान् स्वरूपी आत्मा तुझे प्राप्त होगी। क्रोधादि विकारी भावों में कदाचित् तेरी परिणति बन गयी हो, तो तू अपने दोषों का प्रतिक्रमण कर लेना। वस्तुत:, राग-द्वेषयुक्त आत्मा के लिए प्रतिक्रमण अमृतकुंभ है। जब तक तू निश्चय प्रतिक्रमण को प्राप्त न हो जाए, तब तक व्यवहार प्रतिक्रमण मत छोड़ देना, नहीं तो तू डूब जाएगा संसारार्णव में। वह साधक अज्ञानी है, जो कहता है कि मैं तो निश्चय प्रतिक्रमण करता हूँ, किन्तु व्यवहार प्रतिक्रमण से शून्य होकर। ऐसा साधक व्यवहार और निश्चय दोनों प्रतिक्रमण से पराङ्मुख हो जाता है, क्योंकि व्यवहार को छोड़कर निश्चय नहीं होता, बल्कि निश्चय प्रतिक्रमण में जब प्रवेश होता है तब व्यवहार स्वयमेव छूट जाता है। निश्चय कहने वालों को निश्चय प्रतिक्रमण नहीं होता, अपितु जो व्यवहार प्रतिक्रमण को भावपूर्वक करता है, उसके माध्यम से जो विशुद्ध परिणम होते हैं और उन विशुद्ध परिणामों से जो एकाग्रता जाग्रत होकर आत्मलीनता बनती है, उसी से निश्चय प्रतिक्रमण का प्रादुर्भाव होता है। अर्थात् जहाँ प्रतिक्रमण अप्रतिक्रमण के भाव का ही अभाव हो जाता है, वहाँ बनती हैं निश्चय प्रतिक्रमण की भूमिका। निश्चय-प्रतिक्रमण वीतराग-चारित्र के अविनाभावी होता है। बिना वीतराग चारित्र के निश्चय-प्रतिक्रमण संभव नहीं। लेकिन ध्यान रखना, केवल पाठ करना प्रतिक्रमण नहीं है, कि पुस्तक उठाकर तीनों कालों में पाठ कर लिया और हो गया प्रतिक्रमण नहीं। रट लेना, पढ़ लेना, सुन लेना मात्र प्रतिक्रमण नहीं है, वह तो आंतरिक भावों से होता है। दोषों के प्रति ग्लानि उत्पन्न होना चाहिए एवं पुन: गलती न हो इस प्रकार की भूमिका का नाम ही वास्तविक प्रतिक्रमण है। प्रतिक्रमण, अज्ञानता-प्रमाद से उत्पन्न हुए दोषों का होता है। अतीत एवं वर्तमान में राग-द्वेषादि से व्रतों में अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार/दोष उत्पन्न होने पर प्रतिक्रमण की सरिता में डुबकी लगाना परम अनिवार्य है। 'प्रतिक्रमण वह मंत्र है- जिससे व्रत के दूषण धुलते हैं एवं आत्मा स्वच्छ होती है।' लेकिन इसे खेल मत समझ लेना कि, आप जानकर गलती करते जायें और कहें कि मैंने प्रतिक्रमण कर लिया अथवा गलती पर गलती करते जाएँ। जानकारी भी है कि यह क्रिया साधुपद के योग्य नहीं है, फिर भी वैसी गलती करें और कहें कि कोई बात नहीं आगम में प्रतिक्रमण का विधान है, अत: प्रतिक्रमण कर लूँगा। यह सच्चा प्रतिक्रमण नहीं अपितु एक प्रकार का आगम के साथ एवं स्वयं के साथ छल है। प्रतिक्रमण के साथ प्रत्याख्यान का भी विधान है।

हे विज्ञात्मन्! प्रत्याख्यानपूर्वक किया गया प्रतिक्रमण ही वास्तविक प्रतिक्रमण है। प्रतिक्रमण के उपरांत त्याग होना अनिवार्य है। जैसा आगम में प्रतिक्रमण का वर्णन है, वैसा ही करना चाहिए। इसे मजाक या मनमानी नहीं बनाना, अन्यथा जटिल कर्म-बंध होगा। चाहे कितना भी बड़ा प्रभावना का कार्य क्यों न हो, अन्य प्रभावना जब होगी तब होगी, लेकिन स्वयं की क्रिया को छोड़ दिया तो आपने निज अप्रभावना तो पहले ही कर ली। मार्ग-प्रभावना का क्या औचित्य? आत्म-प्रभावना के साथ की गयी मार्ग-प्रभावना ही सच्ची प्रभावना है। अधूरा या दण्डक छोड़कर प्रतिक्रमण करना भी उचित नहीं है, ऐसा करना मनमानी नहीं तो और क्या है? हमारी चर्या 'मूलाचार' के अनुसार होनी चाहिए, न कि हमारे अनुसार मूलचार। अथवा यह भी आगम से घटित नहीं होता कि मैं स्वयं में मूलाचार हूँ। वर्तमान में किसी को भी मूलाचार नहीं कहा जा सकता, मूलाचार-जैसी चर्या का पालन कहा जा सकता है, वह मूलाचार के अनुसार हमारी चर्या हो सकती है, क्योंकि स्वयं में मूलाचार तीर्थंकर भगवान् ही होते हैं। मूलाचार ग्रंथ के सृजक भी स्वयं मूलाचार नहीं है।

मूलाचार का तात्पर्य मूल+अ+आचार्य= मूलाचार यानी मूल आचार के कर्त्ता, जो कि वीर भगवान् हैं। वर्तमान के वीर की वाणी में ही आचारांग का उपदेश हुआ था। हाँ, जिनकल्पी मुनि की चर्या को कदाचित् मूलाचार स्वीकार किया जा सता है, परन्तु वर्तमान साधकों से मेरी प्रार्थना है कि वे अपनी चर्या को स्वयं मूलाचार न कहें, नहीं तो प्रत्येक साधक का स्वतंत्र मूलाचार हो जाएगा। फिर तीर्थेश वीर की वाणी का क्या होगा? फिर आपका सत्य भी नहीं स्वीकारा जा सकता, क्योंकि आप स्वयं मूलाचार हैं अथवा आपका मूलाचार स्वतंत्र है तो फिर आपको जैसा अच्छा लगता है वह सब मूलाचार हो जाएगा। एक उन्मार्गी मृगचारी साधक भी अपना मूलाचार कहेगा, फिर उसके असत्य मार्ग को भी स्वीकारना होगा। अत: कुंदकुंदाचार्य का मूलाचार या अन्य आचार्य का आचारसार, चारित्रसार आदि ग्रंथ ही प्रमाणित हैं, या जो कृति आर्ष-परंपरा से सृजित है, प्रामाणिक है। आपके पास प्रत्यक्ष ज्ञान है नहीं और न ही हम प्रत्यक्ष ज्ञानी हैं, तो फिर आपको कैसे मूलाचार कहूँ? उन साधकों को भी मौन नहीं रहना चाहिए, जिनको भक्तगणों द्वारा मूलाचार कहा जा रहा है। उन्हें मौन तोड़कर उसका खण्डन करना चाहिए एवं अंधभक्तों को समझाना चाहिए कि मैं मूलाचार नहीं हूँ, मूलाचार के अनुसार चलने का प्रयास कर रहा हूँ। क्योंकि मूलाचार तो तीर्थंकर भगवान जिनकल्पी उपेक्षा-संयमी ही हैं। ऐसा कहने से स्वयं का गौरव ही बढ़ेगा एवं आर्ष की रक्षा होगी, अन्यथा हमारे मौन से आर्ष का घात ही होगा, क्योंकि वर्तमान संहनन के अनुसार ही चर्या का पालन संभव हो सकता है।

सम्प्रति में शक्ति अनुसार स्थविरकल्प अपहृत-संयमी को प्रतिक्रमण दण्डक-सहित ही करना चाहिए। प्रतिक्रमण अंदर से किया जाता है। परमात्मा के चरणों में अपने दोषों को प्रकट करना कि मैं दोषी हूँ। निज दोषों को प्रकट करना कोई सहज कार्य नहीं है। धन्य हैं वे निर्ग्रंथ-दिगम्बर-श्रमण, जो दिन में एक बार, दो बार नहीं अपितु तीन बार अपने दोषों का प्रतिक्रमण करते हैं। कितने निर्मल परिणाम होंगे उस जीव के, जिसने सम्यक् मायने में अर्थात् सही अर्थों में दिगम्बरत्व स्वीकारा है। जिनचर्या स्वेच्छाचार की विरोधक है। दिगम्बर आम्नाय में किसी भी प्रकार की शिथिलता को स्थान नहीं। यतियों के जीवन में २८ मूलगुणों का निर्दोष पालन होना चाहिए। यदि प्रमादवश कोई दोष उत्पन्न होता है तो शीघ्र प्रतिक्रमण, प्रत्याख्यान करते हैं।

साधक निर्मल-भाव से अपने दोषों को प्रभु या गुरु चरणों में प्रत्यक्ष-परोक्ष, स्वसाक्षी/पंचपरमेष्ठी-साक्षीपूर्वक निवेदन करते हैं। यही सज्जनता है और ऐसी साधुता वीतरागता श्रमणों के पास ही दिखती है। वे जब स्वयं में डूबते हैं तो एक-एक दोषों की आलोचना, निंदा, गर्हा करते हैं कि, हे प्रभु! मैं पापी, दुरात्मा, जड़बुद्धि, मायावी, लोभी हूँ। राग-द्वेष से मलीन मन से मेरे द्वारा जो दुष्कर्म निर्मित हुए हैं। हे त्रैलोक्याधिपते जिनेन्द्र! आपके श्रीपादमूल में निंदा-गर्हापूर्वक छोड़ता हूँ। हमेशा सत् पथ पर वर्तन करूँगा। हे जिनेन्द्र आप मेरे अन्तस् में ऐसी क्षमता भर दें कि, पुन: किसी कुमार्ग में गमन न करूँ। हे नाथ! आपके प्रसाद से ही मैं पवित्र हो सकता हूँ। मुझसे गल्तियाँ होना स्वाभाविक हैं छद्मस्थ अवस्था में। प्रभु! मेरे ज्ञान में गल्तियाँ छुप सकती हैं, लेकिन आपके निर्मल विशद् केवलज्ञान में नहीं। हे विभु! यदि मेरे से गल्तियाँ न होती तो फिर मैं संसारी, मूढ़, अल्पज्ञ/ छद्मस्थ क्यों कहलाता? फिर मैं आपके श्रीचरणों में अपनी भूलों का विज्ञापन क्यों देता? हे जगदीश! मैं आपकी ही शरणागत हूँ, एक बार क्षमा अवश्य कर देना। इस प्रकार निज दोषों का, सारी विकृतियों का निवेदन कर अपने व्रतों में पुन: उपस्थित हो जाते हैं, वे तपोधन ही प्रतिक्रमण के फल को पाते हैं। किंतु जो अपने आप में लीन नहीं है अर्थात् जिन्हें अपने दोष ही नहीं दिखते एवं दुनियाँ के रंगारंग में या स्वराग में रंगे हैं, वे नहीं। ऐसे साधक कर्त्तव्यविहीन कहलाते हैं, जिनको न समाज की चिंता है और न ही देश-राष्ट्र की। सच्चा साधक वही है, जो अपने दोषों को देख एक- एक गल्तियों को छोड़ता जाता है और सद्गुणों को प्राप्त कर सज्जनोत्तम से परमोत्तम बनने की परम भावना रखता है। साधक का यही श्रेष्ठ लक्ष्य होता है।

- 'निजात्म तरंगिणी' से साभार

कर्तव्य ही पतित को पावन कर परमात्मा बना देता है

आचार्य विनम्रसागर जी

पतितों के लिये ये दुनियाँ है, पतितों की ये दुनियाँ है, ये संसार पतितों की वजह से ही चल रहा है कुछ पतित पापों से घबराकर परमात्मा का सहारा ले लेते हैं जिस कारण वे पावनता की ओर बढ़ने लगते हैं परमात्मा का सहारा उनके हृदय को पावन कर देता है वैसे ही सारे हृदय अपवित्र हैं खून और माँस से निर्मित हैं लेकिन ऐसे अपवित्र स्थान पर कर्तव्य के द्वारा परम पवित्र परमात्मा को हृदय से भावविभोर होकर ध्याया जाता है, उसे गाया जाता है, बुलाया जाता है तब वह हृदय पतित से पावन होने लगता है। परमात्मा अपवित्र से अपवित्र स्थान पर आ जाये तो वह स्थान भी पवित्र हो जाता है सबरी के जूठे बेर रामचन्द्र जी ने खाये तो उसके बेर भी पवित्र हो गये और उसकी कुटिया भी पवित्र हो गई।

यदि परमात्मा न होता तो कोई भी वस्तु या कोई भी इंसान पावन नहीं होता। परमात्मा का उपकार, गुरुओं का उपकार उसी के लिए है जो उन्हें स्वीकार करने के लिए तैयार है। गुरु ही भक्त और भगवान को मिलाने का सेतु है गुरु बीच में न होता तो भक्त कभी भी भगवान से नहीं मिल पाता। जिन भक्तों को परमात्मा के दर्शन करना है उन्हें गुरु को बीच में ढूँढना या लाना जरूरी है। यदि कोई व्यक्ति छः कर्तव्यों को न करके केवल दो कर्तव्य प्रतिदिन करता है तो भी यह पूर्ण पावन नहीं हो सकता है। छः कर्तव्यों में से कोई एक भी कर्तव्य तब सफल और कार्यकारी है जब छः कर्तव्य किये जावें प्रत्येक कर्तव्य के पीछे भाव छिपा हुआ है कर्तव्य का मतलब ही है कि वह कार्य जो करने योग्य हो और ऊर्ध्वगामी बनने के लिए भावों से किया जाये। भावों के बिना किया गया कार्य कर्तव्य नहीं हो सकता है।

कई लोग कहते हैं कि दुकान खोलना भी कर्तव्य है, बच्चों को देखभाल करना भी कर्तव्य है, पत्नी को देखना भी कर्तव्य है, घर बनवाना भी कर्तव्य है लेकिन ये वे लोग हैं जो कर्तव्य निष्ठ नहीं हैं ये कार्य भोगियों के लिए कर्तव्य हो सकते हैं धर्मियों को नहीं। सही बात तो यह है कि वे कर्तव्य नहीं हैं अपने द्वारा किये गये अपराध की सजा है। अतः कर्तव्यशील होना ही जीवन को पावनता की ओर ले जाना है यही जीवन की सफलता है।

अल्पज्ञान भक्ति में बाधक नहीं होता

भक्त सच्चा हो, तो भक्ति में आने वाली बाधाएँ भी उसे उपकारी मालूम पड़ती हैं। भक्त बाधाओं को सखा बना लेता है। भक्ति बाधाओं में प्राणवान हो जाती है। बाधायें पराजित होती है, भक्त पराजित नहीं होता। काँटों को कुचला जाता है, फूलों को सिर पर गुँथा जाता है। भक्ति को स्वर, संगीत नहीं, गहन भावों की विशुद्धि चाहिये। स्वर, संगीत प्राथमिक भक्ति की प्रेरणा है, जिससे मन चंचलता को छोड़ परमात्मा में रमे। जब परमात्मा में डूबना आ जाये तो भक्ति चमत्कारिक हो जाती है।

ज्ञान की अल्पता भक्ति में बाधक नहीं। ज्ञान का अंहकार ही भक्ति में बाधक है। अल्पज्ञान यदि भक्ति के रस में डूब जाये, तो केवलज्ञान होने में देर नहीं रहती। अल्पज्ञानी को विद्वान की सभा में हँसी का, उपहास का पात्र भी बनना पड़े, तो भी वह भक्ति से विचलित नहीं होता। उपहास भक्ति का प्रवेश द्वार है। जो इस प्रवेश द्वार में निर्भय होकर आगे बढ़ता है उसे तीन लोक में कोई भी परमात्मा होने से नहीं रोक सकता।

परमात्मा के सामने जल, फल चावल तभी चढ़ाना सार्थक हो सकते हैं, जब उपहास में भी उपकार का भाव आ जाये। उपहास करनेवाला ज्ञानी नहीं है, किन्तु उपहास को स्वीकार करने वाला भी ज्ञानी नहीं हैं। उपहास में भी भक्ति करनेवालों का कुछ बिगड़ता नहीं, लेकिन उपहास के डर से परमात्मा भक्ति को छोड़ने से भव-भव बिगड़ जाते हैं। मनुष्य भव सभी योनियों में श्रेष्ठ है। इसे भक्ति के माध्यम से ही उन्नत बनाया जा सकता। धन वैभव सम्पन्नता का होना पुण्य का योग है। पुण्ययोग में भक्ति को करना भविष्य को सुरक्षित सुखमय बनाना हैं।

मुनि विमर्शसागर

नई दिशा प्रदान की

श्रमण मुनि विश्वेशसागर जी महाराज

वर्तमान शासन नायक २४वें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी की चतुर्विध संघ की परम्परा को यथावत् आज भी कायम रखने वाले परम पूज्य जन-मानस की आस्था के केन्द्र मम हृदय विराजमान राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर जी गुरुदेव अवनितल के सर्वोच्च संत हैं। अपने तीर्थंकर भगवंतों की प्रत्येक पद्धति को आत्मसात किया है साथ ही प्राचीन आचार्यों की डूबती पद्धतियों को उद्घटित कर श्रमणसंघों को नयी दिशा प्रदान की है। आपकी छत्रछाया वटवृक्ष की तरह सघन एवं शीतल है तभी तो मोक्षमार्गी अनेकानेक पथिक संसारताप से बचने हेतु आपकी शरण को प्राप्त हुए हैं। आपकी कृपा निर्बल को सबल दीन-दुखी को सुखी रोगी को निरोगी अज्ञानी को ज्ञानी, मूर्ख को विद्वान पुरुष की श्रेणी तक सहज ही पहुँचा देती है।

हम कलिकाल के मनुष्यों ने यद्यपि साक्षात् तीर्थंकर भगवंतों के समवशरण को नहीं देखा किन्तु वर्तमान में आपके चतुर्विध संघ को देख ऐसा प्रतीत होता है मानो क्षात् वर्धमान प्रभु का समवशरण ही इस धरा पर विचर रहा हो। आपके साथ हमें ओडिशा प्रांत क्षेत्र खण्डगिरी,उदयगिरी की वंदना करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। यह निश्चित ही मेरे जीवन में पुण्यानुबंधी पुण्य का फल है आपके श्री चरणों में ४०वें क्षुल्लक दीक्षा दिवस की शुभकामनाओं के साथ कोटिश नमोस्तु।

महान संत

श्रमणी आर्यिका विशिष्टश्री माताजी

ये ऐसे महान संत हैं जिन्होंने कई ग्रंथों का लेखन किया हैं। पूज्य गुरुदेव के द्वारा लिखा गया ग्रंथ सर्वोदया संस्कृत टीका जब बोम्बे यूनिवसिटी में पहुँची तो उसका अध्ययन कर वहाँ की बाइस चांसलर डॉ. मेडम मेहरयूश इतनी प्रसन्न हुई कि उन्होंने अपनी टीम के साथ इंन्दौर आकर गुरुवर को डाक्ट्रेट की डिग्री से विभूषित किया। जब गुरुदेव श्रवणबेलगोला की धरा पर पहुंचे तो वहाँ के अधिष्ठाता स्वस्ति श्री चारुकीर्ति भट्टारक जी ने जब गुरुदेव के विशाल संघ के दर्शन किये तो उन्होंने कहा आज तो मुझे ऐसा लग रहा है मानों यहाँ पुन: आचार्य भद्रबाहु स्वामी के विशाल संघ का आगमन हो गया हो। उन्होंने यह भी कहा- कि आचार्य विरागसागर जी महाराज का संघ तो चलती-फिरती यूनिवर्सिटी है। बन्धुओ! जब पूज्य गुरुदेव भारत की राजधानी दिल्ली पहुँचे तो वहाँ की प्रथम प्रवचन सभा लालकिले पर हुई। जिसमें वहाँ के मुख्यमंत्री अरविंद जी केजरीवाल इतने प्रसन्न हुए कि उन्होंने संपूर्ण दिल्ली प्रवास तक पूज्य गुरुवर को राज्यकीय अतिथि का दर्जा दे अपने आपको धन्य समझा था। पूज्य गुरुदेव के प्रवचन कई कॉलेज, चौराहे न्यायालय एवं जेलों में भी हुए हैं। आचार्य भगवन के द्वारा अहिंसा, व्यसनमुक्ति, शाकाहार एवं बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, स्वच्छता अभियान चलाया जाता है जिससे अभी तक २७ लाख जन समूह प्रभावित एवं संकल्पबद्ध हो चुका है।

ये ऐसे महान संत हैं जो इनका आशीर्वाद प्राप्त कर लेता है उसके जीवन में कभी कोई विपत्ति नहीं आती है कष्ट स्वयं ही उनका किनारा कर जाते हैं। ऐसे पूज्य गुरुदेव के चरणों में त्रयभक्ति पूर्वक नमोस्तु करती हूँ।

प.पू. आचार्य रत्न, चर्या चूड़ामणी राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज ससंघ के परिचय फोटो एवं अन्य जानकारी हेतु-

1. **www.ganacharyaviragsagar.com**
2. **Facebook : viragvani**
3. **Email : viragsagarji@gmail.com**
4. **youtube : Ganacharya Viragsagarji**
5. **सं. सूत्र what'sapp no 9009462216**

गुणों के आगर-आर्जव धर्म

संकलन- आ. विदूषीश्री माता जी

यमुना के किनारे श्री कृष्ण जी वंशी की तान छेड़ रहे थे। उनकी वंशी की मधुर तान को सुनकर मृग और मणिधर मग्र हो रहे थे। उसी समय गोपियाँ पानी भरने के लिये यमुना नदी पर गयी थी। गोपियों ने जैसे ही कृष्ण के अधरों में लगी वंशी को देखा, गोपियाँ ईर्ष्या से जल भुन गई। कि अरे! ये कैसी वंशी ? श्री कृष्ण कन्हैया का इतना प्यार पा रही है। हम लोग इतनी सजीधजी फिर भी श्री कृष्ण से इतनी दूर और यह काली कलूटी, छेद पर छेद फिर भी इतना स्नेह पा रही हैं। श्री कृष्ण जी कहते हैं कि बात ज्यादा कुछ नहीं है ये जो बांसुरी है भले ही रंग में काली-कलूटी है, दुबली-पतली सी, छेद पर छेद हैं, किंतु इसमें तीन गुण मुझे बड़े प्यारे मिले हैं- पहला गुण तोइस वंशी का यह है कि कभी भी यह बिना बुलाये नहीं बोलती। जो बिना बुलाये बोलता है वह कभी इज्जत प्रतिष्ठा नहीं पा पाता। जब मैं बुलाने की कोशिश करता हूँ, या जब मेरा बुलाने का मन होता है तभी ये वंशी स्वर देती है, तभी ये वंशी बोलती है। दूसरा गुण यह है कि जब भी यह बोलती है मीठा, मधुर ही बोलती है मधुर भाषी होना इसका श्रेष्ठ गुण है। तीसरा गुण यह है कि वंशी के अंदर कोई भी ग्रन्थि, कोई भी गाँठ नहीं है आर-पार पोली है। जैसा बाहर साफ-सुथरा सरल जीवन है। अंदर का भी ऐसा ही साफ-सुथरा सरल जीवन है। जिसका जीवन गाँठ, ग्रंथि से रहित एकदम सरल होता है उसके जीवन में आर्जव धर्म आता है और फिर वहीं संसार में पूज्यता, पावनता को प्राप्त करता है। सभी के स्नेह और प्रेम का पात्र बनता है।

कहानी

रात्रि में भोजन करने से हानि

सं. आ. विमोहश्री

अकबर बादशाह कौम से मुस्लमान थे किन्तु हिन्दुओं के साथ भी उनका अच्छा सम्पर्क था। उनका प्रधानमंत्री बीरबल भी ब्राह्मण था। उनके पास और भी भले-भले हिन्दू रहते थे। एक दिन, दिन में खाने वाले किसी विचारशील हिन्दू आदमी ने उनसे कहा कि हुजूर! आप रात्रि में खाना खाते है यह ठीक नहीं कर रहे है। बादशाह बोले कि क्यों- क्या हानि है, जवाव मिला कि हानि तो बहुत हैं। सबसे पहली हानि तो यही है कि रात्रि में अंधकार की वजह से भोजन में क्या है और नहीं है। यही ठीक नहीं पता चला करता है। तब बादशाह बोले कि दीपक के उजाले में अच्छी तरह से देखकर खाया जाये तो फिर क्या बात रह जाती है ? जवाब मिला कि बात तो और भी है परंतु अभी आप इतना ही करें कि दीपक के प्रकाश में अच्छी तरह से देखकर ही खाया करें। अब बादशाह रोज ऐसा ही करने लगे। एक रोज सजा हुआ थाल बादशाह के आगे टेबिल पर लाकर रखा गया तो बादशाह बोले कि दीपक लाओ तब देखकर खाया जायेगा। दीपक आया और देखा गया तो भोजन में घी और मीठा की वजह से जहरीली कीड़ियों का जाल लगा हुआ है। बादशाह को विचार आया कि अब नियम किया जाए कि आगे के लिए रात्रि को न खाकर दिन में ही खाया जाये यही बात अच्छी है।

हाँ! यह कहा जा सकता है कि वह समय कुछ और था। आज तो स्थान-स्थान पर बिजली की रोशनी होती है जिसमें अच्छी तरह देखकर खा लिया जा सकता है, परंतु ऐसा कहने वालों को इतना भी तो सोचना चाहिए कि बिजली के प्रकाश में भी पंतगे, मच्छर वगैरह आकर भोजन में पड़ेंगे। जिनमें कितने ही मच्छर ऐसे भी होते है जिनके कि खाने में आ जाने से अनेक प्रकार के भयंकर रोग हो जाते है।

अबला-पतंग

संकलन- श्रमणी आर्यिका वियोजनाश्री माता जी

एक थी सुन्दर पतंग। एक लाड़ले पुत्र ने उसे देखा और उचित मूल्य देकर अपनी हवेल में आनन्द से ले आया। धनी पुत्र ने उस सुन्दर पतंग का बड़े सुरुचिपूर्ण ढंग से अपनी रंगशाला में रखा, और उसके लिए रंगीन रेशमी ड़ोर का भी प्रबंध किया। उस सुंदर पतंग और आकर्षक रेशमी डोर की लाडले के संगी साथियों ने बहुत प्रशंसा की। पतंग भी यह सब देखकर अपने भाग्य को सराहती थी।

वह लाड़ला अपनी सुन्दर पतंग को हवेली की छत पर ले गया और वहाँ उसने उड़ाया। पतंग भी ऊपर उठी व लाड़ले की डोरी के अनुकूल यहाँ वहाँ ऊपर नीचे घूमी और उड़ी। उसने ऊपर से अपनी हवेली, मोहल्ला, गली, कूचे, बाजार व राजमार्ग देखे। देखकर उसे बहुत आनन्द आया।

एक दिन रंग में टंगी पतंग ने सोचा कि मैंने नगर का एक अंश ही देखा है और उसे बार-बार देखकर अब ऊब गई हूँ। मैंने वन, शैल, नदियां, सरोवर, झील आदि के नाम सुने है पर देखा नहीं है। मेरा मन तो इन चीजों को देखने के लिए मचल रहा है पर मेरी बेबसी है। मैं परतंत्र हूँ। मैं डोर से बंधे लाड़ले की कठपुतली हूँ। मुझे जिस और मेरा मालिक चाहता है उस और मुझे जाना पड़ता है। न मैं ऊँची उड़ सकती हूँ और न अपनी चाह भरी दिशा में जा सकती हूँ। मैं मात्र बंधी हूँ, परतंत्र हूँ। दूसरे के इशारे पर मुझे नाचना पड़ता है। गुलामी में जीना भी कोई जीना है। वह अभिशाप है।

वह उदासमुखी हो एक दिन उड रही थी तो उनकी सखी बायर ने उसकी पीठ थपथपाकर पूछा कि वह आज क्यों उदास व अनमनी हैं। पतंग ने जीवन की कथा सुनाई और अपने हृदय में संचित साधों का वर्णन किया। फिर वेदना भरे शब्दों में कहा कि मुझे परतंत्र पतंग के तंग जीवन का रंग तो वंद रंग ही रहता है, पर स्वतन्त्रता के रंग में अपने अंग-अंग को सरोबार करने की साधना अपने हृदय में संग-संग लिये जी रही हूँ। आशंका है इस अधूरी साधना को लिये उसकी अंतिम बेला न आ धमके।

सखी के दु:खी हृदय की बात को सुनकर बयार ने भी उसे उकसाया बोली मेरा जीवन स्वतंत्र है। मैं जहाँ चाहूँ जाऊँ, कोई रोकटोक नहीं, कोई बंधन नहीं। पराधीन जीवन भी कोई जीवन है ? तुझे स्वतंत्र होने का एक उपाय मुझे सुझा है, वह उपाय है कि जब तेरा स्वामी तुझे ऊपर उड़ायें उस समय मैं जोर से बहकर तुझे दूसरी पतंग से उलझा दूंगी फिर तेरा बंधन मेरे प्रवाह से टूट जायेगे। तू मुक्त हो जायेगी। फिर हम दोनों खूब दूर-दूर तक खूब ऊँचे उड़ेंगे। योजना सफल हुई। पतंग स्वतंत्र हो बायर के साथ उड़ी। पतंग भी हरित वन, सुन्दर शैल, उमड़ती नदियाँ और स्वच्छ सरोवर को देखकर आनन्द विभोर हुई। अपनी बायर सखी को निहारने लगी। नव स्वतंत्र जीवन को पाकर वह आनन्द से नाचने लगी और अपने जीवन को धन्य मानने लगी।

इतने में उसे एक बादल का टुकड़ा उसकी और आता दिखाई दिया। वह बयार से बोली- 'मित्र इस दुष्ट से बचाओ' बयार ने कहा कि वह मेरा घनिष्ट मित्र है। वह मुझे शीतलता देता है। हम दोनों अठखेलियाँ करते-करते साथ-साथ धूमा करते हैं। मैं स्वयं उसके पास जा रही हूँ।

वह बादल का टुकड़ा नजदीक आया। कुछ बूदों से ही पतंग घबरा गई। वह उड़ना भूल गई और नीचे जाने लगी। उसने सहायता के लिये पुकार की। पर बायर तो बादल की हमजोली बन गई थी। पतंग नि:सहाय हो नीचे गिरने लगी और अंत में एक कीचड़ भरे स्थान में गिरकर उसके स्वतंत्र जीवन का अंत हुआ। मरने से पहले उसने कहा- जो अपने मालिक के प्रेम डोर में बंधी रहती है वह सौभाग्यवती होती है जो इस डोर को तोडकर स्वतंत्र या उच्छृंखल होती है उसकी दशा मेरी तरह दुर्भाग्यपूर्ण होती है और मृत्यु दु:खद होती है।

यही तो पूज्य गुरुदेव कहते हैं कि जो शिष्य गुरु के अनुशासन को बंधन मान उसके पालने में अनुत्साही होता है उसे छोड़ उच्छृंखल होना चाहता है उसकी दशा भी बिना डोर की पतंग की तरह होती है और जो गुरुकुल के नियम पद्धति अनुशासन का खुशी से पालन करते हैं वे सदैव आकाश की सी ऊंचाईयों पर पहुँच कर मोक्ष प्राप्त करते हैं। अत: सदैव गुरुभक्ति की डोर से बंधे रहें।

गांधी जी का रात्रि भोजन त्याग

संकलन-श्रमणी आर्यिका विसंयोजनाश्री माता जी

एक बार मोहनदास करमचन्द गांधी तीर्थयात्रा के भाव से हरिद्वार गये। वे वहाँ रात्रि में १० बजे पहुँचे, पहुँचते ही उन्होंने देखा कि वैष्णव साधु संत अभी रात्रि में भोजन कर रहे हैं। उस दृश्य को देखकर गांधी जी सोचने लगे, रात्रि भोजन करना स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्णित है और धार्मिक दृष्टि से महान पाप है फिर इस पावन तीर्थ पर यदि साधु संत रात्रि भोजन करते है, तो इससे बड़ा पाप ओर क्या हो सकता है ? उस दृश्य को देखकर वे अत्यंत दु:खी होकर वहाँ से तुरन्त लौट गये और उन्होंने सदा के लिए रात्रि भोजन का त्याग कर दिया।

गांधी जी अपनी जीवन चर्या के संबंध में लिखते हैं कि मेरा जीवन व्रतों पर रचा गया है। एक बार कलकत्ता में मेरे निमित्त यजमानों को बहुत अधिक अनावश्यक परिश्रम करना पड़ा क्योंकि उन्होंने भोजन में अनेक तरह के व्यंजन बनाकर परोस दिये थे। उसे देख मैंने वस्तुओं की संख्या निर्धारित कर ली क्योंकि मैंने सोचा यदि मैं भोजन की मर्यादा नहीं लूंगा तो यजमानों के लिए बहुत अधिक असुविधाजनक होता रहूँगा। इसलिए २४ घण्टे में ५ चीजों से अधिक न खाने का और रात्रि भोजन न करने का व्रत ले लिया था।

इन व्रतों में भी अपवाद न रखने का निश्चय किया। बीमारी में दवा के रूप में ज्यादा चीजें न लेना, दवा को भोजन की वस्तु में गिनना इन सब बातों का विचार किया और निश्चय किया कि कुल ५ चीजों से अधिक नहीं लूँगा। इन दो व्रतों ने १३ वर्ष तक मेरी अच्छी परीक्षा ली। उन व्रतों ने मेरी जिंदगी में ढ़ाल का काम किया। मैं मानता हूँ कि इन व्रतों ने मेरी आयु बढ़ा दी है। मेरी धारणा है कि इन्हीं की बदौलत मैं बहुत सी बीमारियों से बच गया हूँ।

गांधी जी की इन विचारधाराओं को पढ़ सुनकर लगना चाहिए कि जो राष्ट्रपिता के नाम से जाने गये हैं, जिन्होंने जीवन में अनेक संघर्ष और संकटों का झेला है फिर भी अपने नियमों पर अडिग रहे हैं तो क्या हम वर्तमान में इन नियमों का पालन नहीं कर सकते ? हाँ, कर सकते हैं। लेकिन न करने का कारण स्वयं की कमजोरी है आत्मविश्वास एवं दृढ़ निश्चय की कमी है।

सर्वत्र विजय

आर्यिका विसुव्रताश्री माता जी

एक दिन सरिप्तति समुद्र ने कहा - हे वेतवंती नदी। मैं समस्त नदियों के मधुर व्यवहार में बहुत संतुष्ट हूँ। सभी सरिताएँ उपहार स्वरूप कुछ न कुछ लाकर मुझे देती हैं। तू ऐसी अविनीत कंजूस है कि अभी तक कुछ भी लाकर तूने नहीं दिया। त्रास है तेरी बुद्धि पर। पीड़ित हूं तेरे रक्ष व्यवहार से। मुझे कदापि ऐसा विश्वास नहीं था कि मेरे साथ तेरी ऐसी कठोरता रहेगी।

वेत्रवती नदी ने मुस्कराहट की भाषा में कहा-हे मेरे प्राणनाथ ! कृपया आप बताइये तो सही कि मेरा अपराध क्या हैं ?

समुद्र ने आक्रोश की भाषा में उच्च स्वर में कहा वेत्रवती तेरे तीर पर वेंत के बहुत झाड़ हैं। परन्तु तूने आज तक एक भी बेंत का टुकड़ा लाकर मुझे नहीं दिया। सभी नदियाँ मुझे सम्मान देती है, तू सब वस्तुएँ अपने पास रखती है जबकि सभी वस्तुओं पर मेरा अधिकार है।

सागर की बातें सुनकर वेत्रवती नदी ने कहा- कि हे स्वामिन् ! इसमें मेरा कोई अपराध नहीं है। जब में वेग पूर्वक आती हूँ तब सारे वेंत के झाड़ नीचे झुककर पृथ्वी के साथ लग जाते हैं। जब मेरा प्रवाह कम हो जाता है, तब वे फिर ज्यो के त्यों खड़े हो जाते हैं इससे मैं एक भी बेत तोड़ नहीं पाती अब आप ही बताइए क्या करूँ ?

पारावार ने कहा- हे सरिते ! तेरा कथन अक्षरश: सत्य है। वास्तव में विनय और नम्रता में बहुत बड़ी शक्ति निहित है। जो झुकना जानता है वह कभी पराजित नहीं हो सकता। पानी के प्रबल प्रवाह के सामने बेंत विनया-वतन होकर अपने अस्तिव को सुरक्षित रखने में सफल होती है।

संसार में विनय और नम्रता, शक्तिशाली महान् गुण है। जिसमें यह सद्गुण होता है उसकी सर्वत्र विजय होती है।

प्रणायाम की पूर्व प्रक्रिया

(संघस्थ-आ. संभवसागर जी महाराज)

श्रमणी आर्यिका पुनीत चैतन्यमति

ध्यान के लिए कुछ दिशा निर्देश-

- ध्यान करने से पहले प्राणायाम अवश्य करें, क्योंकि प्राणायाम के द्वारा मन पूर्ण शान्त एवं एकाग्र हो जाता है। शान्त मन के द्वारा ही धारणा और ध्यान हो सकता है।
- प्राणायाम इसलिए करना ताकि आप अपने मूलस्वभाव को जाने मूल धर्म, मूल प्रकृति को जाने कर्म-कर्म फल के प्रति जागरुक रहना। शान और निष्ठा से जीवन में कर्म करते रहना। बार-बार सतर्क रहना। प्राणायाम लय के साथ करें। जीवन में उन्नति का शिखर छूना चाहते हो तो।
- प्राणायाम से वजन कम होता है शरीर ठोस होता है। असाध्य रोग मिटता है।
- जो गुलामी से जी रहे थे वे योग से गुलामी से परे होते हैं।
- सब प्राणायाम ५-५ मिनिट करे ५ मिनिट प्रतिदिन करें।
- प्राणायाम शरीर में सिस्टम से काम करता है सबका अंदर का सिस्टम एक जैसा होता है।
- सिस्टम गड़बड हो तो प्राणायाम करें। न भी हो तो भी प्राणायाम करते रहें।
- प्राणायाम करते समय ग्रीवा-मेरुदण्ड वक्ष कटि को सदा सीधा रखकर बैठे।
- प्राणायाम का अभ्यास धीरे-धीरे बिना किसी उतावली के, धैर्य के साथ, सावधानी से करना चाहिए। बाये से भक्ति, दाये से शक्ति ओज तेज प्राणायाम से पुरूषार्थ की सिद्धि होती है। प्रयाणाम से आंतरिक गुण विकसित होता है। आप में भक्ति शक्ति समर्पण है, प्राणायाम के माध्यम से सोई हुई भक्ति शक्ति समर्पण को जाग्रत करो, श्रद्धा भक्ति से करो, कर्म ही धर्म है, कर्म ही पूजा, आध्यात्मिक जीवन का अभिषेक है। दिन चर्या का हिस्सा बना लो प्राणायाम किये बिना भोजन नहीं करेंगे, कपालभाति प्राणायाम सबका राजा है नियम से रोज आधा घण्टा प्राणायाम करेंगे ही।
- जहां शरीर रोग ग्रस्त है वहाँ सुख शांति एवं आनन्द कहाँ। भले ही धन वैभव ऐश्वर्य इष्ट कुटुम्ब तथा नाम यश सब कुछ प्राप्त हो, फिर भी यदि शरीर स्वस्थ्य नहीं है तो जीवन एक भार बन जाता है। जिनके शरीर एवं मन स्वस्थ्य नहीं, मस्तिष्क में चेतना, देह में स्फूर्ति तथा धमनियों में शक्ति नहीं शरीर में रक्त संचार ठीक से नहीं होता, अंग प्रत्यंग सुदृढ़ नहीं एवं स्नायुओं में बल नहीं, वह मानव शरीर मुर्दा ही कहा जायेगा। मानव जीवन में निरोग देह व स्वस्थ्य मन प्राप्त करने के लिये आयुर्वेद का प्रादुर्भाव हुआ है जो आज विद्यमान है। शरीर के आन्तरिक मलों एवं दोषों को दूर करने तथा अन्त: करण की शुद्धि करके समाधि द्वारा पूर्णानन्द की प्राप्ति हेतु मुनि तथा सिद्ध योगियों ने यौगिक प्रक्रिया का आविष्कार किया है।
- योग प्रक्रियाओं के अन्तर्गत प्राणायाम का एक अति विशिष्ट महत्व दिया है।
- यदि शरीर को स्वस्थ एवं रोग मुक्त करना हो तो या मन को पक्रिया आत्मा को निर्मल करना ।

नोट- अगले अंक में देखे.....

आवश्यक सूचना

आजीवन (ग्यारह वर्षीय) एवं त्रिवर्षीय सदस्यों को सूचित किया जाता है कि आपकी सदस्यता अवधि समाप्त हो गई है या होनेवाली है। अत: सदस्यता नवीनीकरण करा लें जिससे पत्रिका निरन्तर भेजी जा सके।

प्रबन्ध सम्पादक : विरागवाणी

शरण दाता

ऐलक गौसलसागर जी महाराज

यद्यपि बड़ों के सामने कुछ बोलने में मेरी बहुत बड़ी धृष्टता ही मानी जायेगी। लेकिन यह भी सत्य है कि उपकारी के उपकार को कभी नहीं भूलना चाहिए। परम पूज्य राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर जी महाराज मेरे लिये शरण दाता है। आपके दर्शन करने का लाभ मुझे समय-समय पर प्राप्त हुआ। जिसमें सर्व प्रथम पथरिया फिर श्रवणबेलगोला, कनकगिरी तथा अब खण्डगिरी में मुझे आपके समवशरण स्वरूप चतुर्विध संघ के दर्शन प्राप्त हुए हैं। आप सम्यक्त्व के आठ गुणों से परिपूर्ण है उसमें भी आपका वात्सल्यगुण जनप्रत्यक्ष एवं अनुशरणीय है। मैं उस समय की बात बताना चाहता हूँ जब गोम्मटेश्वर भगवान बाहुवली के मस्तकाभिषेक में आचार्य भगवान अपने विशाल संघ के साथ सम्मलित थे उस वक्त वहाँ अपार साधुसमूह था जब मैं वहाँ पहुँचा तो मुझे वहाँ कहीं भी ठहरने की जगह नहीं मिली। मैंने अपनी परेशानी जब आचार्य श्री विरागसागर जी से निवेदित की तो इन्होंने मुझे शरण प्रदान करते हुए अपने साधुओं के साथ रहने की आज्ञा प्रदान की जिससे मैं वहाँ ठहरकर भगवान का अभिषेक एवं आपकी वाणी का रसपान कर सका आपके संघ से बहुत कुछ अच्छी बातें सीख सका। आप जब तीर्थराज सम्मेदशिखर जी में चातुर्मासरत थे उस वक्त मैंने प्रदीप जी से कहा था कि आचार्य श्री को खण्डगिरी उदयगिरी की वंदना जरूर कराना। मेरी भावना और प्रदीप जी का पुरुषार्थ आज रंग ला चुका है जिससे मुझे बड़ी प्रसन्नता है। कलिंगराजा की राजधानी कलिंगदेश में आपका प्रवेश निश्चित ही जन-जन को दिगम्बर संतों की साधना से अवगत करा चुका है। आपका विशाल संघ यहाँ वैसा ही प्रतीत हो रहा है मानों पुनः इस खण्डगिरी में भगवान महावीर स्वामी का समवशरण आ गया हो। मैं ऐलक गौसलसागर आपके चरणों में एवं संघस्थ समस्त निर्ग्रन्थों के चरणों में बारम्बार नमस्कार करता हूँ।

सुवाक्य

ब्र. राजकुमार जैन, मधुवन

- सबसे बड़ी जरूरत ज्ञान- ज्ञान से बढ़कर कोई धन नहीं होता। सारे धन ज्ञान के द्वार से ही आते हैं। सूरज केवल दिन में उजाला देता है और चन्द्रमा सिर्फ रात में, पर ज्ञान दिन-रात उजाला देता है। आप किसी उम्र के क्यों न हो, प्रतिदिन शास्त्र अच्छी पुस्तकों को पढ़ने की आदत डाले। स्वयं पढ़े व औरों को पढ़ायें।
- जीवन में विपरीतताओं का आना पार्ट ऑफ लाइफ है पर विपरीतताओं का धैर्य और शान्ति से सामना करना आर्ट ऑफ लाइफ है।
- ऐसा नहीं है कि जिन्दगी बहुत छोटी है, वास्तव में हम जीना ही देर से शुरु करते हैं।
- हम हमारे दोनों एक जैसे है, जो रोज भूल जाते है वे हमारी गल्तियों को और हम उनकी महरबानियों को।
- काश ऐसी बारिश आए, जिसमें अहम डूब जाए, मनभेद के किले ढह जाएँ, घमण्ड चूर-चूर हो जाए, क्रोध के पहाड़ पिघल जाए, नफरत हमेशा के लिए दफन हो जाए और हम सब मैं से हम हो जाएं।
- इन्सान के अन्दर जो समा जाए वो स्वाभिमान है और इन्सान के बाहर जो छलक जायें वो अभिमान है।
- देने के लिए दान, लेने के लिए मान और त्यागने के लिए अभिमान सर्वश्रेष्ठ है।

संघ में समता सरलता के साक्षात् दर्शन

बा.ब्र. वंदना दीदी (संघस्थ-आ. स्याद्वादसागर जी महाराज)

स्वाति नक्षत्र में शीप के अंदर गिरने वाली पानी की बूंद नहीं रहती मोती बन जाती है वैसे ही एक सस्कारवान, पुण्यवान जननी के गर्भ में आने वाला आत्म कोई साधारण मानव नहीं एक महामानव, भगवत् शक्ति से सम्पन्न जगत कल्याणकारी हो जाता है।

परमाराध्य, सूर्यवत् तेजस्वी, शाशिवत. शीतल, यवनवत् निसंगपरम पूज्य गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर जी महाराज इस धरातल पर भगवत् रूप हैं जो न केवल स्वयं का अपितु जन-जन का कल्याण कर रहे हैं। मैंने समय-समय पर आपके दर्शन का सौभाग्य प्राप्त किया। मेरी जन्मभूमि लौहारिया में भी आपने चातुर्मास कर मुझ पर परमोपकार किया है। आपके शिखर जी चातुर्मास में मैंने चार माह तक अनवरत चौका लगाया जिसमें संघ के सभी माता जी, महाराजों की आंतरिक समता, सरलता के साक्षात् दर्शन किये हैं। मेरी माँ सुशीला दीदी ने आपके वात्सल्य, समता के बारे में बहुत कुछ सुनाया था लेकिन जब आपकों निकट से देखा तो वे सारी बाते बौनी लगने लगी क्योंकि आपका हर एक नजरिया वचनागोचरता को लिय हुए है। आप सदैव मुझ पर एवं मेरी माँ पर अपनी कृपा दृष्टि बनाये रखें इसी भावना से आपके चरणों में पुनः नमोस्तु-३।

घनघोर उपसर्गों में आश्चर्यकारी समताधारी

ब्रह्मचारिणी सुशीला (संघस्थ-आ. स्याद्वादसागर जी महाराज)

धन-दौलत, हीरा, पन्ना, जवाहरात से परे गुण सम्पत्ति ही मानव जीवन की सर्वोच्च सम्पत्ति है। गुणवान मानव जहाँ भी जाता है वहीं सम्मान को प्राप्त होता है। परम पूज्य विश्वहितैशी गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज एक ऐसे गुण सम्पन्न प्रतिभापुञ्ज है जो हर जगह भगवान की तरह पूजा को प्राप्त होते हैं। मैं आपको आज से नहीं मुनि विराग सागर जी की अवस्था से जानती हूँ। दीक्षा होते ही आपकी कार्य दक्षता ने पूर्व दीक्षित आचार्य भरतसागर जी की समानता, प्रदान की थी। समय-समय पर जब आपका मिलन अन्यसंघों से हुआ तो आ. धर्मसागर जी, आ. निर्मलसागर जी, आदि संघों में भी आप एक सम्माननीय व्यक्तित्व बनकर रहे। सन् २००३ में जब भिलाई सेक्टर-६ में आपका एवं दुर्ग में आचार्य स्याद्वादसागर जी का चातुर्मास हुआ था उस समय मैं आ. स्याद्वाद सागर जी की संघ संचालिका थी। अतः उस वक्त भी साधु संघों के प्रति आपका वात्सल्य एवं घनघोर उपसर्गों में आश्चर्यकारी समता का प्रत्यक्ष दर्शन किया था। मधुवन के इस चातुर्मास में अस्वस्थ होने के कारण मैं आपकी सेवा नहीं कर सकी लेकिन मन में एक भाव था कि आपके चरणों में दीक्षा ले समाधि सल्लेखना करूँगी किन्तु आयु को किसने देखा है चातुर्मास पूर्ण हो गया और विहार का समय आ गया अब मैं भगवान से एक ही प्रार्थना करती हूँ कि आप शीघ्र ही पुनः सम्मेद शिखर जी पधारें और मेरी भावना पूर्ण करें। आपके चरणों में बारम्बार नमोस्तु करती हूँ।

विमल के विराग

शिखर चंद जी पहाड़िया (संघपति समा. आ. विमलसागर जी महाराज)

परम पूज्य वात्सल्य रत्नाकर आचार्य विमलसागर जी महाराज की समाधि के बाद मुझे बहुत ही अकेलापन महशूश होने लगा था। दुनियाँ में इतने साधु-संत हैं किन्तु फिर भी मुझे लगता था कि मेरा कोई नहीं है, क्योंकि आचार्य विमलसागर जी जैसा वात्सल्य अन्य किन्हीं में देखने नहीं मिला लेकिन जब मैंने गणाचार्य विरागसागर जी महाराज के दर्शन किये इन्हें निकट से देखा तो मेरे मन में एक अपूर्व ही शांति की लहर उठी जो कह रही थी कि निश्चित ही ये विमल के विराग हैं। जिस प्रकार एक पिता विजनेश के संपूर्ण कारोबार को अपने योग्य बेटे के हाथ में सौप देता है वैसे ही गुरुदेव विमलसागर जी महाराज दया, करुणा, प्रेम, वात्सल्य आदि संपूर्ण गुणां को गणाचार्य विरागसागर जी महाराज को सौप गये हैं। इनके चरणों में आकर आज मेरा जीवन धन्य हो गया है क्योंकि मुझे विमल के विराग मिल गये हैं।

आचार्यत्व की क्षमता गरिमा महिमा पर नाज है

आर.के. जैन, मुम्बई

आज हमारे बीच वात्सल्यरत्नाकर आचार्य विमलसागर जी महाराज नहीं हैं लेकिन उन्होंने हमें एक ऐसा कोहिनूर प्रदान किया है जिनमें आज भी हम आचार्यी विमलसागर जी के प्रतिरूप को देख रहे हैं। गुरुदेव विमलसागर जी के परम प्रभावक शिष्य गुरुदेव विरागसागर जी महाराज में प्रगाढ़ गुरुभक्ति भरी हुई है। मैंने पन्ना में गुरु-शिष्य मिलन को देखा जो आज भी मेरी स्मृति पटल में यथावत् समाया हुआ है। जिसमें मुनि विरागसागर जी ने गुरुदेव की आगवानी में संपूर्ण पन्ना को दुल्हन सा बना दिया था। जगह-जगह वेनर, अनेकों स्वागत द्वार बनाये गये थे। मंगल कलश सिर पर लिये महिलायें तो कहीं पंचरंगी ध्वजाओं से अम्बर इन्द्रधनुष जैसा प्रतीत हो रहा था। जय-जयकार की ध्वनि तो संपूर्ण पन्ना शहर को गुंजायमान कर रही थी। ऐसा अद्‌भुत गुरु-शिष्य मिलन आज तक न कभी किसका हुआ है और न आगे कभी हो पायेगा।

दूसरी बात आचार्य के समस्त गुणों से युक्त होने पर एवं जिन्हें लगभग (१०) दस आचार्यों ने आचार्य पद देना चाहा फिर भी जो स्वीकार नहीं कर रहे थे किन्तु लोग जिन्हें आचार्य कहने लगे थे ऐसे परम वीतरागी, यतिश्वर विरागसागर जी महाराज को उसी मंच से मैंने भी आचार्य विरागसागर जी कहकर संबोधित कर दिय। सोचिए जहाँ आज दुनियाँ मे आचार्य पद की होड़ लग रही है जैसे भी, जिससे भी बस पद मिल जाये, वहीं इन निस्पही योगी ने तत्क्षण माइक से निषेध कर दिया कि मैंने अपने गुरु से अभी आचार्य पद नहीं लिया है इसलिए अभी मुझे आचार्य न कहें। यह बात सुन संपूर्ण संघ एवं समाज में हलचल मच गई क्योंकि सभी भक्तगण अपनी श्रद्धा के देवता को आचार्य ही मानते थे। अत: उसी दिन परम पूज्य आचार्य विमलसागर जी ने कहा- बेटा! अभी यहाँ भरतसागर जी पूर्व दीक्षित तथा उपाध्याय है इसलिए मैं सम्मेदशिखर जी पहुंचकर विरागसागर जी को आचार्य पद प्रदान करूँगा, और वैसा ही किया। आज समूचे विश्व को आचार्य विरागसागर जी महाराज की आचारत्व की क्षमता, गरिमा, महिमा पर नाज है। मैं भी आपके चरणों में समाधि सल्लेखना पूर्वक मरण करूँ ऐसी भावना भांता हूँ।

मैं पूर्व से ही प्रभावित हूँ

ज्ञानचंद झाझरी मद्रास (तमिलनाडू)

संसार का प्रत्येक प्राणी अच्छा-बुरा, अपना-पराया समझने की क्षमता रखता है, खाशकर मनुष्य का मन इसका विशेष निर्णय करता है। एक वह मन है जो दीवनगी से किसी को अपना बनाता है तो दूसरा उससे परे भक्तिभावातिरेक में किसी को अपना बना लेता है अथवा स्वयं उनका हो जाता है। ठीक इसी प्रकार मेरा मन, और मात्र मन ही नहीं तीनों योग परम पूज्य सन्मार्ग दिवाकर आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज की भक्ति में इस तरह डूब गये हैं कि उन रत्नाकर के गुणरूपी रत्नों की चमक में उसे अन्य कोई दिखता ही नहीं हैं। लेकिन यह भी सत्य है कि पिता का खजाना विरासत में पुत्र को मिलता ही है और फिर क्षमतावान पुत्र जिस पर पिता की सदैव प्रसन्न दृष्टि बनी रहती हो उसकी तो बात ही क्या उसे तो बिन मांगे ही सब कुछ प्राप्त हो जाता है। वैसे ही गुरुदेव विमलसागर जी के गुण उनके शिष्य विरागसागर जी में समागये हैं। यद्यपि मैं आपसे मुनि दीक्षा के बाद से ही परिचित हूँ उस वक्त से ही आपके सर्वव्यापी धार्मिक उपदेश आगमिक चर्या एवं असीम गुरुभक्ति से मैं प्रभावित हूँ और आज भी गुरु के प्रति आपकी वैसी ही श्रद्धा-भक्ति को देख तथा आचार्य विमलसागर जी जैसे वात्सल्यादि गुणों को लख मुझे असीम प्रसन्नता होती है एवं शांति का अनुभव होता है। गुरुदेव विमलसागर जी एवं भरतसागर जी के बाद मैंने आपमें ही विमलकिरण के दर्शन किये हैं अब मैं चाहूता हूँ आपकी सेवा भक्ति मुझे प्राप्त होती रहे।

प्रवचन कला

आत्म चितंवन शील साधकों में प्रवचन के समय, विषय प्रतिपादन की श्रेष्ठ कला होती है, क्योंकि चिंतवन से निबद्ध विषय क्रमानुसार होता है और फिर वह कभी भी सहजता से प्रवचन कर सकता है। उसका विषय ठोस होता है। इसके विपरीत व्यक्ति, चिंतवन न होने से बंदर की तरह एक डाल से दूसरी डाल और दूसरी से तीसरी डाल पर कूदने की तरह विषय से विषयान्तरित बात को कहकर समय पूर्ति करते हैं। प्रवचन में प्रस्तावना से उपसंहार तक निर्धारित विषय को सुई धागे की तरह (एक-एक बात को) जोडते जायें, ऐसा नहीं कि प्रवचन को पान की तरह स्वादिष्ट रोचक बनाने के लिये उसमें सुपारी लोंग आदि की तरह मसाला डालते गये, विषय बोलते गये अलग अलग। इससे सही विषय का प्रति पादन नहीं हो पाता और सामने वाले को भी समझ में नहीं आता कि आप कहना क्या चाहते हैं। फिर लोग भी एक कान से सुनते है और दूसरे कान से निकाल देते है। जबकि होना चाहिये कि वे कान से सुनकर आचरण में ला सकें।

अत: प्रवचन दे, तो आत्मचिन्तन से भीग जायें।

सामायोचित कहानियाँ से साभार

अहं व्यर्थ

आ. श्री १०८ विशुद्धसागर जी

अरे मानव!
व्यर्थ में
विवेकहीन बनकर
क्यों? बाँट रहे
संघों और समाज को।
क्या?
अपने अहं की
पुष्टी के लिए
अथवा अपने स्वार्थ
सिद्धि के लिये?
व्यर्थ की कर्म बंध
कर रहा,
भव सागर में गोता
लगा रहा।

गणाचार्य हमारे विराग सिन्धु

रच. कांति कुमार जैन 'करुण' खिमलासा

गणाचार्य हमारे विराग सिन्धु, जगती को स्वयं जगाते है।
करुणाकर मेरे गुरुवर है, संयम का भाव बनाते है।।
करते है धर्म ध्यान हृदय से,
औ' ज्ञान साधना करते है।
आचार्य विमलसागर गुरु से,
दीक्षा ही उन से वह लेते है।।
हे धन्य धरा इस जगती की, जो यहा पुरुष बन जाते है।
गणाचार्य हमारे विराग सिन्धु, जगती को स्वयं जगाते है।।
हो गयी पथरिया धन्य अरे!
जो जन्म गुरु ने पाया है।
हो गये धन्य वह मात पिता,
जीवन को सफल बनाया है।।
औ' धर्म ध्वजा फहराया है, औ' महिमा प्रभु की गाते है।
गणाचार्य हमारे विराग सिन्धु, जगती को स्वयं जगाते है।।
आचार्य बनाये कितने औ',
कितने भी बनाये मुनिवर औ'।
मातायें कितनी ऐलक भी,
क्षुल्लक औ' कितनी ब्रह्मचारिणी।।
समता का जीवन अपनाया, सुख जीवन में वह पाते है।
गणाचार्य हमारे विराग सिन्धु, जगती को स्वयं जगाते है।।
हे गुरुवर मेरे नायक हो,
इतनी अब कृपा करो मुझपर।
कल्याण हो सके जीवन का,
खुश मन है तुमको ही पाकर।।
लिख रहा 'करुण'गीत गुरु, निश दिन हम महिमा गाते है।
गणाचार्य हमारे विराग सिन्धु, जगती को स्वयं जगाते है।।

आशीर्वाद लेने आया हूँ

आज मुझे अपार हर्ष हो रहा है कि मुझे महान त्यागी, तपस्वी, ऋद्धि-सिद्धियों के स्वामी दिगम्बर जैन श्रमणाचार्य महाराज के दर्शन प्राप्त हुए। मैं यहाँ का सांसद हूँ एक बार खण्डगिरी को किसी ने हतयाना चाहा जिसका मैंने शक्तिभर प्रतिकार किया था। मैने जब सुना कि खण्डगिरी में दिगम्बर जैन संत पधारे है तब से दर्शन की अभिलाषा थी क्योंकि जैनधर्म संपूर्ण विश्व का धर्म है। जैनसंत प्राणीमात्र के हितैषी संत हैं। मेरी भावना थी दिगम्बर संत का आशीर्वाद प्राप्त करना है आज मैं यहाँ मात्र आशीर्वाद लेने आया हूँ क्योंकि इनके आशीर्वाद से प्राणी का कल्याण हो जाता है, जीवन सुख शांतिमय हो जाता है। मैं इन सभी दिगम्बर संतों को सच्चे मन से बार-बार नमन करता हूँ।

श्री प्रशन्न कुमार पासानी, सांसद

विष्णु के अवतार

हमारे ओडिशा प्रांत में दिगम्बर जैन संतों का इतना विशाल संघ आया है यह सुनकर मुणे अपार हर्ष हुआ। हम ओडिशा बासियों को दिगम्बर जैन संतों के दर्शन बहुत कम प्राप्त होते हैं क्योंकि प्राय: संतजन यहाँ बहुत कम मात्रा में आते हैं। आज विश्व को आश्चर्य में डालने वाले त्याग तपस्या की प्रतिमूर्ति के दर्शन कर मेरा ही नहीं, संपूर्ण ओडिशा बासियों का जीवन धन्य हो गया। आप साक्षात् भगवान विष्णु के अवतार हैं जन-जन का कल्याण करने वाले आपके चरणों में चारोधाम की रज लगी होने से आप स्वयं में तीर्थ स्वरूप हैं। आपको हम सभी नमन, वंदन, नमस्कार करते हैं।

विधायक माननीय श्री प्रियदर्शनी मिश्रा, भुवनेश्वर

चर्या की सुगन्धि

मन में न जाने कब से भावना थी कि खण्डगिरी उदयगिरी सिद्धक्षेत्र की पावन धरा पर सिद्धों की आराधना करने का अवसर मिले, लेकिन यह भी सत्य है कि मैंने ये तो स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि यह अवसर मुझे ममाराध्य, चलते-फिरते देवता विश्व के ज्येष्ठ-श्रेष्ठ संत, युगप्रमुख श्रमणाचार्य परम पूज्य राष्ट्रसंत गणाचार्य गुरुवर विरागसागर जी महाराज के विशाल ससंघ सान्निध्य में प्राप्त होगा। पूज्य गणाचार्य भगवन् का ओडिशा आगमन विशाल सागर का गागर में समा जाने के समान है। आपकी आगमिक चर्या की सुगंधि ने आज समूचे विश्व को सुभाषित कर दिया है विद्वत मनीषी हो या रत्नत्रय के साधक सभी आपके सद्गुण कीर्तन में सरावोर हैं। आपके चरण सान्निध्य में मुझे सिद्धचक्र विधान कराने का जो पुण्यावसर प्राप्त हुआ है यह निश्चित ही मेरे जीवन का स्वर्णिम इतिहास बनेगा। आपकी कृपा हम बालकों पर ऐसी हो बरसती रहे इसी भावना के साथ आपके चरणों में नमोस्तु करता हूँ।

डॉ. पं. अभिषेक जैन, दमोह

चार स्तंभ की तरह चार टीकायें

हमारा बड़ा सौभाग्य है कि मुझे परम पूज्य राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर जी महाराज की जन्म नगरी पथरिया के समवर्ती नगर दमोह में जन्म लेने का अवसर प्राप्त हुआ है। पूज्य गुरुदेव चारों अनुयोग के प्रकाण्ड विद्वान हैं इनकी लेखनी ने हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत भाषाओं में प्रौढ़ता प्राप्त की है। पूज्य श्री के द्वारा लिखी गई चार संस्कृत टीकायें हम विद्वतवर्ग एवं श्रमण संघों के लिये सिद्धान्त रूपी महल की नीव के स्तंभ स्वरूप प्रतीत हो रही हैं। साथ ही उनकी सुबोध सरल भाषा गिलास में भरे पानी की तरह सरलता से पाठकों के गले उतर जाती है। आचार्यश्री को डॉक्ट्रेट की डिग्री तो प्राप्त हो चुकी है अब और अब डीलेट की डिग्री. भी शीघ्र ही आपको प्राप्त होगी ऐसा मेरा विश्वास है। आपके सान्निध्य में रहकर मुझे विधान फराने एवं बहुत कुछ नयी-नयी बातें सीखने का अवसर प्राप्त हुआ। इसे मैं अपना नसीब ही समझता हूँ। आपकी दृष्टि मुझ पर बनी रहे एवं आपके चरणों की छाँव प्राप्त होती रहे ऐसी भावना से मैं आपके चरणों में नमोस्तु करता हूँ।

डॉ. पं. आशीष जैन, दमोह

मुझे विश्वास नहीं था

सच कहूँ तो काफी वर्षों से मेरे मन में ये भावना थी कि एक बार तो आचार्य श्री को खण्डगिरी-उदयगिरी के दर्शन कराना है कटक लाना है। लेकिन इतनी इरी एवं इतना विशाल संघ देखकर मन डरता था। साथ ही धार्मिक संस्कार कम होने से कहीं कुछ बिगड़ न जाये इससे भी मन घबराता था। समय व्यतीत होता गया लेकिन जब गुरुवर का संघ सम्मेद शिखर जी आया तब तो मेरी भावना और प्रबल होने लगी। मैं हर माह श्रीफल चढ़ाने गया। साथ ही मेरी ग्रहस्थावस्था की भांजी, आर्यिका विदिताश्री माता जी ने समय-समय पर मेरी भावना को और अधिक बलवती बनाया जिसका सुफल कि मैं इतना बड़ा बीड़ा उठा सका। यद्यपि मुझे विश्वास नहीं था कि मैं इतना बड़ा कार्य कर सकूँगा लेकिन कर लिया। यह सब आचार्य श्री का आशीर्वाद एवं मेरे पारिवारिक सभी भाई, भाई सुपुत्र राहुल तथा बहिन मीना एवं सुभाष जैन भिण्ड इत्यादि के सहयोग से ही हो सका। सम्मेद शिखर जी के कटक तक की इस महायात्रा मं अचला जी आगरा, अमित जी एवं भाई शुभम का भी आचार्य संघ की व्यवस्था में पूर्ण सहभागिता रही। कटक, भुवनेश्वर समाज ने भी समय-समय पर आकर जो योगदान दिया वह भी सराहनीय है। इन सभी के साथ गुरुवर के संघ का एक्जेस्टिंग पावर भी अपने आप में बेजोड़ रहा। रास्ते में जहाँ कहीं व्यवस्था में कोई कमी भी रही फिर भी किसी ने कुछ नहीं कहा, कहना तो दूर कभी मुख ग्लानता भी नहीं दिखी इसी का सुफल है कि हम आचार्य संघ को कटक लाने में सफल हो सके। अंत में गुरुवर से यही प्रार्थना है कि हमें ऐसी शक्ति प्रदान करें कि आगे भी हम इसी प्रकार संघ की सेवा करते रहे एवं संघ से जुड़े रहें।

संघपति- प्रदीप जैन, श्री केशवचंद जैन, कटक

बिखरे मोती समिटने लगे

संतों की सन्निधि का इतना बड़ा प्रभाव होता है यह मुझे नहीं पता था। मेरा परिवार बहुत बड़ा है मेरे दादा जी श्री केशवचंद जी के ६ पुत्र हैं जिसमें प्रथम पुत्र स्वर्गीय श्री पवन कुमार जी के हम दो राहुल एवं मेरा छोटा भाई रिक्की एवं हमारे पांच चाचा जी २ बुआ जी है। कुछ समय से परिवार में मन मुटाव विघटन जैसी स्थिति थी। जिसके कारण कई वर्षों से पूरा परिवार एक जगह नहीं बैठ पाता था आपस में हँस बोल नहीं पाते थे कई बार तो ऐसा लगता था पता नहीं हम लोगों में कभी एकता हो पायेगी या नहीं। लेकिन कजब से हमारे परिवार ने पूज्य गणाचार्य भगवन को सम्मेद शिखर जी से कटक खण्डगिरी-उदयगिरी लाने का विचार बनाया तब से मेरे परिवार के बिखरे मोती समिटने लगे और गुरुवर के कटक आते-आते तो ऐसा चमत्कार हुआ कि उन संपूर्ण मोती की एक बहुत ही सुन्दर माला बन गई जो कि आज संपूर्ण ओडिशा समाज के लिए आदर्श भूत बन चुकी है इसे में आचार्यश्री के आशीर्वाद का चमत्कार ही मानता हूँ साथ ही उनके चरणों में यही प्रार्थना करता हूँ कि हे गुरुदेव! आपके द्वारा बनायी गई पारिवारिक एकता-संगठन की यह माला अब कभी न बिखरे ऐसा आशीर्वाद बनाये रखना।

राहुल कुमार जैन कटक

गुरु सेवा का प्रत्यक्ष फल

सच्चे मन से भायी गई भावना कभी निष्फल नहीं होती। परम पूज्य राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज ससंघ का कटक प्रवेश होते ही वर्षों से भायी गई मेरी भावना पूर्ण हुई साथ ही मुझे मिला एक धार्मिक एवं गुरुभक्त परिवार का तौफा। हाँ पहले मेरे भाईयों में इतनी धार्मिकता नहीं थी जितनी की आचार्यश्री के सान्निध्य में रहकर हो गई। आचार्य संघ के विहार में बारी-बारी से मेरे सभी भाईयों ने भाग लिया विहार कराया एवं आहार दिया। पता नहीं पूज्य श्री में कैसा चुम्बकीय आकर्षण है जिससे कभी मंदिर एवं गुरुओं के पास न जाने वाले, धर्म में इन्ट्रेस्ट न रखने वाले छोटे-छोटे बच्चे भी धर्म से जुड़ गये। उन्होंने भी आहार कराना सीख लिया भगवान के दर्शन करने का नियम ले लिया। इससे बड़ी खुशी की बात और क्या हो सकती है ? गुरुओं की सेवा का भविष्य में जो फल प्राप्त होगा वह तो होगा ही किन्तु प्रत्यक्ष फल से ही हम सभी का मन आल्हादित है, आनन्दित है, खुश है।

श्रीमती मीना जैन, श्री सुभाष जैन, भिण्ड

नहीं घबरायेंगे

हम सभी का बड़ा सौभाग्य है कि आचार्य श्री का इतना बड़ा संघ हमारे यहाँ पधारा। यद्यपि आचार्य संघ को ओडिशा लाने में समाज घबरा रही थी किन्तु श्री केशवचंद जी परिवार ने सहज ही यह बीड़ा उठा लिया एवं संपूर्ण समाज में धर्मनिष्ठ होने का आदर्श प्रस्तुत किया। सत्य ही है अच्छे कार्य पुण्यवानों को बड़े पुण्य से प्राप्त होते है। इस प्रांत में साधु-संतों का अधिक आवागमन न होने एवं सान्निध्य न मिल पाने के कारण ही यहाँ की समाज संतों से डरती हैं। इतना बड़ा संघ ओडीशा के इतिहास में प्रथमबार आया है लेकिन परम पूज्य राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज यहाँ आगमन से मुझे विश्वास हो गया है कि जैन ही नहीं, जैनेत्तर भी दिगम्बर जैन संतों की चर्या से अवगत हो चुके हैं और अब वे कभी किसी साधु को ओडीशा लाने में नहीं घबरायेंगे।

भुवनेश्वर समिति अध्यक्ष श्रीमान कमल जी धनावत

भूल

श्रमणी आर्यिका वियुक्तश्री माता जी

भू-भूतल (पर)
ल- लक्ष्मी है (जब तक)
तब तक हमे कोई समस्या नहीं है
जब लक्ष्मी हमारे पास नहीं होगी
तब हम भूल याद करेंगे
यानि तब ही भगवान की शरण में जाएंगे
ऐसा कौन बोलता है
मात्र अमीर
भू- भूतल (पर)
ल - लक्ष्य (धर्म) है जब तक
तब तक हमें कोई समस्या नहीं है
ऐसा कौन बोलता है
मात्र धर्मात्मा
भू - भूतल (पर)
ल - सरस्वती है जब तक
तब तक हमें कोई समस्या नहीं है
ऐसा कौन बोलता है
मात्र एक छात्र
भू - भूतल (पर)
ल - लकड़ी है जब तक
तब तक हमें कोई समस्या नहीं है
ऐसा कौन बोलता है
मात्र वृद्ध
चारों को मिलाएँ- अमीर+धर्मात्मा+वृद्ध+विद्यार्थी
आप किसकी भूल को भूल कहेंगे ? क्योंकि
लकड़ी हमेशा साथ नहीं देती
लक्ष्मी हमेशा साथ नहीं देती
साथ देता है तो मात्र धर्म
अब फैसला आप करें
आपको क्या चाहिए।

विज्ञापन दर

रंगीन - फुल पृष्ठ	-	11000/-	**ब्लेक एण्ड व्हाईट - फुल पृष्ठ**	-	5000/-
रंगीन - हॉफ पृष्ठ	-	6000/-	**ब्लेक एण्ड व्हाईट - हॉफ पृष्ठ**	-	2500/-
रंगीन - चौथाई पृष्ठ	-	3000/-	**ब्लेक एण्ड व्हाईट - चौथाई पृष्ठ**	-	1500/-

'विरागवाणी' मासिक पत्रिका की सदस्यता एवं विज्ञापन हेतु संपर्क करें-

प्रबंध सम्पादक : श्री अनूप कुमार जैन

जी-१४१ गौतम नगर, भोपाल-२३ ☎: 0755-2789703, मो.9425016879

भगवान महावीर और विश्वशान्ति

प्रेमचन्द्र जैन, शास्त्री, जैनदर्शनाचार्य

विश्वशांति की आवश्यकता- आज सारा संसार शारीरिक एवंमानसिक व्याधियों से पीड़ित, दु:खदावानल से दग्ध, हजारों चिंताओं से घिरा, अविश्वास के राक्षस से परेशान मंहगाई और अभावों से दु:खी दिखाई दे रहा है। देश की क्या विदेशों में भी कांति, विद्रोह, नरसंहार के कारुणिक समाचार हम आये दिन पढ़ते सुनते तथा देखते हैं। शान्ति का नाम भी कर्णगोचर नहीं होता।

अधिकांश लोगों के अन्दर यह भावना तो है कि लोकपीड़ा, भय तथा विध्वंस के वातावरण की समाप्ति तथा अविश्वास का नाश हो लेकिन यह संभव कैसे है विश्वशान्ति के बिना।

और आज भी विश्वशान्ति का मूलमंत्र महावीर दर्शन के पास उपलब्ध है यदि कोई अपनाये तो।

तो आइये, हम विचार करें कि महावीर आज भी प्रासंगिक क्यों?

जैन परम्परा में अन्तिम तीर्थंकर भगवान महावीर का जन्म दिवस सम्पूर्ण भारतवर्ष में आनन्द और उत्साह पूर्वक मनाया जाता है।

लेकिन प्रश्न है कि हम भी मानव हैं तथा महावीर भी मानव थे तथा जब हम उनकी पूर्व की अवस्थाओं में झांककर देखते हैं तो हमें मालूम होता है कि उन्होंने भी अनेक गतियों में अनेक कर्म फलों को भोगा था। फिर भी हम उनका ही जन्मदिन इतने व्यापक स्तर पर क्यों मनाते हैं।

भगवान महावीर द्वारा बताये दर्शन, मूल्य, तथा सिद्धान्त अप्रतिम एवं अलौकिक सुखकारी के साथ-साथ सर्वजन हिताय भी हैं। मात्र जन-गण का उद्धार उनका लक्ष्य नहीं बल्कि प्राणीमात्र के उद्धार की भावना उनका मूलमंत्र है अत:

आज के लोकतन्त्रात्मक शासन की भूमिस्वरूप अहिंसा, अपरिग्रह, अनेकान्त, संयम एवं समता महावीर दर्शन के ऐसे सूत्र हैं जिनका आचरण असली स्वतन्त्रता की पृष्ठभूमि होगा।

उपरोक्त सूत्रों का न केवल आध्यात्मिक बल्कि राजनैतिक दृष्टि से इनका महत्व नकारा नहीं जा सकता।

लोकतन्त्रात्मक संविधान के आधारभूत उपरोक्त सिद्धान्त सूत्र पूर्णत: अनाक्रमण, सह अस्तित्व, समता एवं संयम पर आधरित है।

१. अनाक्रमण : (अहिंसा)- वास्तव में पूर्णत: अनाक्रमण का नाम ही तो अहिंसा है। अहिंसा में मन-वचन-काय के माध्यम से पंच पापों को करना, कराना तथा पाप करते हुए की अनुमोदना (समर्थन) का त्याग कराया जाता है।

अनाक्रमण भी पूर्णत: अनाक्रमण तब कहलायेगा जब हम नवकोटि से हिंसा का त्याग करें।

आज देश ही क्या विदेशों में भी इस बात को लेकर वैचारिक मन्थन गहराता चला जा रहा है-कि युद्ध की विनाशकारी लीला जो कि सुरसा के मुँह की तहर बढ़ती जा रही है ऐसे समय में विश्वशान्ति का सूत्र पूर्णत: अनाक्रमण बनाम अहिंसा लोक कल्याणकारी हैं। महावीर दर्शन का यह सूत्र चमत्कारिक शक्ति वाला है।

२. सहअस्तित्व: (समन्वय)- समस्याओं का मिलजुल कर समाधान खोजना। प्राचीन एवं अर्वाचीन परम्पराओं का अर्न्द्वन्द्व आज सब सम्प्रदायों में विकराल रूप धारण किए हैं। विरोध विचार धारा वाले लोग यदि एक जगह बैठकर अन्तिम समाधान की उत्कट इच्छा ही धारण न करते हों सभी अपनी-अपनी खिचड़ी पकाना चाहें तो महावीर के सहअस्तित्व के सिद्धान्त का कोई महत्व ही नहीं। अन्यथा धार्मिक सम्प्रदायों की ही क्या विश्व की जटिल से जटिलतम समस्याओं का समाधान कारक है सह अस्तित्व।

३. अपरिग्रह- अन्तरंग एवं बहिरंग परिग्रहों के प्रति ममत्व परिणाम न रखना तथा भूमिका के अनुसार परिग्रह का त्याग करना।

वास्तव में आज के वातावरण में अतिसंग्रह आपत्तियों का घर है यदि वह अनीतिपूर्वक हो तब तो विषमता एवं संघर्ष

का जन्म होगा ही। क्योंकि पूंजी का केन्द्रीयकरण सामाजिक विषमता एवं वैमनस्य को जन्म देता है। अच्छा तो यह हो कि अर्जन के साथ विसर्जन भी होता रहे। (अच्छे कार्यों में उपयोग होता रहे) महावीर ने कहा कि प्राणीमात्र बराबर है, कोई छोटा बड़ा नहीं, किसी को छोटा या बड़ा मानना ही अपराध है तब फिर अपने को धनी एवं बाकी को निर्धन मानना भूल है।

४. समता- समानभाव रखना। अपने जैसा ही सब प्राणियों को समझना? व्यक्ति की शक्ति भले ही राख से ढकी चिनगारी की तरह वे सुप्त हो लेकिन शक्तिपुंज तो सभी हैं ही।

समानता का अधिकार हमारे लोकतन्त्र का मूल आधार है फिर यह भेद क्यों?

नीतिकारों ने गाया है- 'उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्' फिर परिवार के सदस्यों में मनमुटाव क्यों? क्यों न हम सभी एक ही माँ के पुत्र सिद्ध हों।

'पृथ्वीमाता, पुत्रोऽहं प्रथिव्याः'

भगवान महावीर का यह उदारतावादी दृष्टिकोण (समता-समानता) भारतीय संस्कृति की पहिचान है प्रतीक्षा है इसको अपनाने की।

५. संयम- इन्द्रियों को वश में रखना, अर्थात् शरीर, आंख, नाक, कान, जीभ की लगाम हाथ में रखना।

हमारे पूजनकारों ने गाया है- 'संयमरतन संभाल, विषय चोर बहुफिरत हैं'

आज अभाव एवं मंहगाई से पीड़ित जनता को संयम राम बाण औषधि का काम करेगा।

भौतिकता एवं भोगलिप्सा से मस्त संसार यद्यपि आज आन्तरिक एवं बाह्य दोनों प्रकार के जीवन में परेशान हैं। यहाँ तक कि अच्छे-अच्छे तात्विक भी इस चका चोंध में अपने को असहाय महसूस करते हैं। क्योंकि आज का जीवन कठिनाइयों एवं जटिलताओं से भरपूर हैं जिधर देखो उधर करुण-कृन्दन एवं हाहाकार की आवाजें सुनाई देती हैं। कारण है एक मात्र इन्द्रियों की गुलामी।

आज के सन्दर्भ में तो संयम अत्यन्त अनिवार्य है। प्राणीमात्र के उपयोग में आने वाले साधन-विद्युत, जल, अन्न, यातायात आदि को सीमित करना तो देश ही क्या विश्व भर को आवश्यक है अन्यथा कालान्तर में इसके परिणाम अति भयंकर सिद्ध होंगे।

सत्ता एवं सम्पत्ति की राशि एक है तथा कुर्सी एवं कमर की भी राशि भिन्न नहीं है। देश का अभिजातवर्ग तथा पदलिप्सु लोग कुर्सी को जैसे-तैसे बरकरार रखना चाहते हैं परिणाम है जो कमर तोड़ मंहगाई जन-जीवन को अस्तव्यस्त कर रही है।

भारतीय संस्कृति सत्ता एवं सम्पत्ति-हथियाने की मार्गदर्शिका नहीं बल्कि तप, त्याग एवं संयम की प्रशस्त पथ प्रदर्शिका रही है। अत: संयम भारतीय संस्कृति के प्राण हैं।

विश्वशांति कैसे संभव- विश्व शान्ति के लिए महावीर दर्शन के मूलभूत तत्व अहिंसा (अनाक्रमण) समन्वय (सहअस्तित्व) अपरिग्रह, समता, संयम आदि को अपनाना अनिवार्य है। साथ ही आपस में सद्भाव, संवेदना, सहानुभूति एवं विश्वास भी जरूरी है।

सत्ता एवं सम्पत्ति का मोह, संकीर्ण राष्ट्रीयता पूंजीवाद, संहारक अस्त्र-शस्त्र, अणु परमाणु बम आदि का निर्माण ये-विश्व शांति के बन्धक एवं अवरोधक हैं इनका त्याग करना ही श्रेयस्कर होगा।

विज्ञान का दुरुपयोग भी अशान्ति का प्रमुख कारण है। अत: विज्ञान की अध्यात्म के साथ जब तक संगति न होगी तब तक विज्ञान दोष का ही कारण होगा।

हिंसा सब प्रकार से अशांति की जननी है, अत: हिंसा के परित्याग से विश्वशांति संभव हो सकती है।

सर्वोदय, वसुधैव कुटुम्बकम् की भावनापूर्वक छद्म-प्रपंच तथा कूटनीति के परित्याग से विश्वशांति की जड़ें और ही अधिक मजबूत होंगी।

(राजकी. प्रवे. सं. वि. विराट नगर) जयपुर

ऐसे मनाएँ महावीर जयंति

प्रवचन- 'ईडर में प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी गुरुदेव द्वारा दिये गये महत्वपूर्ण अंश'

सम्प्रति हमारे समक्ष प्रसंग है- विश्वहितैषी तीर्थंकर भगवान महावीर की जन्म जयंति। एक ऐसे तीर्थंकर का जन्म जयंति महोत्सव है जिन्होंने संपूर्ण विश्व को शांति और कल्याण के सूत्र दिये। जियो और जीने दो का सार्वभौमिक नारा दिया। इसलिए वे जैनों के नहीं विश्व के भगवान हैं। उनकी पुनीत जन्म-जयंति हम इस वर्ष भी मनाने जा रहे हैं। इस वर्ष भी वही हर्ष-वहीं उल्लास तो हो लेकिन वहीं अंध परम्परा न हो, कुछ नया और अनूठा कार्य करके दिखाएँ। कैसे? तो आइए परम पूज्य राष्ट्रसंत, अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी, सिद्धांत चक्रवर्ती, गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर जी महाराज द्वारा इस विषय में दिये गये महत्वपूर्ण बिंदुओं को देखे-

१. भगवान महावीर की २६.. वीं जन्म जयंति यह प्रत्येक बैनर, पत्रिका व मंदिरों में लिखा जाए।

२. यद्यपि आपके नगर में कत्लखाने, मांसाहार, अंडे-शराब की दुकाने नहीं होनी चाहिए। यदि हो तो इस पुण्य दिवस पर बंद कराने की अपील करें। गवमेंट का नियम कानून है कि इस विषय में छूट देती है। कैसे भी कसाईखाने को आपकी आत्मा की भलाई के साथ वे भी जुड़े हैं।

३. जैनों की भी इस दिन दुकाने बंद रखनी चाहिए।

४. भगवान की रथयात्रा, पालकी जहाँ से निकले, वहाँ स्वच्छता रखने का प्रयास करें। मार्ग में गंदी नालियाँ वगैरह हों, तो ८ दिन पूर्व से ही नगर पालिका को सूचित करें।

५. नये कपड़े तो पहनें पर मंदिर के शिखर पर नयी ध्वजा लगाना न भूलें। ये ठीक है कि आप मंदिर की वर्षगांठ पर ध्वजा बदलते हैं पर विशेष पर्वो पर भी इसका ध्यान रखें।

६. वात्सल्य भोजन तो रखें पर रात्रि भोज नहीं।

७. जुलूस में एक साथ, समय पर उपस्थित हों। ताकि जनमानस देखे, धन्य है महावीर भगवान के भक्त तथा उनके प्रति इनकी श्रद्धा भक्ति, समर्पण और त्याग।

८. वर्ष में एक बार शिखर पर कलर तथा दरवाजों पर सजावट अवश्य होना चाहिए।

९. अपने घर के ऊपर धर्म ध्वजा लगायें एवं मंदिर जी व घर के बाहर तोरण द्वार तथा रंगोली बनायें।

१०. मंदिर के शिखरों से प्रात: से ही भगवान महावीर स्वामी क भजन (रिकार्ड या सी.डी. वगैरह) गूँजना चाहिए ताकि पता चले कि 'आज महावीर जयंति' है।

११. जुलूस में कम से कम चमड़े के बेल्ट, जूते, पर्स वगैरह का प्रयोग न करें।

१२. महिलाएँ श्रृंगार करें, कोई परेशानी नहीं है पर नेल पॉलिस व लिपिस्टिक आदि का उपयोग न करें।

१३. सभी पुरुष सफेद ड्रेस में व महिला केशरिया साड़ी में उपस्थित हों।

१४. धर्म ध्वजाएँ बच्चों के हाथ में नहीं, युवाओं के हाथ में दें।

१५. जूते-चप्पल पहने-पहने भगवान की पालकी एवं रथ व धर्म ध्वज को हाथ न लगायें।

१६. ड्रेस के साथ-साथ मन भी सफेद हो। आपस में झगड़े-झंझट न कर समाज प्रमुख का निर्णय एकमत से स्वीकार करें।

१७. चाहे कोई किसी धर्म, जाति या संप्रदाय का क्यों न हों, किसी को पराया या भिन्न न समझें। जब भगवान के समवशरण में तिर्यंच भी अपनत्व से बैठ सकते हैं तो फिर क्या हम मनुष्य होकर एक साथ बैठ या चल नहीं सकते?

१८. भगवान महावीर का अभिषेक-पूजन सामूहिक हो पर इतने उत्साह सुमधुर ध्वनि से करें कि पंडाल गूँज जाए।

१९. सभी के हाथ में पूजा की पुस्तक व कार्ड अवश्य हों।

२०. सार्वजनिक कार्यक्रम करना अच्छी बात पर व्यवस्थित करना और अच्छी बात है।

२१. मंदिर के बाहर कार्यक्रम हो तो विशेष कर समय का पूरा ध्यान रखें।
२२. समाज के व्यक्तियों का सम्मान बाद में या न भी हों, लेकिन बाहर से आये व्यक्ति का सम्मान जरुर करें।
२३. लंबा-चौड़ा सम्मान आवश्यक नहीं, प्रेम का एक तिलक भी बहुत बड़ा सम्मान है।
२४. अन्य कोई कार्यक्रम हो या न हो पर भगवान महावीर पर एक प्रश्न पत्र जरुर निकालना चाहिए। क्योंकि साल में एक दिन भी हमने भगवान महावीर स्वामी के जीवन दर्शन को जान लिया तो साल भर शास्त्र पढ़ना सार्थक हो जाएगा।
२५. इस शुभावसर पर शीर्षस्थ संस्थाएँ (महासभा, महासमिति, तीर्थ क्षेत्र कमेटी) आदि राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री को अन्तर्राष्ट्रीय सकल दिगम्बर जैनसमाज की ओर से महावीर जयंति की बधाईयाँ अवश्य दें साथ ही भगवान महावीर स्वामी के चित्र के समक्ष उनके द्वारा द्वीप प्रज्जवलन पुष्प अर्पण करायें उनकी महावीर स्वामी के प्रति शुभ संदेश व संस्तुति प्राप्त कर उसका व्यापक प्रचार-प्रसार करें।
२६. समाज के प्रमुख संगठन व मण्डल प्रांतीय स्तर पर भी मुख्यमंत्री, सांसद, विधायक, कलेक्टर, नगराध्यक्ष, सरपंच आदि प्रमुख व्यक्तियों से भी भगवान महावीर स्वामी के शुभ संदेश अथवा उनकी संस्तुति वाक्य प्राप्त कर प्रचार-प्रसार करें।
२७. देश प्रदेश में प्रकाशित होने वाली न्यूज पेपर व जैन पत्र-पत्रिकाओं में इस अवसर पर भगवान महावीर स्वामी से सम्बन्धित जीवन परिचय अथवा उनके विभिन्न संदेशों को भी अवश्य प्रकाति करें।
२८. टी.वी. चेनल में भी महावीर स्वामी के उपदेश को प्रचार-प्रसार में लायें।
२९. औद्योगिक, प्रशासनिक, शैक्षणिक संस्थाएँ भी इस अवसर पर भगवान महावीर स्वामी के चित्र के समक्ष द्वीप प्रज्जवलन पुष्पार्चन कर उनके संदेशों का स्मरण कर शुभ भावना प्रकट करें।
३०. इस पुनीत अवसर पर स्कूल, अनाथालाय, हॉस्पिटल, जेल अथवा गरीबों को भी भोजन का वितरण कर सकते हैं।
३१. जुलूस में प्रभावना अवश्य करें, पर ध्यान रखे जूठी सामग्री जिन रथ के मार्ग पर न डालें।
३२. वात्सल्य भोज में भले ही शामिल न हो पर भगवान महावीर के जुलूस में अवश्य पहुँचना चाहिए।
३३. इस अवसर पर 'तीर्थंकर वर्धमान' नामक कृति का अध्ययन व जन-जन में वितरण कर भगवान महावीर के जीवन दर्शन से हर व्यक्ति को परिचित कराना चाहिए।
३४. इस अवसर पर पधारे अतिथियों का स्वागत-सन्मान शाल के स्थान पर भगवान महावीर स्वामी के फोटो से करना चाहिए।
३५. हम भले ही अल्प हो पर परिजन व इष्ट मित्रों को भी साथ लेकर चलें, चाहे जैन हो या जैनेतर।
३६. समाज के युवावर्ग, महिला मंडल द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम, झांकी, एकांकी नाटक, निबंध प्रतियोगिता, भाषण प्रतियोगिता का आयोजन करना चाहिए।
३७. आम सभा में भगवान महावीर स्वामी से सम्बन्धित प्रश्न मंच जरूर करें व पुरस्कार भी वितरण करें, अच्छा हो कि ऐसे अवसर पर उपस्थित जैनेत्तर भाईयों को भी अवसर प्रदान करना चाहिए।
३८. पालना, महाआरती व भजन संध्या के कार्यक्रम रखना चाहिए पर ध्यान रखें कार्यक्रम प्रस्तुति कर्ता कलाकार मांसाहारी न हो।
३९. प्रभात फेरी के समय भगवान महावीर स्वामी से संबंधित भजनों व नारों का ही प्रयोग करना चाहिए।

इस तरह भगवान की पूजा से बढ़कर व्यवस्था भी एक पूजा ही कहलाएगी सभी एक दूसरे से जुड़े, गले से गले मिले ओर कदम से कदम मिलाकर चलें फिर देखें महावीर जयंति का कितना आनंद आता है, कितनी सुख-शांति की संवेदना होती है।

महावीर जयंति पर उद्घोषित किये जाने वाले नारे-

१. महावीर की देशना, जाग उठी नव चेतना।

२. वन टू थ्री फोर महावीर है चारों ओर।
३. एक चमकता हुआ सितारा, वीर प्रभु को नमन हमारा।
४. त्रिशला नंदन वीर की, जय बोलो महावीर की।
५. घर-घर से आई आवाज, वीर प्रभु की जय-जयकार।
६. सिद्धारथ के वीर की, जय बोलो महावीर की।
७. महावीर का क्या संदेश, जिओ और जीने दो।
८. विश्वशांति का दो उपहार, महावीर आओ एक बार।
९. प्रेम का अमृत पीने दो, जीओ और जीने दो।
१०. वीर प्रभु के संदेशों को घर-घर में पहुँचायेंगे।
आंधी आये या तूफान, आगे बढ़ते जायेंगे।
११. वीर प्रभु ने क्या किया, हिंसा ताण्डव हटा दिया।

प्रेषक आर्यिका वियुक्तश्री माता जी

मूलाधिकार याचिका

चिंटी ने की पिटीशन दाखिल जाकर दिल्ली सुप्रीम कोर्ट के जज को
कब से ताक रही हूँ सबको... शायद सुने कोई मेरे सुख दुख को।
पानी छानकर पीने वाले मुझे दे रहे, नित मनमर्जी के दंड।
आप सुनें तो आँसू छलके प्राण आयेंगे फौरन कठ॥
भोजन पाने का सबको हक है क्या आप नहीं वेतन पाते है।
छप्पन व्यंजन माल मलाई क्या स्वयं चले दौड आते है॥
मोटर बंगला नौकर चाकर मिली न जाने क्या-क्या सुविधाएँ
मैं तो मात्र भोजन तलाशती इस पर भी इतनी विपदाएँ॥
डिब्बे में घुस आई तो गलती गृहणी का थोड़ा सुराख उसमें था एक फूंक।
मुझको भी मीठा खाने का हक, पति की चोरी से वह भी तो खाती है खूब ठूसं।
कुनवा सहित मुझे खाते देख डिब्बा उसने रख दिया कड़ी धूप में ।
छटपटा कर हम सब मरे बचा पाता अल्ला का उस अग्निकूप में॥
कभी पानी के दे दे छींटे कभी बुहारी से करती हलाकान।
कीटनाशी केमीकल्स से तो रस्ता करती रहती रोज जाम।
अपने पैरों की बेहरमी से लहुलुहान कर देना आम बात है।
व्यथा बताते कहते सुनते श्रीमन् बीत जाये ये पूरी रात है॥
अब आप ही बताइये न्यायशील मेरे वंश की होती रहेगी ऐसे छुट्टी।
तो इतिहास में ही लिखा पाओगे भारत में पहले कभी होती थी चिंटी।
अत: हमारे संरक्षण हेतु तुरत एक आयोग बनाइये
वंश हमारा फले फूलता ऐसे कुछ उपाय समझाये।
पेंडिग न हो यह बात अभी अर्जी की सुनवाई कर दो पक्की।
नोटिस दे चेले बुलवालो महावीर के पर्युषण की पड़ती हो जो पहली तिथि॥

ब्र. धन्यकुमार राजेश

वद्ध माता-पिता की आँखों से दु:खद बहते हुए आँसू

महेन्द्र कुमार जैन, 'भगत जी' गाजियाबाद

मनुष्य के जीवन में माता-पिता का स्थान सर्वोपरि और सर्वोच्च है। संसार में माता-पिता का ही आशीष, अमृत का वह स्तोत्र है, जिससे जीवन गतिमान होता हैं। माता-पिता के वचन सन्तान के लिए प्रमाणिक माने जाते है और उस पर चलने पर सतान को सुख-शान्ति की प्राप्ति होती है। अत: बच्चों का कर्त्तव्य हैं कि अपने वृद्ध माता-पिता का सम्मान करें और उनके गौरव का सम्मान करें। स्वामी शंकराचार्य जी महाराज का कथन है जब तक आप में कमाने की क्षमता है, तब तक सगे संबंधी आपसे जुड़े रहेगे, बाद में जर्जर देहके साथ जियेंगे, तो आपके घर में भी आपसे कोई बात नहीं करेगा। पद्म पुराण में लिखा हैं- 'माता-पिता से बढकर कोई भी तीर्थ नहीं है। माता-पिता दोनों ही निसंदेह इस लोक में भगवान के समानहै। बुढ़ापा जिन्दगी का सत्य है, कुछ तो आ गया है कुल को तो आ रहा है और कुछ को आ चुका है। वर्तमान में वृद्धजन दया नहीं, सम्मान चाहते है। अति वृद्ध और अति शिशु वे दोनों ही अवस्थाएँ असमर्थ है। इन अवस्थाओं में प्राणी हर प्रकार उठने बैठने चलने-फिरने तथा कुछ भी करने से असमर्थ होता है।

प.पू. मुनिश्री प्रमाणसागर जी महाराज का कथन है, जीवन में माता-पिता और वीतरागी गुरु के उपकार को कभी नहीं भुलाया जा सकता। प्रत्येक दिन जब आँख खुले तो माता-पिता के उदकार को याद करो। माँ ने जन्म दिया है,ये लम्बी साधना है जो माँ साधती है। आज माता-पिता यार लगने लगे हैं। अपने फ्लैट में उनके लिए जगह नहीं। ये नीचता की चरम है। अभागे कृतघ्न का कभी उद्धार नहीं। माँ-बाप का नाम आते ही मन गद्‌गद हो जाना चाहिए। माँ की इच्छा के आगे कुछ भी नहीं कहाँ जा रही है पीढ़ियां? जन्म के जीवन दिया। माँ की इच्छा के आगे के आगे कुछ नहीं। क्या जा रही है। जन्म के जीवन को दिया। याद करो बीमारी में सारी रात जगाकर बिताई। तुमने गोद गीली कर दी, पर विडम्बना है आप माँ-बाप की आंखे गीली कर रहे हो। वृद्ध माँ बाप के कर्ज को याद रखों। यह चुकाना असम्भव है, समस्त रजकण और समुद्र के जलकण को एकत्रित भी कर लिया जाए तो उनका कर्ज उतारना सम्भव।'

राजा धृतहरि ने 'वैराग्य शतक' में लिखा है- बुढापा आने पर मनुष्य को परमात्मा को पूजा। भक्ति वैराग्य में लग जाना चाहिए तो फिर जीवन में आनन्द ही आनन्द है। वर्तमान में हमारे देश में बुजुर्ग माँ-बाप की दयनीय एवं शोचनीय अवस्था पर दर्द से भरे हुए सिसकते आँसू बहाये जा रहे है। पृथ्वी को कागज बनाया जावे और समुद्र को स्थायी बनाई जाए। फिर भी माँ की ममता और पिता के दुलार भरे प्यार निस्वार्थ सेवा का वर्णन करना सम्भव नहीं।'

बुढ़ापा जिन्दगी का सत्य है, कुछ को तो आ गया है और कुछ को तो आ रहा है। अति वृद्ध और अति शिशु के दोनों ही असमर्थ अवस्थाएँ है। इन अवस्थाओं में प्राणी हर पकार से उठने-बैठने चलने फिरने तथा कुछ भी करने में असमर्थ होती है। भगवान श्री राम ने माता-पिता के चरणों में प्रथम वन्दना कर यह सन्देश दिया- जीव का पहला कर्त्तव्य माता-पिता की सेवा करना और गुरु का आशीर्वाद प्राप्त करना है।

सन्त तुलसीदास जी ने कहा है- 'प्रात: काल उठि रघुराई, प्रथम माता-पिता शीष नवाई।' पिता का अरमान अपनी सन्तान के लिए आकाश से ऊँचा और धरती से भारी होता है कि मेरा बेटा मेरे से भी महान और ऊँचा उठ जाए। माँ की ममता अपनी सन्तान के लिए धरती से भारी होती है और उसकी तुलना किसी से नहीं की जा सकती। माँ बाप की आंखों में सर्वाधिक आंसू दो अवसरों पर आते है एक तो उस समय जब बेटी विदा होती है। क्योंकि बेटियाँ घर की रौनक होती है और सर्वाधिक दु:ख बाप को होता है इसका कारण है कि पूरे परिवार की चिन्ता तो बाप करता है लेकिन बाप की चिन्ता करने वाली बेटी ही होती है। बेटियाँ ही माँ-बाप को सम्मालती है और अपनी सुसराल में भी वृद्ध माँ-बाप की चिन्ता से गमगीन रहती है। दूसरा अवसर जब अपना लाडला पुत्र वृद्धाश्रम, 'ओल्ड रोज होम' अथवा किसी तीर्थ क्षेत्र की धर्मशाला में भेजकर वृद्ध माँ-बाप को अपने अन्तिम दिनों को काटने को मजबूर कर देता है।

बुजुर्ग माँ-बाप का आर्शीवाद एवं मार्ग दर्शन हमेशा लाभदायक होता है। बुजुर्गो के पास अनुभवों का अपार भण्डार है और वे भी एक सचेत इकाई की तरह है जो समाज के चर्खुमुखी विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। जब भगवान राम के दल के सभी सदस्य लंका जाने से असमंजस में थे तो उस समय बुजुर्ग जामवंत ने हनुमान जी को उनकी शक्ति याद दिलाई थी, जिससे उन्हें बल का अहसास हुआ और सफलता प्राप्त की।

किसी कवि ने कहा है-

'वृद्धावस्था का यह दौर, क्या जुल्म ढ़ाता है।
बहू तो क्या, बेटा भी कैसे वचन सुहाता है।।
हाय रे कुदरत, पतझड़ के बाद तेरा वसन्त है।
वृद्धवस्था का पतझड़ को तो मौत ही बचाती है।।'

बुजुर्ग माँ-बाप का सम्मान करने से आयु, कीर्ति, यश और बल बढ़ता है। अब प्रश्न उत्पन्न होता है कि स्वार्थी लोगों ने धरती बाँट दी। घर-परिवार बाट दिए, वृद्ध माँ-बाप को निकालकर वृद्धाश्रम या किसी तीर्थ क्षेत्र या धार्मिक स्थानों पर असहाय अवस्था से भेजने लगे। भगवान को भी बाटने से कोई कसर नहीं छोड रहे है। समय का तकाजा है कम से कम इंसानियत को मत बांटों क्योंकि दुनियाँ से यदि इंसानियत खत्म हो गई तो संसार से सारी सभ्यता और प्राणीमात्र प्रलम के गर्त में समा जायेगा।

हँसते रहो हँसाने के लिए

1. **टीचर**- तुमने होमवर्क क्यों नहीं किया?
   छात्र - गिर गये थे, लग गयी थी।
   टीचर - क्या लगी?
   छात्र- बिस्तर पर गिरे, नींद लग गयी।
2. **दोस्त**- मेरे पास एक कार है तुम्हारे पास है?
   दोस्त- नहीं, तुम्हारी कार से काम चला लूँगा।
   दोस्त - मैं नहीं दूँगा।
   दोस्त- तुम चलाओगे मैं देखकर खुश रहूँगा।
3. **सब्जी वाली**- केले ले लो, मीठे-मीठे हैं।
   सेठ जी - दो, लेकिन कैसे मानूँ मीठे हैं? पहले खाने दो।
   सब्जी वाली- पैसे हैं या नहीं?
   सेठ जी- बहुत हैं।
   सब्जी वाली- दो पहले, वर्ना कैसे मानूँ पैसे हैं।

कु. जिनीशा जैन, कटक

2. **रोगी**- आपके जागरण पर भाषण सुने थे। बहुत लाभ हुआ।
   डॉक्टर - क्या?
   रोगी - ५ साल से निद्रा का रोग था। लेकिन जागरण के भाषण सुनते-सुनते नींद आ गई।
3. **मित्र**- मेरे यहाँ दावत पर आना।
   दूसरा मित्र- तैयार हूँ
   जब दावत हुई तो, उसने इतना खाया कि घर वालों के लिए कुछ नहीं बचा।
   ३ साल का बच्चा रोने लगा।
   घर वाले बोले- मेहमान को सब खा लेने दो, सब मिलकर रोयेंगे।

गुड्डू जैन, राँची

विरागसागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा हैं

पं. बृजेन्द्र कुमार जैन (बीरू)

मात पिता घर वार तुम्हीं हो तुम्हीं सखा और हो भ्राता,
धन दौलत व्यापार सभी का पूरा श्रेय तुम्हें आता।
कर में कुछ नहीं देते सब कुछ देखो कैसा नजारा है,
विराग सागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा है।।

मैं अबोध बालक हूँ गुरुवर इतनी अरज स्वीकार करो,
बीच भंवर में पड़ी जो नैया उसका बेडापार करो।
गुरु शिष्य का रिश्ता जग में अति सवोत्तम न्यारा है,
विराग सागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा है।।

द्वार तुम्हारे खड़ा हूँ आके दोनों हाथ पसोर हैं,
जनम-जनम से भटक रहे हैं हम कर्मो के मारे हैं।
दयादृष्टि करके गुरुवर ने हमें आज स्वीकारा है,
विराग सागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा है।।

जनम जनम तेरा साथ न छूटे यही भावना मैं भाऊँ,
छाँव पड़े जहाँ मेरे गुरु के वहाँ स्वयं को मैं पाऊँ।
अपने इस बालक को गुरु ने दे आशीष दुलारा है,
विराग सागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा है।।

करुणामयी गुरु करुणा करके हमको भी ऐसा वर दो,
अंधकारमय इस जीवन में नये उजालो को भर दो।
जनम जनम उपकार न भूलूँ यह संकल्प हमारा है,
विराग सागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा है।।

मातपिता घर द्वार हैं छोड़े छोड़े हैं भाई बहना,
सबसे नाता तोड़ के गुरु ने पहन लिया संयम गहना।
इक घर छोड़ा सब घर पाये इनमें भी नहीं लगारा है,
विराग सागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा है।।

अनगारी बनकर गुरुवर ने मोह जाल का नाश किया,
परपरणति की ममता त्यागी निज स्वरूप में वास किया।
कठिन साधना करते करते कर्म शत्रु को मारा है,
विराग सागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा है।।

मेरे ऊपर मेरे गुरु के कितने हैं उपकार बड़े,
अपना जीवन किया समर्पण चरण शरण में आन खड़े।
मेरे जीवन के कष्टों को गुरुवर ने ही निवारा है,
विराग सागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा है।।

सस्ती सुन्दर दवा- जौ

जौ-अगर हम संतुलित आहार में जौ को स्थान दें तो बाह्य दवा लेने की आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी इसलिए जौ का प्रयोग अपने भोज्य पदार्थों में शामिल कर देखें।

- ❖ जौ की रोटी रूचि उत्पन्न करनेवाली, मधुर, स्वच्छ, लघु बलप्रद, मल एवं वीर्य को बढ़ाने वाली, वायुकारक और कफ संबंधी रोगों को दूर करने वाली होती है।
- ❖ जौ का सत्तू शीतल, अग्नि प्रदीपक, मल निष्कासन करने वाला, कफ व पित्त को दूर करनेवाला, रुक्ष तथा मल को उखाड़ने वाला माना गया है।
- ❖ गर्मी से संहप्त और व्यायाम से थके व्यक्तियों के लिये सत्त् का सेवन हितकारक होता है।
- ❖ मधुमेह (डायबिटीस) के रोगियों को जौ गोजई (गेहूँ और जौ का मिश्र फसल) का आटा ज्यादा अनुकूल रहता हैं। इससे शर्करा की मात्रा नहीं बढ़ती है।
- ❖ जिसके शरीर में मेद-चरवी बढ़ गई हो उसके लिए गेहूँ चावल के स्थान पर जौ की रोटी-छाछ अथवा जौ की माखरी और चौलाई या मैथी की भाजी का सेवन से मेद घट जाता है और भद्दा लगने वाला शरीर सुंदर सुडौल बन जाता है।
- ❖ जौ व्यक्ति मेद से परेशान हो, घबराहट, बचैनी आदि की शिकायत रखते हो उन्हें जौ की रोटी भाखरी, मलाई निकली दूध की छाछ एवं मूंगके पसावन का सेवन करना लाभदायक होता है एवं शरीर फुर्तीला बनता है।
- ❖ जौ मूत्रल है इसके सेवन से पेशाब बहुतायत से होता है। विद्यार्थियों के लिए जौ विशेष हितकारी माने जाते हैं।
- ❖ दूध देनेवाले पशुओं को जौ खिलाने से वे अधिक दूध देते हैं।
- ❖ जौ कफकारक नहीं होता है। यह कंठ रोग, चर्मरोग, कफ पित्त, मेद, जुकाम श्वास, जाँघ की जड़ता, रक्त की विकारता एवं तृषा को मिटाने वाला होता है।
- ❖ सांस, खांसी, कफ प्रकोप, जुकाम आदि कफजन्म रोगों में जौ अत्यन्त उपयोगी है।
- ❖ जौ की कूटकर, उपर के खुरदरे छिलके निकालकर उसे चौगुने पानी में ३-४ उबालकर, एक घंटे ढककर रखें दे, इसे फिर छान ले यह बार्ली-वाटर तैयार हो गया। इससे तृषा कै, अतिसार मूत्रकृच्छ, पेशाब की रुकावट व जलन, मूत्रदाह, वृक्कशूल, मूत्राशय शूल आदि में लाभ होता है, इसका उपयोग भारत से अधिक यूरोप में अधिक होता है।
- ❖ सेके हुए जौ के आटे को ठंडे पानी में मथकर (न अधिक गाढ़ा न अधिक पतला) घी मिलाकर पीने से तृषा, दाह तथा रक्तपित दूर होता है।
- ❖ जौ और मूँग का पसावन बनाकर पीने से आंतों की उग्रता शांत होती है और अतिसार में लाभ होता है।
- ❖ जौ का आटा, शर्करा समभाग में मिलाकर खाने से बार-बार होनेवाला गर्भपात रूकता है।
- ❖ जौ तिल ओर शर्करा समान मात्रा में लेकर चूर्ण बनाकर, चासनी (गाढ़ी) के साथ सेवन करने से गर्भपात होने का डर नहीं रहता।
- ❖ जौ स्वादहीन, कुछ ग्राही और रक्तपित्त शामक है। यह नाड़ी को मंद तथा तृषा को शांत करता है।
- ❖ जौ पचने में गेहूँ की अपेक्षा भारी है। पेट में वायु उत्पन्न करता है। पित्त वृद्धि, खांसी, सिरदर्द, छाती की पीड़ा, मसूड़ों की सूजन और ज्वर रोग में जौ का उपयोग होता है।
- ❖ वैज्ञानिक मतानुसार जौ अशक्त और बीमार मनुष्यों के लिए उत्तम है।
- ❖ जौ में लेक्टिक एसीड, सेलिसिलिक एसीड, फॉस्फोरिक एसीड, पॉटेशियम और कैल्शियम उपलब्ध होता है।
- ❖ जौ में अल्प मात्रा में केरोटिन भी है।
- ❖ माल्टाइन कॉडलिवर नामक दवा में जौ का उपयोग होता है।

शाश्वत तीर्थ श्री सम्मेद शिखर जी में प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज ससंघ का साधना

नाम	उपवास	नीरस	वंदनाएँ	जाप
प.पू. गणा. श्री विरागसागर जी महाराज	१३	११	४१	१८४८००
श्रमण श्री विहित सागर जी महाराज	४६	६	४१	११०००००
श्रमण श्री विश्वलोचन सागर जी महाराज	१०	४	१	२२४०००
श्रमण श्री विशोक सागर जी महाराज	१६	१८	४१	१२५०००
श्रमण श्री विश्वेश सागर जी महाराज	५१	१२	२७	३०००००
श्रमण श्री विवर्धन सागर जी महाराज	२७	५	३१	११८३००
श्रमण श्री विश्वविद सागर जी महाराज	७	४	२	४२७५००
श्रमण श्री मनोज्ञ सागर जी महाराज	७	५	२९	१२५०००
श्रमण श्री विदाम्बर सागर जी महाराज	१४	४	४१	१२५०००
श्रमण श्री विश्वलोकेश सागर जी महाराज	१८	२८	२	५०७०००
श्रमण श्री विश्वमित्र सागर जी महाराज	१५	१८	२४	२५००००
श्रमण श्री विधेय सागर जी महाराज	१७	१५	४२	२५००००
श्रमण श्री विश्वाक्षर सागर जी महाराज	२६	३४	४१	३००६००
श्रमण श्री विशौर्य सागर जी महाराज	१४	०	३४	१८५९००
श्रमण श्री विश्वानन्द सागर जी महाराज	३१	७	१०	१२५०००
श्रमण श्री विश्वदृग सागर जी महाराज	३२	६	३२	१२५०००
श्रमण श्री विश्वनायक सागर जी महाराज	४९	१	३०	५२७५००
श्रमण श्री विकौशल सागर जी महाराज	५८	१८	४१	३१००००
श्रमण श्री विरंजन सागर जी महाराज	२०	०	३०	१२५०००
श्रमण श्री विनयन्ध सागर जी महाराज	२१	०	१४	४६८२००
श्रमण श्री विश्वदक्ष सागर जी महाराज	२३	१०	१८	६४००००
श्रमण श्री विश्वभानु सागर जी महाराज	३८	८	२	११५१२२०
श्रमण श्री विश्वहित सागर जी महाराज	५४	२	२	३५००००
श्रमण श्री विश्वधीर सागर जी महाराज	३६	०	१	१२५०००
श्रमण श्री विश्वभद्र सागर जी महाराज	४१	५	४१	३८२५००
श्रमण श्री विनिदेश सागर जी महाराज	१३	१	३७	१२५०००
श्रमण श्री विश्वविजय सागर जी महाराज	१४	३	२१	१२५०००
श्रमण श्री विश्वानन सागर जी महाराज	३५	०	१८	३३८०००
श्रमण श्री विश्वानुत्तर सागर जी महाराज	३२	१	१९	३०२८००
श्रमणी आर्यिका विशिष्टश्री माता जी	३२	२६	५८	२५००००
श्रमणी आर्यिका विदुषीश्री माता जी	१५	४	१५	१२५०००
श्रमणी आर्यिका विनीतश्री माता जी	५०	१०	२	२५००००
श्रमणी आर्यिका विबोधश्री माता जी	५१	१०	३१	२५००००
श्रमणी आर्यिका विविक्तश्री माता जी	३१	८	२८	१२५०००
श्रमणी आर्यिका वियुक्तश्री माता जी	०	४	२	१०००००

नाम	उपवास	नीरस	वंदनाएँ	जाप
श्रमणी आर्यिका विजेताश्री माता जी	३०	५	१५	१५००००
श्रमणी आर्यिका विश्वासश्री माता जी	२८	१९	४२	१२५०००
श्रमणी आर्यिका विशाखाश्री माता जी	१२	४	३	३७५०००
श्रमणी आर्यिका विवक्षाश्री माता जी	१३	४	५	१२५०००
श्रमणी आर्यिका विरम्याश्री माता जी	४०	६	४५	१२५०००
श्रमणी आर्यिका विकाम्याश्री माता जी	२५	४	३२	१२५०००
श्रमणी आर्यिका विकम्पाश्री माता जी	२०	१०	१७	१२५०००
श्रमणी आर्यिका विप्राश्री माता जी	७५	२२	२९	१२५०००
श्रमणी आर्यिका विप्रभाश्री माता जी	४५	६	१८	१२५०००
श्रमणी आर्यिका वियोजनाश्री माता जी	६०	४	४५	२५००००
श्रमणी आर्यिका विसंयोजनाश्री माता जी	३५	४	३३	१२५०००
श्रमणी आर्यिका विचक्षणाश्री माता जी	३२	४	३४	५००००
श्रमणी आर्यिका विरक्षणाश्री माता जी	३२	४	५६	१८४८००
श्रमणी आर्यिका विदितश्री माता जी	६	९	१०	१८४८००
श्रमणी आर्यिका विदिताश्री माता जी	२०	१०	३०	१८४८००
श्रमणी आर्यिका विरतश्री माता जी	५०	४	३६	३७५०००
श्रमणी आर्यिका विरदश्री माता जी	६०	६०	४	१२५०००
श्रमणी आर्यिका विभक्तश्री माता जी	६०	१०	३३	१७५०००
श्रमणी आर्यिका विनोदश्री माता जी	४०	१०	४५	२५००००
श्रमणी आर्यिका विसुव्रताश्री माता जी	२८	८	३७	१६८०००
श्रमणी आर्यिका विजितश्री माता जी	१५	१०	४२	१०००००
श्रमणी आर्यिका विमोचनाश्री माता जी	३५	४	२१	१२५०००
श्रमणी आर्यिका विकुन्दनश्री माता जी	८	०	१९	१६००००
श्रमणी आर्यिका विगुन्जनश्री माता जी	२५	०	५	१०००००
श्रमणी आर्यिका विजिगीसाश्री माता जी	१३	६	११	१०००००
श्रमणी आर्यिका विजिज्ञासाश्री माता जी	१३	०	२३	१०००००
श्रमणी आर्यिका विश्वधर्मश्री माता जी	२०	४	२	२५००००
ऐलक श्री विनियोग सागर जी	१८	५	८	१२५०००
क्षुल्लक श्री विश्वभूषण सागर जी	४६	४	१	१८००००
क्षुल्लक श्री विश्वबन्धु सागर जी	१६	०	१	१८००००
क्षुल्लक श्री विदेह सागर जी	९	०	०	१२५०००
क्षुल्लक श्री विसौम्य सागर जी	११	०	१०	१२५०००
क्षुल्लक श्री विश्वज्ञेय सागर जी	३२	०	११	१८००००
क्षुल्लक श्री विश्रुत सागर जी	५	०	०	१५००००
क्षुल्लक श्री विश्वरक्ष सागर जी	३४	२७	१४	१२५०००
क्षुल्लक श्री विवक्षित सागर जी	१२	०	२०	१२५०००
क्षुल्लिका विजिताश्री माताजी	२५	६	३९	१२५०००
क्षुल्लिका विस्मिताश्री माताजी	१२	०	२	१२५०००
क्षुल्लिका विभूषाश्री माताजी	२५	४	१	१२५०००

नाम	उपवास	नीरस	वंदनाएँ	जाप
क्षुल्लिका विभाषाश्री माताजी	३२	३०	१	१२५०००
क्षुल्लिका विभूषणाश्री माताजी	१२	६	२	१२५०००
क्षुल्लिका विप्रदाश्री माताजी	४०	६	२	२५०००
क्षुल्लिका विसुदृढश्री माताजी	४०	४	२	१२५०००
क्षुल्लिका विश्रमाश्री माताजी	२५	६	१	१५००००
क्षुल्लिका विनिग्रहश्री माताजी	११	४	१	१५००००
क्षुल्लिका विश्वशान्ताश्री माताजी	१५	३	७	१५००००
क्षुल्लिका विरोचनाश्री माताजी	३५	६	१५	१५००००
क्षुल्लिका विरजश्री माताजी	११	२	३	१२५०००
क्षुल्लिका विरजाश्री माताजी	४	–	१	१२५०००
क्षुल्लिका विपद्माश्री माताजी	२५	८	२३	२५००००
क्षुल्लिका विकण्ठश्री माताजी	१९	६	२०	१५००००
क्षुल्लिका विक्षमाश्री माताजी	१९	१०	१७	१२५००००
क्षुल्लिका विगम्याश्री माताजी	१३	३	२३	१२५०००
क्षुल्लिका विशीलाश्री माताजी	१२	३	८	१२५०००
क्षुल्लिका विश्वसिद्धिश्री माताजी	२	०	१	१०००००
क्षुल्लिका विज्ञाप्तिश्री माताजी	१९	१०	१५	१४९५००
क्षुल्लिका विश्वनेहाश्री माताजी	४०	१	१७	१२००००
कुलयोग	**२४१६**	**६७३**	**१८०६**	**२०२८०२२०**

प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज द्वारा की गई श्रुत साधन–

१. श्रमण संबोधनी संस्कृत टीका की पूर्णता।
२. 'जल बिन्दु' महाकाव्य का लेखन निरंतर जारी।
३. श्री सम्मेद शिखर जी पर आलेख
४. श्री सम्मेद शिखर जी की टोकों के अर्धों की प्राकृत में रचना।
५. श्री पार्श्वनाथ स्तोत्र की संस्कृत में रचना।
६. अनेक मंगलाचरण छंदों की प्राकृत एवं संस्कृत में रचना।
७. चौबीसों तीर्थंकरों की प्राकृत में दो प्रकार की स्तुतियों की रचना।
८. चार प्रकार की शान्तिधाराओं की संस्कृत में रचना।
९. संघस्थ साधुओं की संस्कृत व्याकरण एवं गोम्मटसार कर्मकाण्ड की कक्षाएँ।
१०. मूलाचार की गाथाओं पर ७७ प्रवचन।
११. आत्मानुशासन की ११० गाथाओं पर ७० प्रवचन।
१२. अन्य प्रसंगों पर ८५ प्रवचन।
१३. तत्वार्थ सूत्र के दशों अध्यायों पर १० प्रवचन एवं दशधर्मों पर १० प्रवचन।
१४. वाहर से आये अनेक जिज्ञासुओं के शंका समाधान।

साहित्य प्रकाशन– विराग पंचांग वर्ष २५४५ का, तीर्थक्षेत्र विरागोदय तिथि दर्पण, डायरी २०१९, शान्तिधारा, श्रमण आहार चर्या आओ देखे हम कहाँ रहते है, सोचिये हम किसे खा रहे है।

आध्यात्मिक शंका-समाधान

प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज

वर्तमान भौतिक वादी युग में संसारी प्राणी भोगों की अभिलाषाओं की पूर्ति के लिये दिनरात पैसा कमाने में लगा है। जैन कुल में जन्म लेकर भी छः आवश्यक कर्त्तव्यों को भूलता जा रहा है। संस्कारित परिवारों में देवदर्शन पूजन तो फिर भी व्यक्ति करता है पर स्वाध्याय के लिये उसके पास समय नहीं और जो स्वाध्याय भी करते हैं वे आर्ष परम्परा के आचार्य प्रणीत ग्रन्थों का स्वाध्याय या तो करते ही नहीं या करते हैं तो उसके सही अर्थ भावार्थ को न समझ पाने के कारण ये उन लोगों द्वारा कहे जाते हैं जो अपनी पंथ, आम्नाय विचारधारा या ख्याति लाभ प्रशंसा का कारण कुछ का कुछ बताकर भ्रमित कर देते हैं।

प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज ने मोक्षमार्ग में आरूढ़ होकर क्षितिज की ऊँचाईयों को प्राप्त नहीं किया बल्कि वर्तमान समय के सबसे बड़े चतुर्विध संघ के नायक हैं। ज्ञान की असीम गहराईयों में डुबकी लगाकर सर्वोदया, रत्नत्रय वर्धिनी, श्रमण प्रबोधनी, श्रमण सम्बोधनी आदि संस्कृत टीकाओं के अलावा १५० से भी अधिक आलेखों द्वारा जन मानस के कल्याण के लिये जिनागम को दुर्लभ रत्न प्रदान किये हैं। चारों अनुयोगों को समझाने हेतु जन सामान्य की शंकाओं के समाधान हेतु क्रमिक प्रस्तुति-

शंका- अनंतानुबंधी एवं अप्रत्याख्यान संबंधी राग के अभाव में पंचम गुणस्थानवर्ती को उतने अंश में तो वीतरागता आती ही है तो उसे वीतराग चारित्र कहने में क्या बाधा है?

समाधान- यह बात सत्य है कि जितने-जितने अंश में राग नष्ट होता है उतने-उतने अंश में वीतरागता आती है किंतु उसे वीतराग चारित्र नहीं कहा जा सकता है। क्योंकि (प.प्र.गा. २/१७/१३२) में कहा है कि-

निज शुद्धात्मोपादेय इति रूचि रूपम् निश्चय सम्यक्त्वम् 'गृहस्थावस्थायां तीर्थंकर परमदेव भरत सगर राम पाण्डवादिनां विद्यते न च तेषां वीतराग चारित्रम्...।'

अर्थात् निज शुद्धात्मा उपादेय है ऐसी रूचि रूप निश्चय सम्यक्त्व है जो गृहस्थ अवस्था में तीर्थंकर परमदेव, भरत, सगर, पाण्डवादियों को पाया जाता है किन्तु उनको वीतराग चारित्र नहीं पाया जाता है।

शंका- वीतराग चारित्र के पर्यायवाची नाम क्या-क्या हैं?

समाधान- शुद्धात्मनः सकाशादन्यद्बाह्याभ्यंतर परिग्रह रूपं सर्व त्याज्य मित्युत्सर्गो निश्चय नयः, सर्व परित्यागः परमोपेक्षासंयमो वीतराग चारित्रं शुद्धोपयोग इति यावदेकार्थः। (प्र.सा./त.प्र./२३०/३१५/८)

अर्थ- शुद्धात्मा के अतिरिक्त अन्य बाह्य और आभ्यंतर परिग्रह रूप पदार्थों का त्याग करना उत्सर्ग मार्ग है। उसे ही निश्चय नय, सर्व परित्याग, परमोपेक्षा संयम, वीतराग चारित्र व शुद्धोपयोग, कहते हैं। ये सभी एकार्थवाची हैं।

अध्यात्मिक शंका-समाधान कृति से साभार

स्कूली होमवर्क करना

१. होमवर्क का ध्यान रखना अच्छे विद्यार्थी का प्रथम लक्षण है।
२. जो विद्यार्थी होमवर्क को बाद में कर लूंगा ऐसा विचारता है वह प्रथम होने पर भी बाद में ही हो जाता।
३. एक दिन का भी छूटा हुआ होमवर्क कालान्तर में पाठ्यक्रम में अंतर डाल देता है।
४. प्रतिदिन का होमवर्क ताजा तथा स्मृति में रहता है बाद में तो फिर वह विस्मृत सा हो जाता है।
५. यदि होमवर्क को प्रातः न कर सके तो उसे जब भी समय मिले शीघ्र ही पूर्ण करना चाहिए।
६. होमवर्क पूरा होने पर हमारा टाईम टेबल व्यस्थित रहता है।
७. होमवर्क पूरा होने पर मानसिक तनाव नहीं रहता है जिससे हम अन्य कार्यों को अच्छी तरह से कर सकते हैं और हमें अन्य कार्यों में अच्छी सफलता प्राप्त होती है।
८. होमवर्क पूरा करना भी हमारे व्यक्तित्व विकास की पहिचान है।

संस्कार सुरभि से साभार

विराग सेतु

वावीस-विरागो

(प.पू. राष्ट्र संत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज)

डॉ. उदयचन्द्र जैन

जिन्होंने अल्प वय में ही मोक्षमार्ग पर आरूढ़ होकर क्षितिज की ऊँचाईयों को प्राप्त किया, घनघोर उपसर्गों में भी समता धारण कर आत्मान्वेषी रहे, ज्ञान की अथाह गहराईयों में डुबकी लगाकर प.पू. आचार्य श्री कुन्दकुन्द स्वामी के प्राचीन ग्रंथ वारसाणु पेक्खा पर संस्कृत 'सर्वोदय टीका' को लिखकर जिनागम के लिए एक दुर्लभ रत्न प्रदान किया है। ऐसे सिद्धांतरत्न प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर महाराज के जीवन दर्शन का सुंदर हृदयस्पर्शी चित्रण करने वाले डॉ. उदयचंद्र जैन उदयपुर के विराग चेतना युक्त नवीन प्राकृत महाकाव्य 'विराग-सेतु' की क्रमिक प्रस्तुति-

अट्ठं च सुत्त-सुद-वायण-काल-सव्वे
पण्णागुणी कुलवईत्त-दया सु-चंदो।
बाबू वि धम्म-गुण-मोदि-अणेग-लोगा
बंहो वि सुंदर-विणोद-बहुत-बंही।। ११।।

आठवीं वाचना के समय प्राज्ञजन, विद्वत्जन श्रावक एवं श्राविकाएँ बहुसंख्या में भाग लेती हैं। पं. दयाचन्द अजयगढ़ के कुलपतित्व में बाबूलाल, धर्मचंद्र, मोतीलाल आदि भी सहभागी बनते हैं। ब्र. सुन्दरलाल, ब्र. विनोद एवं अनेक ब्रह्मचारिणी बहिनें भी यहाँ उपस्थित रहती हैं।

दिक्खेदि एलग-पदे रयणो वि रामो
ते एलगो विणम-सागर-विस्स-जीदो।
धण्णं कुणेंति सुद-सत्थ-वसेहि णिच्चं
सज्झाय-रत्त-जुव-राग-विमुत्त-हंसे।।१२।।

दीक्षा है ऐलकपदों की। रत्नस्वरूप तो ऐलक विनम्रसागर हुए और रामनारायण तो ऐलक विश्वजीत हुए। यहाँ लोग श्रुतशास्त्र के वचनों से अपना जीवन धन्य करते हैं। युवा भी स्वाध्याय में लीन राग से विमुक्त दिखाई पड़ते हैं।

एत्थे हवेंति विहि-पुव्वग-पूयणादी
वासे चदु त्ति महउच्छव-दोण-भागे।
आदीजणा वसणहीण-सदा हि अत्थ
लाहं णएंति सुद-अत्थ-वयं सुणेंति।। १३।।

इस द्रोणगिरी में विधिपूर्वक पूजन आदि होते हैं। इससे इस चातुर्मास में महोत्सव जैसा ही वातावरण बना रहा। यहाँ आदिवासी लोग वसनहीन भी अर्थ लाभ प्राप्त करते हैं। वे श्रुतार्थ वचन आदि सुनते हैं।

सव्वे जणा हि चदुमास-पदे हि चिंते
एसो विराग-मुणि-आण गुरुस्स जादे।
सूरिं पदं ण णयदे विमलं णिवेदुं
गच्छेंति सेलसिहरे गुरु-आण-हेदुं।। १४।।

सभी लोग चातुर्मास की स्थापना से लेकर अब निष्ठापन पर सोचते हैं कि मुनि विरागसागर गुरु आज्ञा होने पर भी सूरी/आचार्य पद नहीं ले रहे हैं। अत: आचार्य विमलसागर को निवेदन करने के लिए लोग गुरु आज्ञा हेतु सम्मेद शिखर जाते हैं।

सव्वे णिवेद-पुणरेव णिवेदएंति
आणं पदेज्ज मुणिणाध! विराग साहुं।
सूरीवदस्स ण णएहि स भासदे वि
अत्थि त्ति णो इम पदं च जुवो वि अत्थि।। १५।।

सभी बारम्बार निवेदन करते हैं कि हे मुनिनाथ! आप विरागसागर को सूरीपद की आज्ञा दें, वे यह पद नहीं स्वीकार रहे हैं। अपितु वे मुनि श्री यही कहते कि मैं इस योग्न नहीं हूँ। मैं अभी युवा हूँ।

गच्छे तुमं च सयला गिरिदोण-भागे
आसीस-सूरि-पद-हेदु-तुमं पभासे।
एसो हि सेह-समयो समयाणुसीलो
कल्लाण-माणव-मणाण पदेण होज्जा।। १६।।

आप सभी द्रोणगिरि जाएँ और कहें कि आचार्य विमलसागर का आशीष है, सूरीपद/आचार्य पद के निमित्त। तुम्हारे लिए यही श्रेष्ठ समय है और यही समय/ सिद्धान्त अनुशीलन के लिए उचित अवसर भी है। आपके आचार्य पद में स्थित होने से मानव मन का कल्याण होगा।

विज्जाइसागर सुमदी वि अण्णे
सूरिं पदं च मुणिदूण सुहंसि-सीसं।
मादादु णाणमदि-अज्जि-पसण्णभूदा
णम्मोत्थु-पिच्छिग-पदिण्ण-गणिं च हेदुं।। १७।।

आचार्य विद्यासागर, आचार्य सुमतिसागर आदि अनेक मुनिजनों का सूरी पद के लिए आशीष प्राप्त हो जाता है। सूरिपद को जानकर आर्यिका ज्ञानमति माता जी पिच्छिका भेजती हैं और विरागसागर मुनि को णमोस्तु कहलवाती हैं।

दूरं च संचरणदे सयला हि खेत्ते
सूरिं पदं च पदएज्ज विरागसाहुं।
पण्णाजणा वि. परिचिंतजुदा हवेंति
जोग्गो जुवो मुणि-विराग-इणं पदं च।। १८।।

दूर संचार से सर्वत्र भाग में विरागसागर को सूरी पद दिया जाएगा ऐसी सूचना हो जाती है। प्राज्ञजन चिन्तन करते कि विरागसागर मुनि इस योग्य हैं।

दोहे हवेहिदि वि आइरियस्स दिक्खा
मत्तिल्ल-सुक्क-तिरसे तिहि-अट्ठ-णंवे।
वावण्ण-अट्ठ-णव-अंबर-मंगलो हि
पण्णासदा वि महचागि-सुसावगादी।। १९।।

विद्वानों के मध्य, त्यागी जन एवं श्रावक जन सौ से भी अधिक थे। उनकी उपस्थिति में कार्तिक शुक्ला त्रयोदशी ८ नवम्बर १९९२ को द्रोणगिरि में आचार्य दीक्षा होगी, जो अपने आप में मंगलमयी होगा।

क्रमश.....

समाचार

भव्यता से हुआ मंगल प्रवेश

प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज ससंघ ४७ पिच्छी का मंगल विहार सिद्धक्षेत्र खण्डगिरी उदयगिरी की वंदना हेतु शाश्वत तीर्थ श्री सम्मेद शिखर जी से हुआ।

दिनांक ४ मार्च २०१९ को रांची से उदयगिरी खण्डगिरी तक विहार कराने वाले संघपति परिवार द्वारा मेहताव नगर कटक में भव्यता के साथ मंगल प्रवेश कराया।

दिनांक ५ मार्ची २०१९ को सकल जैन ने समाज (दिगम्बर, श्वेताम्बर तेरापंथी समाज-मूर्ति पूजक आदि) ने बड़ी भव्यता के साथ कटक नगर प्रवेश कराया। धर्म सभा में पू. गणाचार्य श्री का पादप्रक्षालन भी सकल जैन समाज द्वारा किया गया। पू. गुरुदेव ने सभी को धर्मोपदेश के साथ अपना मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। शायं ४ बजे से कटक महिला मण्डल द्वारा संस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी गई।

दिनांक ९ मार्च को सिद्धक्षेत्र उदयगिरी खण्डगिरी (उड़ीसा) में भव्यता के साथ नगर प्रवेश हुआ। ऐलक जी बोसलसागर जी ने पू. श्री गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज ससंघ की अगवानी की। अगवानी में विहार बंगाल उडीसा तीर्थक्षेत्र कमेटी के पदाधिकारी भी उपस्थित रहे।

सर्वधर्म सभा का आयोजन

दिनांक ६ मार्च २०१९ को प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज ससंघ के पावन सान्निध्य में शहीद भवन कटक में विशाल सर्वधर्म सभा का आयोजन किया गया। जिसमें जैन जैनेत्तर दिगम्बर, श्वेताम्बर तेरापंथी मूर्ति पूजक सनातन धर्म आदि सभी धर्मों के श्रद्धालुजन उपस्थित हुए। सभा में स्थानीय विधायक श्री प्रभात जी भी पू. गणाचार्य श्री के दर्शनार्थ आये जिन्होंने पू. गणाचार्य श्री को श्रीफल भेंटकर आशीर्वाद प्राप्त किया। सभा में पू. गणाचार्य श्री ससंघ का रांची से उदयगिरि खण्डगिरि तक विहार कराने वाले संघपति श्री केशवचन्द्र जी गलवरिया परिवार संयोजक श्री प्रदीप जी जैन व्यवस्थापक श्री अमित जी जैन श्रीमती अचला जी जैन आगरा, श्री सुभाषचन्द्र जी भिण्ड, श्रीमती मीना जैन भिण्ड का समाज द्वारा सम्मान किया गया। सभा का संचालन पं.श्री आशीष जी जैन शास्त्री द्वारा किया गया। समाज द्वारा उनका भी सम्मान किया गया। इस अवसर पर प.पू. गुरुदेव ने अपने धर्मोपदेश में देश में शिक्षा के साथ संस्कारों को देने का संदेश दिया। साथ ही भगवान महावीर स्वामी जी के अमर संदेश जिओ और जीने दो के सूत्र के विस्तार रूप अहिंसा व्यसन मुक्ति शाकाहार, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ एवं स्वच्छता अभियान ५सूत्र जानकर किसी जीव को नहीं मारेगे, अण्डा, मांस, मच्छली का सेवन नहीं करेगे, शराब नहीं पियेंगे, भ्रूण हत्या नहीं करेंगे न कराने की सलाह देंगे तथा अपने घर मोहल्ले गली नगर को स्वच्छ रखने का सभी को दोनों हाथ उठवाकर ऊँकार की ध्वनि के साथ संकल्प कराया।

४० वाँ क्षुल्लक दीक्षा मनाया

दिनांक ११ मार्च २०१९ सोमवार को प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज का ४० वाँ क्षुल्लक दिवस सिद्ध क्षेत्र उदयगिरि खण्डगिरि पर भुवनेश्वर, कटक, जाजपुर, कलकत्ता, भिण्ड, आगरा, तमिलनाडु आदि से आये अनेक श्रद्धालुओं की उपस्थिति में मनाया गया। ४० थालों में पादप्रक्षालन कर पू. गणाचार्य का सभा मण्डप में भव्यता के साथ प्रवेश कराया गया। कार्यक्रम में भुवनेश्वर महिला मण्डल के द्वारा मंगलाचरण किया गया। समाज श्रेष्ठियों द्वारा चित्र अनावरण एवं दीप प्रज्जवलन तथा बालिका मण्डल द्वारा भक्ति नृत्य किया गया। प.पू. गणाचार्य श्री का पाद प्रक्षालन श्री द्वारा एवं शास्त्र भेंट श्री अजय जी धनावत एवं राजू भाई धनावत द्वारा किया गया। श्रद्धालुओं द्वारा ४० शास्त्र भेंट कर प.पू. गुरुदेव श्री गणाचार्य श्री की भक्ति पूर्वक अष्ट द्रव्य से पूजन सम्पन्न की। फागुन शुक्ल ५वी नि. २५०५ को प.पू. आचार्य श्री सन्मति सागर जी महाराज द्वारा पू. गणाचार्य श्री को क्षुल्लक दीक्षा देकर क्षुल्लक पूर्णसागर बनाया था। इस अवसर प.पू.

गणाचार्य श्री ने अपने क्षुल्लक दीक्षा के उपकारी गुरु श्री सन्मतिसागर जी महाराज के प्रति अपनी विनयांजलि अर्पित करते हुए अपनी क्षुल्लक दीक्षा से पूर्व के अनेक संस्मरण एवं वैराग्य का व्याख्यान करते हुए प.पू. सन्मतिसागर जी के पू. गुरुदेव पर स्नेह एवं वात्सल्य के अनेक संस्मरण अपनी अमृतमयी वाणी से सुनायें।

इस अवसर क्षेत्रिय सांसद श्री प्रसन्न कुमार जी पासानी भी दर्शनार्थ पधारे जिन्होंने पू. गुरुदेव से आशीर्वाद प्राप्त किया।

सिद्धक्षेत्र उदयगिरि खण्डगिरि पर १००८ श्री सिद्धचक्र मण्डल विधान

फाल्गुन मास की अष्टान्हिका महापर्व पर दिनांक १३ मार्च से २० मार्च २०१९ तक सिद्ध क्षेत्र उदयगिरि खण्डगिरि पर प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज ससंघ ४७ पिच्छी के पावन सान्निध्य में १००८ श्री सिद्धचक्र मण्डल विधान का भव्य आयोजन किया गया जिसमें श्री राजेश कुमार जैन जाज रोड़ भुवनेश्वर को सौधर्म इन्द्र बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। श्री केशवचन्द्र जी जैन गलवलिया परिवार कटक, श्रीमती अन्जू जैन, श्री मुन्नालाल, रमेशचंद जी जैन, आलोक श्वेता जैन भुवनेश्वर श्री सिद्ध चक्रमण्डल विधान के पुण्यार्जक रहे। विधान को डॉ. पं. श्री अभिषेक जैन शास्त्री, डॉ. पं. श्री आशीष जैन शास्त्री दमोह द्वारा विधि विधान पूर्वक सम्पन्न कराया गया।

सिद्धक्षेत्र की वंदना की

दिनांक १० मार्च २०१९ को प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज ससंघ ४७ पिच्छी के विशाल चतुर्विध संघ के सम्राट खारवेल द्वारा स्थापित कलिंग जिन श्री आदिनाथ भगवान सहित खण्डगिरि पर्वत के जिनमंदिर के दर्शन एवं प्राचीन गुफाओं एवं उदयगिरि पर्वत की गुफाओं एवं एतिहासिक स्थलों का अवलोकन किया।

सर्वोदया/ रत्नत्रय वर्धिनी टीका

प.पू. आचार्य कुन्दकुन्द देव की महान कृतियाँ बारसाणुपेक्खा एवं रयणसार पर प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज द्वारा अत्यन्त ही सरल एवं सहज संस्कृत भाषा में हिन्दी अनुवाद सहित अनुपम टीका जो आगम, अध्यात्म एवं सिद्धान्त की प्रमाणिकता से ओत प्रोत, क्रमश: शोध पूर्ण ग्रन्थ, ११०० पृष्ठीय सर्वोदया एवं १३०० पृष्ठीय रत्नत्रय वर्धिनी- दो दो भागों में भारतीय ज्ञान पीठ से प्रकाशित हो चुकी हैं। मंदिर जी, साधु-संघों तथा विद्वानों ने स्वाध्यायार्थ स्वपर ज्ञान वृद्धि हेतु सर्वोदया टीका ४९०/-रूपये प्रत्येक भाग एवं रत्नत्रय वर्धिनी टीका ६५०/- प्रत्येक भाग के मूल्य पर विक्रय हेतु उपलब्ध है-

प्राप्ति स्थान-

१. **भारतीय ज्ञान पीठ (विक्रय केन्द्र)**
४४०५/५ अंसारी रोड, दरियागंज नई दिल्ली पिन को. ११०००३
सं.सूत्र श्री संजय दुवे मो. ८५०६८६२९५४ फोन नं. ९१-०११-२३२४१६१९

२. **श्री सम्यग्ज्ञान विराग विद्यापीठ**
चैत्यालय मंदिर बतासा बाजार, भिण्ड (म.प्र.)
सं.सूत्र पं. वीरेन्द्र जैन, भिण्ड मो.९७५४८०३२२०

३. **श्री दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र विरागोदय धर्मधाम,**
पथरिया, जिला- दमोह (म.प्र.)
सं. सूत्र कपिल सिंघई पथरिया, मो. ९८९३७५३२२३

विराग वर्ग पहेली 40

उदाहरण – र वि रा ग नहीं करना चाहिए। (प.पू. गणाचार्य गुरुवर का नाम) जैसे–विराग

गु	रु	द	या	दृ	ष्टि	र	ख
भ	ष	वृ	ति	य	ना	ह	म
अ	मृ	त	चं	द्र	प	र	ग
आ	द्र	शी	द	चं	ष	की	तुं
छा	चं	चं	कुं	मि	व	न	न
में	भ	र	द	ने	ह	से	मा
ते	शु	हे	कुं	मु	न	र	पै
मी	स्वा	मा	उ	जि	कु	ध	रो

विराग वर्ग पहेली 39 के उत्तर

(1) हाथी
(2) साथिया
(3) कछुआ
(4) बकरा
(5) कल्पवृक्ष
(6) वज्रदण्ड
(7) लाल कमल
(8) बंदर
(9) मछली
(10) हिरण

नोट– (1) इसमें आपको कोई १० त्यौहार के नाम दिये है। आपको खोजने हैं।
(2) जहाँ उत्तर मिले वहाँ ☐ डब्बा बनाये व क्रम से नाम लिखें।
(3) उदा.- इसमें नाम आड़े, तिरछे, ऊपर से नीचे, नीचे से ऊपर भी हो सकता है।

उत्तर भेजनेवाले का नाम व पता (स्पष्ट तथा शुद्ध)

नाम .....मो. .....

पिता/पति का नाम .....

पता .....